नर्मदा मिशन

समर्थ सृष्टि

साधना के शिखर

अवधूत महायोगी श्री दादागुरु भगवान
एक शाश्वत सत्य

www.ssvidyapeeth.com
समर्थ सद्गुरू विद्यापीठ
एक अर्न्तराष्ट्रीय गुरूकुल
ADMISSION OPEN
प्ले नर्सरी से कक्षा दसवीं तक
सुविधाएं
डे कम रेसीडेन्सियल स्कूल
स्मार्ट क्लासरूम्स
गुड टीचर स्टूडेन्ट रेशियो
नेनो लर्निंग
फ्रेश एण्ड न्यूट्रिशियस फूड
स्पोर्ट एकेडमी
वैदिक क्लासेस
आर्ट एण्ड क्राफ्ट
डान्स एण्ड म्यूजिक
योगा क्लासेस
पर्सनेलिटी डेवलेपमेंट
लिमिटेड सीट्स
बिनैकी, पाटन रोड, एन.एच.12 ए, सूखा, जबलपुर - 482002
रजिस्ट्रेशन एवं प्रवेश हेतु संपर्क करें
78283-83827, 78690-50888

वर्ष 6 , अंक 7 , मई 2026

नर्मदा मिशन

समर्थ सृष्टि

प्रधान संपादक - डॉ. स्मिता 'अपराजिता' (जीजी माई)

पता : श्री दादाकुटी
बी.टी.आई.रोड, नर्मदापुरम

सम्पर्क : 7987503104

ईमेल - smitarichhariya27@gmail.com

ईमेल - narmadamission@gmail.com

NARMADA MISSION DADAGURU

वार्षिक सदस्यता सेवा
₹ 1100

दादागुरु के सदी के सबसे बड़े महाअभियान से जुड़ें एवं अपनी सेवा सुनिश्चित करें।

बैंक एकाउंट
खाता क्रमांक 613102010008511
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
तार अहाता, नर्मदापुरम
IFSC code uvin0561312

पत्रिका कार्यालय : श्री दादाकुटी, माँ कर्मा धर्मशाला के बाजू में, बीटीआई रोड, नर्मदापुरम, म.प्र. मो 9893436666, 7987503104, 78989 72366

विषय सूची

1	**भूमिका**	05
2	**सम्पादकीय**	06-07
3	**नर्मदा मिशन संरक्षण, संकल्प , सेवा , साधना और जनजागृति का गतिपथ**	
	1. ब्रिटिश गवर्मेंट द्वारा सम्मानित...	08-09
	2. प्राचीन भारतीय सनातनी संस्कृति की महत्वता....	10-
	3. संस्कार कावड़ यात्रा 'रन फ़ॉर नेचर' गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज	11
	4. महाव्रत के दौरान तीन बार रक्तदान गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज	12
	5. 1000 दिनों से अधिक दादागुरु का महाव्रत गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज	12
	6. निराहार महाव्रत के दौरान 3200 किमी की माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड	12
	7. प्रकृति पर्यावरण के लिए प्रथम बार निरन्तर 25 घण्टे की सुर साधना	12
	8. समर्थ वृक्ष रक्षा संकल्प दिवस "लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड" में दर्ज	13
	9. स्वच्छता का वर्ल्ड रिकॉर्ड जबलपुर के नाम	13
	स्वस्थ स्वच्छ समर्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए नर्मदा मिशन द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्य	
	1. उच्चतम बाढ़ सीमा से 300 मीटर तक का परिक्षेत्र मां नर्मदा की प्रॉपर्टी घोषित	14
	2. पीओपी की मूर्तियों का पवित्र नदियों में विसर्जन प्रतिबंधित	14-15
	3. एक दिवसीय गौर गणेश निर्माण प्रकृति संरक्षण की दिशा की अद्वितीय पहल	15
	4. गौवंश के संरक्षण सम्वर्धन के लिए -	15-16
	5. साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक निशान महोत्सव	16
	6. विश्व की अमूल्य धरोहर पातालकोट, अमरकंटक सहित अन्य धरोहरों को बचाने	16-17
	7. वैश्विक महामारी कोरोना के लॉकडाउन में पीड़ित मानवता की सेवा	17
	8. अनूठी पहल - भारत के अनेक जिलों,......"नदी को जानो" नदी नहीं तो सदी नहीं “	18
	9. जबलपुर में देश की प्रथम प्रकृति पर्यावरण संसद का आयोजन -	18-19
	10. जबलपुर में देश की प्रथम प्रकृति पर्यावरण संसद का आयोजन -	19
	11. समर्थ पालना घरों (नर्सरी)..	19
	12. माँ के नाम एक अभियान सवा करोड़ देववृक्ष मूर्तियों की स्थापना	20-21
	13. समर्थ सद्गुरु विद्यापीठ एक अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल	21-22
4	**शोध**	23-37
5	**महायोगी दादागुरु भगवान की कल्पनातीत अखण्ड माँ नर्मदा परिक्रमा का चतुर्थ चरण पूर्ण**	38-39
6	**विशिष्ट लेख**	
	1 अभिजीत अपराजित सन्धिकाल का गूढ़ रहस्य	40-41
	2 माँ नर्मदा प्रदक्षिणा रहस्य	42-43
	3. माँ नर्मदा की ही परिक्रमा क्यों माँ नर्मदा परिक्रमा के संदर्भ में दादागुरु का दिव्य सन्देश	44-45
	4 शिव, शंकर और शिवलिंग में भेद	46-47
7	**फोटो**	48-50

भूमिका

श्री तेजेश्वर प्रसाद मिश्रा(बाबू जी)
वरिष्ठ साहित्यकार, रिटायर्ड एसबीआई अधिकारी

समर्थ सृष्टि का यह सातवां अंक पाठकों के विशेष आग्रह पर अपने अंदर पूर्व अंकों की सारगर्भित विशिष्टताओं को खुद में समेट कर आपके करकमलों तक पहुंच रहा है जो दादागुरु की सदी की सबसे बड़ी एवं सबसे उत्कृष्ट साधना के मर्म का दस्तावेज भी है।

मेरे जीवन के सबसे बड़े आधार और घने अवसाद के अंधेरों के ज्योतिपुंज दादागुरु भगवान् की साधना इस युग का वह दिनकर है जिसकी आभा जीव जगत के कण कण को प्रकाशवान कर रही है। यह साधना सुखद जीवन का आगाज़ है व जीवन का उत्कर्ष है। इसी सन्दर्भ ने विनय कुमार जी की पंक्तियां याद आती हैं कि-

"साधना तो आराधना है
साधना को वर
साधना ही कर्म है
और सफलता का हर्ष
साधना उत्कर्ष है
जीवन का उत्कर्ष"

तो जीवन का उत्कर्ष यदि साधना है और यदि साधना दूसरों का जीवन बचाने,बनाने और चलाने के लिए की जाए तो ऐसा प्रथम बार ही देखा और सुना जा रहा है क्योंकि इससे पूर्व दादागुरु भगवान जैसा जीवन जीने वाला तथा तपस्या के उच्च शीर्ष स्तर को स्पर्श करने वाला न कोई हुआ है और न कभी कोई ऐसा होगा।

"न भूतो न भविष्यति न द्वितीयो न अस्ति"

यह अंक समर्पित है दादागुरु भगवान् के अकल्पनीय जीवन चरित्र को जो विज्ञान, ज्ञान आध्यात्म की सभी सीमाओं से परे हैं। जो अविश्वसनीय, अदभुत, अटल और जीवंत सत्य है। इसके साथ ही यह अंक समर्पित है दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन और सानिध्य में नर्मदा मिशन के द्वारा संरक्षण ,सम्वर्धन और सेवा साधना की दिशा में किए गए ऐतिहासिक कार्यों को जिसके चलते अनेकों विश्व कीर्तिमान नर्मदा मिशन के नाम दर्ज हुए हैं। इसके अलावा धर्म, धरा,धेनु,प्रकृति - पर्यावरण संरक्षण संवर्धन के लिए किए गए कल्पनातीत कार्य व हमारी प्रकृति प्रधान प्राचीन भारतीय सनातनी संस्कृति को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का प्रण संकल्प शामिल है।

हमारे आराध्य गुरुसत्ता ,देवसत्ता को नमन करते हुए पहुँचा रहे है आप तक "समर्थ सृष्टि" का अनुपम अंक।

संपादकीय

" साधना के शिखर तपोबल के मेरु "

दादागुरु भगवान् एक अप्रतिम सत्य

डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

हमारी भारतीय मनीषा अर्थात उच्च बौद्धिक शक्ति और विवेकेशील विचारधारा के हृदय में यह निर्विकार सत्य स्वर्ण अक्षरों से अंकित है कि हर युग हर सदी में प्रकृति पर्यावरण व जीव -जगत में हो रहे दैहिक,दैविक भौतिक असंतुलन को संतुलित करने के लिए परब्रम्ह की अवतार सत्ता को सक्रीय होना पड़ता है।

यह अवतार सत्ता नारायण अवतार के रूप में पूर्ण अवतार या सद्गुरु के स्वरूप में शक्ति अवतार होती है। इस युग में जितने भी दैहिक, दैविक, भौतिक ताप व प्राकृतिक असंतुलन हैं वे जीवन आधारों से खिलवाड़ के परिणाम हैं। धीरे धीरे जीवन घोर संकट की तरफ बढ़ रहा है। प्राकृतिक आपदाएं ,महामारी, बढ़ता तापमान, दरकते पहाड़, सिमटते जंगल, सूखती नदियाँ सब कुछ हमारी कुप्रवृत्तियों के परिणाम है। हम प्रलय के मुहाने पर जा खड़े हुए हैं इसीलिए हमें बचाने और हमारा जीवन संवारने के लिए पुनः इस युग में एक अवतार सत्ता माँ नर्मदा के पथ पर सक्रीय हुई जिन्हें आज सभी दादागुरु के रूप में जानते व पहचानते हैं।

दादागुरु भगवान् कहते हैं कि गुरु व्यक्ति नहीं शक्ति है अविनाशी परम सत्ता की साक्षात उपस्थिति है। गुरु तत्व है,सत्य है,दत्त है।

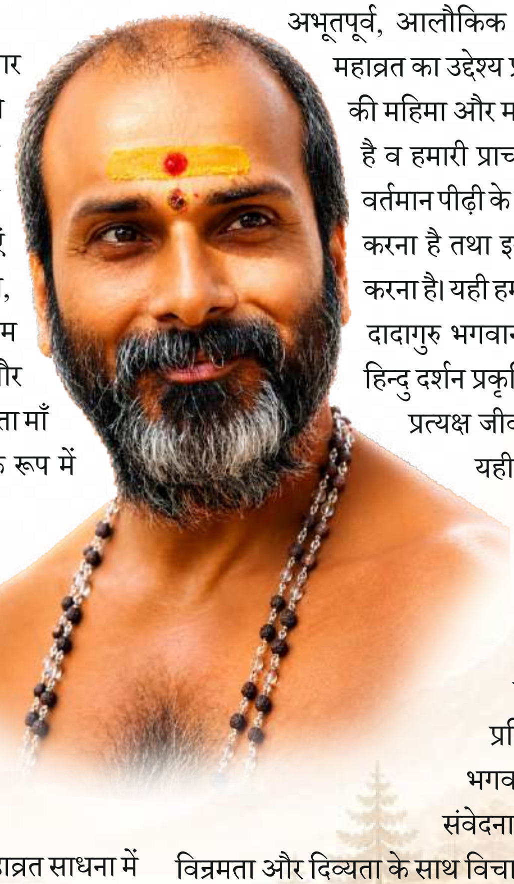

यह निर्विकार सत्य है कि गुरु शक्ति है ,क्योंकि साधना के उच्चतम शिखर को स्पर्श करने वाले,जितेंद्रिय अवधूत महायोगी दादागुरु भगवान शक्ति ही हैं जो विगत 6 वर्षों से माँ नर्मदा का जल और परिक्रमा के समय मात्र वायु ग्रहण कर अखण्ड महाव्रत साधना में हैं साथ ही सदी की सबसे बड़ी और सबसे कठोर साधना करते हुए जीवन आधारों को बचाने के लिए भगीरथी कार्य कर रहे हैं।

ध्यान, सुमिरन सत्संग, सेवा, सदाचार, समाधि और साक्षी भाव के साथ साधना के सभी स्तम्भ दादागुरु भगवान् की कर्म साधना, मन साधना और भक्ति साधना में समाए हैं। नित समाधि में चलते हुए दादागुरु अकल्पनीय, अभूतपूर्व, आलौकिक कार्यो को संपादित कर रहे है। उनके महाव्रत का उद्देश्य प्रकृति संरक्षण संवर्धन के साथ माँ नर्मदा की महिमा और महत्व को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है व हमारी प्राचीन प्रकृति प्रधान भारतीय संस्कृति को वर्तमान पीढ़ी के संस्कारों में प्राथमिकता के साथ स्थापित करना है तथा इसे भी विश्व के मानस पटल पर अंकित करना है। यही हमारी सनातनी शक्ति की विजय है।

दादागुरु भगवान् हमेशा कहते हैं कि हमारा भारतीय हिन्दु दर्शन प्रकृति ,धरा, पवित्र नदियों, पर्वतों व धेनु को प्रत्यक्ष जीवंत शक्ति के रूप में मानता है पूजता है। यही शक्ति हमारे जीवन, धर्म, संस्कृति, सभ्यता और व्यवस्था की मूल आधार है। इन्ही शक्तियों को संरक्षित करने का कार्य दादागुरु भगवान् कर रहे हैं। इसीलिए जब भी हम दादागुरु भगवान् लिखते, बोलते, सुनते हैं तो उसकी प्रतिध्वनि में जीवन गूंजता है। जब दादागुरु भगवान् को देखते है तो समर्पण, शक्ति, संवेदना, सेवा, साधना,संयम, शुचिता, प्रेम, विन्रमता और दिव्यता के साथ विचारों में दिव्यता लिए एक उत्कृष्ट सत्यनिष्ठ व्यक्तित्व आराध्य, गुरु, माता-पिता और बन्धु के रूपों को स्वयं में अंतर्निहित

कर दादागुरु भगवान् के रूप में प्रकट होता है।

यही वह व्यक्तित्व है जो मन व हृदय की सूक्ष्म इकाई को स्पर्शित कर अपनी अमृतवाणी और विचार प्रवाह से जीवन के मर्म को समझने के मार्ग प्रशस्त करता है।

कुछ भी संचित किए बिना देह को विदेह करके जीने वाले दादागुरु भगवान् आत्मा में परमात्मा के प्रकटीकरण का ब्रह्मसत्य हैं। वे जप,तप,धर्म, साधना, प्रेम, वात्सल्य,तेज, ओज, सिद्धि, उपासना आदि का एकरूप व पंच महाभूतों की ऊर्जाओं को सिद्धहस्त करने वाले अवधूत शिवरूप हैं। दादागुरु भगवान् अपना सर्वस्व न्यौछावर कर समाज को विप्लव और विध्वंस से बचाकर सुख और कल्याण की तरफ ले जाना चाह रहे हैं ,और भारतीय मनीषा को दुनिया के मानचित्र पर विश्वगुरु के रूप में देखना चाह रहे हैं। क्योंकि वे नवयुग के नवनियन्ता है।

इस विराट सृष्टि के व्यवस्थित संचालन के लिए प्रकृति जिस ब्रह्मांडीय ऊर्जा को सक्रिय करती है उसी ऊर्जा शक्ति को देश दुनिया दादागुरु भगवान् के रूप में नर्मदापथ पर देख रही है। कारण दादागुरु भगवान् की विचारशक्ति व्यष्टि से समष्टि तक इस तरह विस्तृत हुई कि वह देश की सीमाओं को लांघकर प्रकृति संरक्षण के वैश्विक चिंतन का आधार बनी साथ ही विदेशों के मनीषियों को भारत की सनातनी संस्कृति की शक्ति ने इतना आकर्षित किया कि अमेरिका की टेक्सास यूनिवर्सिटी का मेडिकल विभाग ब्रिटेन की स्पेशल मेडिकल टीम दादागुरु के जीवन पर शोध करना चाह रही है जिसके लिए केंद्र सरकार के पास विधिवत सूचना भी आ चुकी है। कहना गलत नहीं है कि यह साधना का सर्वोच्च स्तर है और सनातन की शक्ति की शीर्ष विजय है।

नमन है इस दैवीय सत्ता को जो जीवन बचाने व जीवन बनाने आई है। भाव सहित प्रणाम है साधना के शिखर और तपोबल के मेरु दादागुरु भगवान् को।

''नर्मदा मिशन'' संरक्षण, संकल्प, सेवा, साधना और जनजागृति का गतिपथ

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

जन-जन का जीवन सुरक्षित और व्यवस्थित करने के महासंकल्प के साथ दादागुरु भगवान् ने 12 जनवरी 2010 में नर्मदा मिशन की स्थापना की। कहते है जब किसी कार्य में मन की और प्राण की समग्र शक्ति लगती है तब वह संकल्प होता है जो सिद्धि, बुद्धि, और ऊर्जा का वाहक भी होता है। जब संकल्प में गहरी सुदृढ़ता स्थापित हो जाती है और उसमेंजीवन और प्राण लग जाता है तब संकल्प को पूर्ण करने के लिए किसी आधार की आवश्यकता होती है यही आधार है नर्मदा मिशन जिसका उद्देश्य प्रकृति पर्यावरण की रक्षा सुरक्षा, संरक्षण सम्वर्धन, प्रकृति प्रधान समाज की स्थापना, तथा प्रत्येक व्यक्ति व जीव के जीवन को सुरक्षित एवम व्यवस्थित करना है तथा मानव से समूह, समूह से श्रृंखला और श्रृंखला से क्रांति की परिकल्पना को साकार करना है और हम गर्वित हैं कि यह परिकल्पना आज मूर्त रूप में समाज के समक्ष है।

दुर्गम किन्तु लक्षयसाध्य राहों पर चलकर सफलता के शिखरों पर नर्मदा मिशन के श्रेष्ठ कार्य रूपी ध्वज पूरी आन बान और शान के साथ वैश्विक स्तर पर लहरा रहे हैं। ज्ञातव्य है कि मिशन की स्थापना के बहुत पहले से ही दादागुरु के सानिध्य और मार्गदर्शन में जल शुद्धिकरण, गौवंश का संरक्षण, प्रकृति पर्यावरण संरक्षण सम्वर्धन, दरिद्र नारायण सेवा, (मानव सेवा) तथा प्राकृतिक कृषि के लिए जागरूकता इत्यादि अनेकानेक कार्य अनवरत जारी थे।

नर्मदा मिशन के गठन के बाद महायोगी दादागुरु भगवान् के सानिध्य और मार्गदर्शन में नर्मदा मिशन ने विविध क्षेत्रों में विश्व कीर्तिमान हासिल किए जैसे-

1. ब्रिटिश गवर्मेंट द्वारा सम्मानित हुए श्री दादागुरु भगवान् वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड यूनाइटेड किंगडम में दर्ज हुआ दादागुरु के नाम 2023 का नोबल ऑफ कॉमन वेल्थ नेशन्स इंटरनेशनल अवार्ड

'ज्ञातव्य है कि रेवापथ के महायोगी दादागुरु भगवान् द्वारा प्रकृति, पर्यावरण के संरक्षण सम्वर्धन के लिए विगत छः वर्षों से किया जा रहा अखंड महाव्रत इस सदी की सबसे बड़ी मुहिम और सबसे बड़ी गतिविधि है जो ज्ञान विज्ञान की सीमाओं से परे है। जब इसकी गूंज भारत की सीमाओं से बाहर पहुंची तो दुनिया के लाखों प्रकृति पर्यावरण चिंतकों वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर गया क्योंकि प्रकृति पर्यावरण की सुरक्षा और जीवन अस्तित्व की रक्षा के लिए दादागुरु भगवान् जैसा जीवन जीने वाला अभी तक कोई और नहीं हुआ है। देश दुनिया के लिए यह महाव्रत एक शोध का विषय बन चुका है।

इसी को आधार बना कर दादागुरु भगवान् की 3200 किमी की माँ नर्मदा की निराहार निर्जला परिक्रमा के द्वितीय चरण में ब्रिटिश गवर्मेंट द्वारा दादागुरु भगवान् को स्वच्छ भारत व समर्थ भारत के

विचार को आधार में रखकर जीवन की आधार शक्ति प्रकृति , पर्यावरण, पवित्र नदियों विशेष रूप से माँ नर्मदा को बचाने के भगीरथी प्रयासों के लिए नोबल ऑफ कॉमन वेल्थ नेशन्स इंटरनेशनल अवॉर्ड 2023 से सम्मानित किया गया व उन्हें परिक्रमा यात्रा में ही सम्मान पत्र भेजा गया।

इतिहास ने एक बार फिर अपने आप को दोहराया है या कहें कि समय फिर एक बार इतिहास की दहलीज पर लौट आया है, क्योंकि रेवापथ के ही सिद्ध महायोगी और धूनी वाले दादाजी केशवानन्द जी के गुरु श्री गौरीशंकर महाराज जिन्होंने जीवनपर्यंत अपनी विशाल जमात के साथ माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा की थी उन्हें भी ब्रिटिशों ने उस समय के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया था और ताम्रपत्र भी प्रदान किया था जो अभी भी सुरक्षित है।

आजादी के संघर्ष के दिनों में गौरीशंकर महाराज की विशाल जमात की व्यवस्था व कार्यप्रणाली पर संदेह करने पर गौरीशंकर महाराज ने अंग्रजों को आदिशक्ति माँ नर्मदा की साक्षात उपस्थिति व शक्ति का अनुभव करवाया तब अंग्रेज को अपनी गलती का एहसास हुआ तथा तत्कालीन अधिकारी ने क्षमायाचना करते हुए गौरीशंकर महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया और प्रमाणित किया कि गौरीशंकर महाराज अवतारी सिध्द महायोगी हैं जिनके साथ माँ नर्मदा साक्षात रूप में विद्यमान हैं। इसी कालावधि में उन्हें ब्रिटिश सरकार ने धर्म के सर्वोच्च सम्मान लाल पादरी (जो उनके देश का सर्वोच्च सम्मान है) से सम्मानित किया था। माँ नर्मदा ब्रह्मांड में व्याप्त सर्वोच्च शक्ति हैं और साक्षात हैं इस सत्य को प्रमाणिकता के साथ सिद्ध करने वाले रेवापथ के सिद्ध महायोगी उस युग में गौरीशंकर महाराज हुए तथा इस युग में दादागुरु भगवान् हैं जिन्होंने विगत छः वर्षों से माँ नर्मदा के जल के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं किया और अपनी प्रथम परिक्रमा जल पर एवं द्वितीय , तृतीय व चतुर्थ नर्मदा परिक्रमा सिर्फ वायु ग्रहण कर रोज 30 से 40 किमी पैदल चलकर कभी दौड़कर पूर्ण की।

उन्होंने स्वयं जीकर देश दुनिया को यह समझा दिया है कि माँ नर्मदा का तट, पथ, जल माटी, वायु, वन सभी कुछ असाधारण है और जीवन का मुख्य आधार है। इसलिए इस आधार को बचाना ही इस समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। क्योंकि जीवन बचाने व जीवन चलाने वाली माँ नर्मदा इस समय प्रदूषण, अतिक्रमण, उत्खनन के कारण गुप्त होने की कगार पर है और माँ रेवा के अस्तित्व को बचाने के लिए ही दादागुरु भगवान् प्रण प्राण से कार्य कर रहे हैं। दादागुरु भगवान् कहते हैं कि भारत भूमि की पवित्र नदियां, पर्वत, वन, माटी सभी जीवन का प्रमुख आधार है इसीलिये हमारी सनातनी संस्कृति में इन्हें देवतुल्य मानकर पूजा जाता है। अतः इन्हें इनके मूलस्वरूप में ही रखना हमारा दायित्व है इनका स्वरूप बिगड़ेगा तो हमारा जीवन बिगड़ेगा। ये हमारा सौभाग्य है कि हम भारत माँ के आंचल में जीवन यापन कर रहे हैं और आपदाओं विपदाओं से बहुत हद तक बचे हुए है। दादागुरु भगवान् हमें जीवन जीने की कला सिखा रहें हैं और स्वयं का जीवन दाव पर लगाकर हमारा अस्तित्व बचाने का प्रयास कर रहे हैं अतः हमें उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना ही होगा।

और इस तरह कहा गया है-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धान्यास्तु
ये भारत भूमिभागे।
स्वर्गापवर्गासपदहेतुभूते भवन्तु भूयः
पुरुषाःसुरतवात ।।

अर्थात मोक्ष कैवल्य के मार्ग स्वरूप भारत- भूमि को धन्य धन्य कहते हुए देवगण इसका शौर्यगान गाते हैं यहाँ मानव जन्म पाना देवत्व पद प्राप्त करने से भी बढ़कर है। हम भाग्यशाली हैं कि हम भारत के निवासी हैं और उससे भी बढ़कर माँ रेवा की भूमि पर दादागुरु भगवान् के सानिध्य में हैं।

2. प्राचीन भारतीय सनातनी संस्कृति की महत्वता को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने तथा पवित्र नदियों तथा प्रकृति पर्यावरण के संरक्षण संवर्धन के लिए दादागुरु भगवान द्वारा किया जा रहा अखण्ड निराहार महाव्रत गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

LONGEST HUNGER STRIKE FOR ENVIRONMENT PROTECTION AND RIVER CONSERVATION

The World Record of 'longest hunger strike for environment protection and river conservation' has been attempted by **Samarth Sadguru Bhaiyaji Sarkar** from Jabalpur, Madhya Pradesh, India.

Since Oct 17, 2020 - till date Aug 02, 2021 (on going); Bhaiyaji Sarkar is at hunger strike and observing fast for the cause of *Environment protection & Narmada river conservation.*

*Provisional certificate

Authorized Signatory
Golden Book of World Records

पर्यावरण प्रकृति गौवंश का संरक्षण संवर्धन एवं मां नर्मदा के अस्तित्व को बचाने के लिए विगत 6 वर्ष से दादागुरु अन्न आहार त्याग कर अखंड महाव्रत साधना कर रहे हैं। माँ नर्मदा के जीवन अस्तित्व को बचाने की इस मुहिम में दादागुरु भगवान् ने निराहार रहकर हाल ही में माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा का चतुर्थ चरण मात्र वायु ग्रहण कर अकल्पनीय व अदभुत रूप में पूर्ण किया है। यह परिक्रमा यात्रा अदभुत अनुभवों और अविस्मरणीय रहस्यों का साथ पूर्ण हुई है इस यात्रा में दादागुरु के सहयात्री रहे नर्मदा भक्तों के पास अनुभूतियों का असीमित भंडार है।

इसके पूर्व भी लगातार भारत के विविध प्रांतों में दो लाख किमी से अधिक की यात्राएं के साथ जप, तप, ध्यान, साधना, सेवा, रात्रि जागरण करते हुए दादागुरु निरंतर जनजागरण कर रहे हैं।

6 वर्ष से सिर्फ नर्मदा जल ग्रहण कर क्रियाशील रहते हुए दादागुरु भगवान् ने माँ नर्मदा के जल की शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा, और जीवंतता को प्रकट कर दिनभर में 18 घण्टे कर्मशील रहते हुए दादागुरु ने जल ही जीवन है वाक्य को सत्य साबित कर चरितार्थ किया है वे कहते भी हैं कि तुम्हारे सामने सन्त नहीं बैठा है सत्य बैठा है। एकत्व भाव रखकर चलने वाले दादागुरु भगवान् "एक नज़र एक विचार" "एक सृष्टि एक दृष्टि" के दर्शन को जीवन में उतारना सिखा रहे हैं।

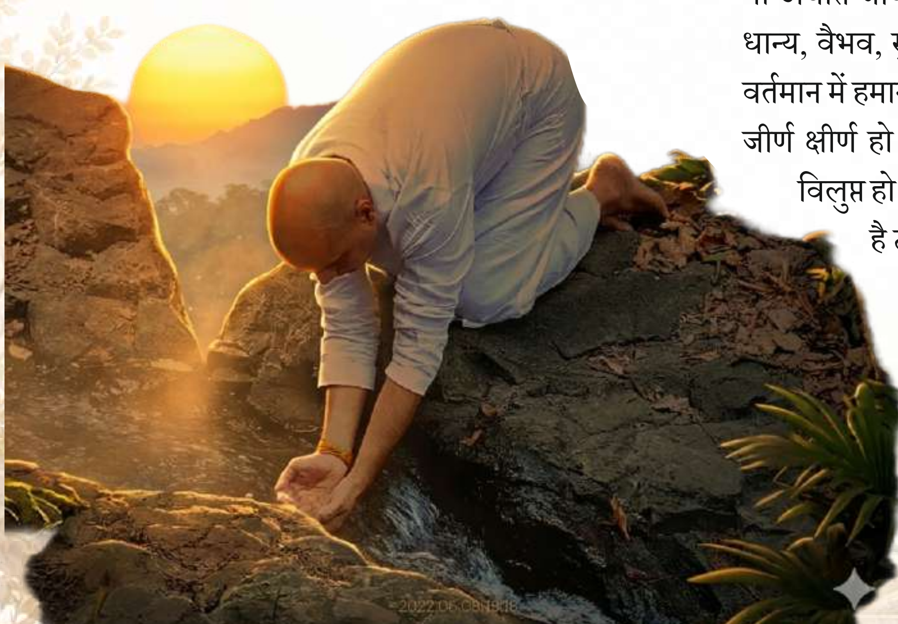

जीवन संस्कृति और सभ्यता को विकसित करने वाली नदियों को जहां सारे संसार में सिर्फ जल स्त्रोत माना वही हमने इन्हें माँ माना मां अर्थात जीवन देने वाली, पालन पोषण करने वाली, अन्न, धन, धान्य, वैभव, सुख संपदा, स्वास्थ्य और रोजगार देने वाली। किन्तु वर्तमान में हमारा जीवन चलाने वाली हमारी जीवनदायिनी माँ नर्मदा जीर्ण क्षीर्ण हो चुकी है उनकी अस्सी फीसदी सहायक नदियां भी विलुप्त हो चुकी हैं जहाँ एक ओर नर्मदा माँ की जलधार सूख रही है टूट रही है वहीं दूसरी और नर्मदा पट्टी के गर्भ में प्रलय अंगड़ाई ले रहा है जो कभी भी भूकम्प के रूप में प्रगट हो सकता है और दादागुरु भगवान् हमें इसी आपदा से बचाना चाहते हैं। इसी लिए वे जनजागरण और विलक्षण संरक्षण के कार्य करते हुए समाज के हर वर्ग को प्रकृति प्रधान प्राचीन भारतीय सनातनी संस्कृती और प्रकृति केंद्रित जीवन शैली से जोड़ रहे है।

3. संस्कार कावड़ यात्रा 'रन फ़ॉर नेचर' गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी दादागुरु के मार्गदर्शन व सानिध्य में निकलने वाली जबलपुर की संस्कार कावड़ यात्रा रन फ़ॉर नेचर जो कि प्रकृति संरक्षण सम्वर्धन, सगुण उपासना व सहयोग की भावना की एक अनूठी मिसाल है। गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज की गई। इस काँवड़ यात्रा में प्रत्येक वर्ष लाखों कांवड़िये सावन के द्वितीय सोमवार को अपनी अपनी काँवड़ में शिवस्वरूप देववृक्ष व माँ नर्मदा के अमृततुल्य जल को लेकर 35 किमी पैदल चलते हैं। इस यात्रा का संयोजन श्री शिव यादव जी करते हैं।

जिस तरह श्रवण कुमार कांवड़ में अपने माता-पिता को लेकर चले थे ठीक उसी तर्ज पर संस्कार कांवड़ यात्रा के कांवड़िये एक काँवड़ में जगतजननी माँ नर्मदा का जल तथा दूसरे काँवड़ में पितृ स्वरूप देववृक्ष को रखकर संकल्प के साथ चलते हैं इन देववृक्षों को विधिपूर्वक रोपित कर संरक्षित किया जाता है। जल संरक्षण व वन संरक्षण का संदेश लेकर चलने वाली यह यात्रा परम्परा के धागे में सगुण उपासना के मोती पिरोकर वसुधा की सूने आँचल को हरा भरा करने का अदभुत संकल्प है, साथ ही आज यह विश्व की अनूठी परम्परा के रूप में खड़ी हुई है जिसमें शिव आराधना के साथ प्रकृति पूजन व सगुण उपासना का संदेश है।

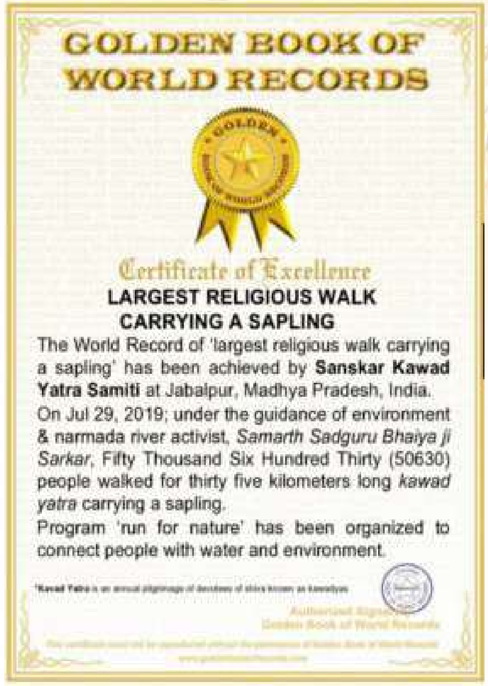
GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

LARGEST RELIGIOUS WALK CARRYING A SAPLING

The World Record of 'largest religious walk carrying a sapling' has been achieved by **Sanskar Kawad Yatra Samiti** at Jabalpur, Madhya Pradesh, India.

On Jul 29, 2019; under the guidance of environment & narmada river activist, *Samarth Sadguru Bhaiya ji Sarkar*, Fifty Thousand Six Hundred Thirty (50630) people walked for thirty five kilometers long *kawad yatra* carrying a sapling.

Program 'run for nature' has been organized to connect people with water and environment.

"संस्कार कांवड़ में एक ओर माँ नर्मदा जल एवं दूसरी ओर देव वृक्ष लेकर चलते है एक लाख से अधिक कांवडिए"

4. महाव्रत के दौरान तीन बार रक्तदान गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज

महायोगी श्री दादागुरु भगवान् ने अपने महाव्रत के दौरान ही तीन बार जरूरतमंदों को रक्तदान कर ज्ञान विज्ञान को भी अचंभित कर दिया। दादागुरु भगवान् की यह रक्तसेवा गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज की गई। तथा इसके बाद चतुर्थ वार भी श्री दादागुरु भगवान् ने रक्त दान किया।

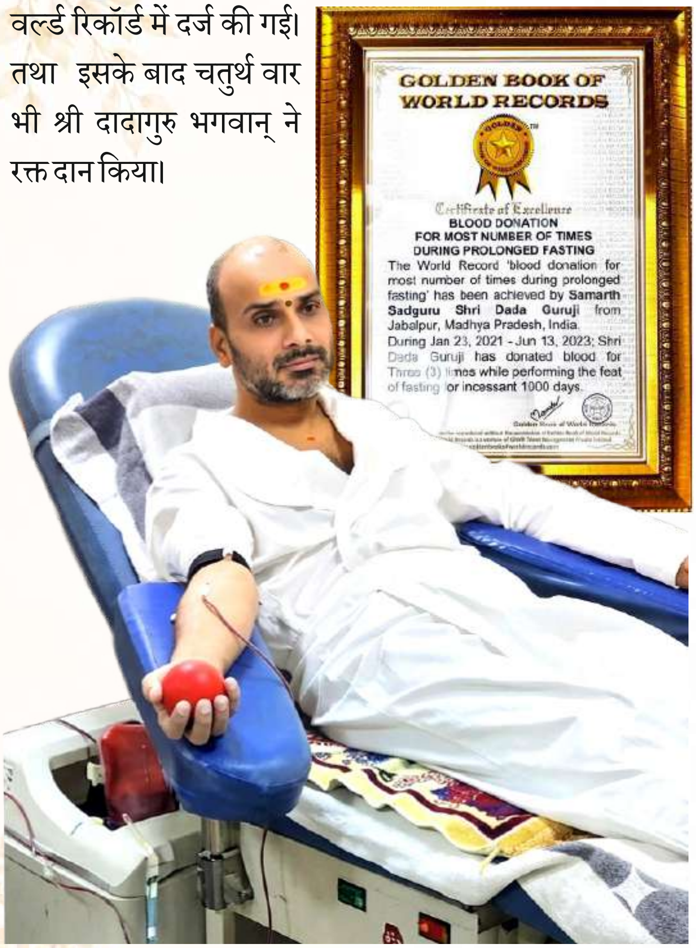

5. 1000 दिनों से अधिक दादागुरु का महाव्रत गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज

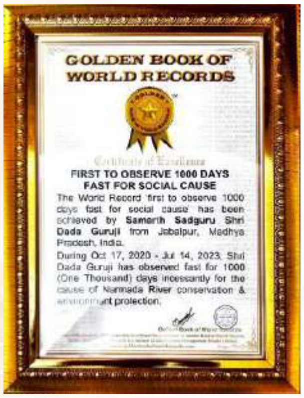

13 जुलाई 2023 को जब दादागुरु भगवान् की अखंड महाव्रत साधना के 1000 दिन पूर्ण हुए तो उसे गोल्डन बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। ज्ञातव्य है कि वर्तमान में दादागुरु भगवान् की महाव्रत साधना 2000 दिनों अनवरत चल रही है।

6. निराहार महाव्रत के दौरान 3200 किमी की माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

महायोगी श्री दादागुरु ने निराहार रहते हुए 3200 किमी की माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा पूर्ण की। जिसे गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। हालांकि

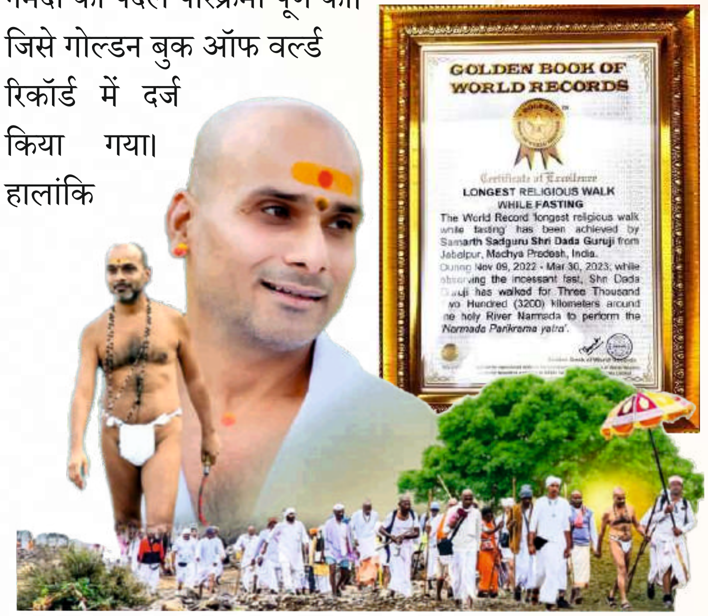

यह परिक्रमा का प्रथम चरण था। तत्पश्चात द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ चरण दादागुरु भगवान् ने मात्र वायु ग्रहण कर पूर्ण किया।

7. प्रकृति पर्यावरण के लिए प्रथम बार निरन्तर 25 घण्टे की सुर साधना गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

संस्कारधानी में विश्व संगीत दिवस पर दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन व सानिध्य में नर्मदा मिशन व अन्य सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से 25 घण्टे लगातार गायकों व संगीतज्ञों द्वारा सुर साधना (गायन) की गई। प्रकृति पर्यावरण पर आधारित यह प्रथम प्रयास गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया।

8. समर्थ वृक्ष रक्षा संकल्प दिवस "लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड" में दर्ज

10 अप्रैल 2017 को अमरकंटक में आयोजित समर्थ वृक्ष रक्षा संकल्प दिवस महोत्सव का नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। इस महोत्सव का उद्देश्य हर एक व्यक्ति को हमारी महागुरु आद्यशक्ति प्रकृति की शरण में ले जाकर वृक्षों की रक्षा का संकल्प दिलवाना था। हम जानते हैं कि हमारी प्राकृतिक संपदा वन प्रकृति का संतुलन हैं जीवन का और जलचक्र का आधार हैं धरा का श्रृंगार है बाबजूद इसके वनों को नष्ट होने से हम बचा नहीं पा रहे न ही नए वनों की स्थापना कर पा रहे। दादागुरु भगवान् अपना सर्वस्व न्यौछावर कर इन वन, जल अर्थात प्रकृति पर्यावरण को सुरक्षित संरक्षित करने का पुरजोर प्रयास कर रहे हैं।

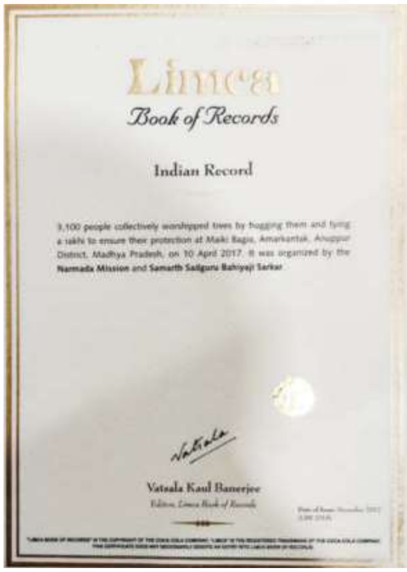
Limca
Book of Records
Indian Record
3,100 people collectively worshipped trees by hugging them and tying a rakhi to ensure their protection at Maki Bagia, Amarkantak, Anuppur District, Madhya Pradesh, on 10 April 2017. It was organized by the Narmada Mission and Samarth Sadguru Bahiyaji Sarkar.
Vatsala Kaul Banerjee
Editor, Limca Book of Records

इसी तारतम्य में दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन व सानिध्य में नर्मदा मिशन के इस आयोजन में 3100 लोग अमरकंटक में उपस्थित हुए जिसमें बच्चे बूढ़े जवान सभी थे दादागुरु का संदेश है कि प्रकृति हमारी महागुरु है अतः हमें अपनी प्रकृति मां के साथ अपनत्व बनाकर रिश्ता कायम करना होगा तभी हम अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाएंगे वृक्ष हमारे सगुण उपासना के जीवंत आधार हैं तथा हमारे आदर्श हैं हमें हर संभव प्रयास करके इनका संरक्षण और संवर्धन करना चाहिए यदि हमें अपने जीवन को जल को और जमीन को बचाना है तो हमें प्रकृति से संधि करनी होगी एवं उसकी सुरक्षा करनी होगी।

इसी संदेश और संकल्प के साथ दादा गुरु के सानिध्य में 3100 लोगों ने अमरकंटक में एक साथ वृक्षों को गले लगाया और फिर उन्हें रक्षा सूत्र बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया दादागुरु भगवान् के सानिध्य में नर्मदा मिशन द्वारा किए गए इस प्रयास को लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में इस क्षेत्र के एवं इस पद्धति के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के रूप में संकलित किया गया है।

9. स्वच्छता का वर्ल्ड रिकॉर्ड जबलपुर के नाम

दादागुरु भगवान् के पावन सानिध्य व मार्गदर्शन में जबलपुर नगर निगम द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है इस आयोजन में तीन लाख, (300000) व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया था जिसमें जबलपुर की अनेकों संस्थाओं संगठनों, विद्यालय, महाविद्यालय, के विद्यार्थियों निगम के अधिकारी कर्मचारियों के अलावा अनेकानेक सीनियर सिटीजन एवं जबलपुर के लोगों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता कर इस आयोजन को सफल बनाया।

इस स्वच्छता मुहिम के पीछे अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर तथा रोगमुक्त करने का सुंदर विचार था। नर्मदा मिशन का उद्देश्य भी

स्वच्छ भारत समर्थ भारत का है अतः इस स्वच्छता अभियान में दादा गुरु के मार्गदर्शन में जिस तरह से एकजुट होकर कार्य किया गया वह अनुकरणीय एवं अविस्मरणीय है।

स्वस्थ स्वच्छ समर्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए नर्मदा मिशन द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्य

1. उच्चतम बाढ़ सीमा से 300 मीटर तक का परिक्षेत्र मां नर्मदा की प्रॉपर्टी घोषित

ज्ञातव्य है की नदी एक जीवन है एक प्रणाली है एक व्यवस्था है जिसे अपने जीवन को अमर रखने का वरदान प्रकृति ने दिया है नदी अपने जल को शुद्ध और अविरल बनाए रखने के लिए स्वयं ही अपनी चिकित्सा करने में सक्षम है किंतु नदी के जो चिकित्सीय साधन है या उसका स्वयं का जो चिकित्सीय प्राण क्षेत्र या परिक्षेत्र है उस पर मनुष्यों द्वारा अतिक्रमण, उत्खनन, दोहन, वृक्षों की कटाई इत्यादि तीव्रता से किया जा रहा है इसलिए नदी की स्वयं को रिपेयर करने की क्षमता भी खत्म हो गई है और नदी का जीवन भी संकट में है।

1 WP-10561-2019

The High Court Of Madhya Pradesh

WP-10561-2019

4

Jabalpur, Dated : 05-07-2019

Shri Saurabh Kumar Tiwari, learned counsel for the petitioners.

Shri Bhoopesh Tiwari, learned Government Advocate for the respondents-State.

Shri Anuj Shrivastava, learned counsel for the respondent No.4.

Shri Dayaram Vishwakarma, learned counsel for the respondent No.9.

The respondents have filed an affidavit stating that the respondent No.9 is not undertaking any construction within the territory of 300 meters of river *Narmada*. However, from a perusal of the report, it is apparent that 300 meters have been measured by the respondent from the bank of the river *Narmada*, whereas as per law, the respondents are required to measure and fix the area of 300 meters from the line of highest flood level of the river *Narmada*. Apparently, the same has not been done by the respondents.

The authorities of the State are accordingly directed to furnish a report, not just in respect of respondent No.9, but in respect of all other constructions undertaken within the territory of river *Narmada* and the action taken by them in respect of the same.

A free typed copy of this order be supplied to the learned Govt. Advocate for information and compliance.

List immediately *after two weeks*.

(RAVI SHANKAR JHA) ACTING CHIEF JUSTICE

(VIJAY KUMAR SHUKLA) JUDGE

माँ नर्मदा भी मानव की इसी घृणित क्रियाकलापों से जीर्ण क्षीर्ण हो चुकी है अतः मां नर्मदा के प्राणक्षेत्र रायपेरियन ज़ोन को बचाने के लिए दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन में नर्मदा मिशन द्वारा जनहित में हाई कोर्ट जबलपुर में एक याचिका लगाई गई जिस पर सुनवाई करते हुए उच्च न्यायालय ने देश का अहम एवं ऐतिहासिक फैसला सुनाया कि उच्चतम बाढ़ स्तर से 300 मीटर तक का परिक्षेत्र मां नर्मदा की अपनी प्रॉपर्टी है अतःइस पर किसी भी प्रकार का कोई निर्माण उत्खनन दोहन या वन कटाई सभी अवैध है नर्मदा मिशन के अथक प्रयासों से मिली यह सफलता माँ नर्मदा के अस्तित्व को बचाने का सबसे बड़ा प्रयास है।

बाढ़ के उच्च निशान से 300 मीटर तक है नर्मदा की प्रापर्टी : हाईकोर्ट

2. पीओपी की मूर्तियों का पवित्र नदियों में विसर्जन प्रतिबंधित

दैनिक भास्कर

हाईकोर्ट ने जारी किए अंतरिम आदेश, राज्य सरकार सहित अन्य को नोटिस, चार सप्ताह में जवाब मांगा

नर्मदा में मूर्ति विसर्जन पर रोक

नर्मदा नदी में मूर्ति विसर्जन से होने वाले प्रदूषण संबंधी याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने अंतरिम आदेश पारित करते हुए इस पर रोक लगा दी है। जस्टिस केके लाहोटी तथा जस्टिस बीडी राठी ने राज्य सरकार के प्रमुख सचिव समेत अन्य को नोटिस जारी हुए चार सप्ताह में जवाब तलब किया है।

नगर प्रतिनिधि | जबलपुर

नर्मदा मिशन के विशाल तिवारी की ओर से दाखिल याचिका में कहा गया है कि अधिकांश प्रतिमाओं में प्लास्टर ऑफ पेरिस का इस्तेमाल किया जा रहा है और इसका विसर्जन नर्मदा नदी के अलावा तालाबों में किया जाता है। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता जीपी सिंह ने न्यायालय को बताया कि इस तरह की प्रतिमाएं न केवल नर्मदा नदी को प्रदूषित कर रही है, साथ ही इससे जीव-जंतुओं के लिए भी खतरा बढ़ रहा है। याचिका पर सुनवाई के बाद युगलपीठ ने अंतरिम राहत देते हुए नर्मदा में मूर्ति विसर्जन पर रोक लगा दी है। साथ ही मुख्य सचिव राज्य शासन, प्रमुख सचिव सामान्य प्रशासन, मप्र प्रदूषण बोर्ड के चेयरमैन, जबलपुर कलेक्टर, निगमायुक्त तथा जिला पंचायत सीईओ को नोटिस जारी करते हुए 4 सप्ताह में जवाब देने के आदेश दिए हैं।

दो दलीलें

- प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों का विसर्जन नदियों और झीलों किया जाना सही नहीं है।
- इस तरह के प्रावधान किए जाने चाहिए कि सिर्फ मिट्टी की प्रतिमाओं का निर्माण किया जाए।

इतने सारे 'जहर'

- जिप्सम
- सल्फर
- फॉस्फोरस
- मैग्नीशियम
- रसायनिक पेंट
- मर्करी
- लैड
- कैडमियम
- कार्बन

पीने लायक नहीं बचा पानी

प्रतिमाओं में प्लास्टर ऑफ पेरिस की मौजूदगी की वजह से नर्मदा के पानी में जहरीले तत्व लगातार घुल रहे हैं। याचिका में कहा गया है कि इससे न केवल जलीय जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है, बल्कि जहरीले तत्वों के कारण पानी पीने योग्य नहीं रहता। याचिका में मांग की गई है कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड दिल्ली द्वारा निर्धारित निर्देशों के पालन का आदेश प्रदेश सरकार तथा प्रदूषण बोर्ड को दिए जाएं। याचिका में प्रदूषण के लिए जिम्मेदार रसायनिक तत्वों का भी हवाला दिया गया है।

माँ नर्मदा सहित सभी पवित्र नदियों में जहरीले कैमिकल रंगों से सराबोर मूर्तियों के विसर्जन से जहां जलीय जीव तेजी से लुप्त हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर जल भी अशुद्ध होता चला जा रहा है और प्रदूषण का स्तर काफी तेजी से बढ़ रहा है जिससे नदियों के अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है। अतः नदियों के जीवन को बचाने के लिए दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन में नर्मदा मिशन द्वारा हाईकोर्ट में एक याचिका लगाई गई जिस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए अप्रेल 2013 में

जबलपुर हाइकोर्ट द्वारा माँ नर्मदा सहित सभी पवित्र नदियों में पीओपी की मूर्तियों का विसर्जन प्रतिबंधित कर दिया गया है। सभी प्रकार की मूर्तियां एक प्राकृतिक कुंड बनाकर ही विसर्जित की जाए यह आदेश भी पारित हुआ। जिसे देश के अनेक राज्यों ने भी अपनाया। जल शुद्धि करण संरक्षण में यह निर्णय मील का पत्थर साबित हुआ।

3. एक दिवसीय गौर गणेश निर्माण प्रकृति संरक्षण की दिशा की अद्वितीय पहल

विगत अनेकों वर्षों से नदियों को प्रदूषण से बचाने तथा हमारी प्राचीनतम परंपराओं को पुनर्जीवित करने के पवित्र उद्देश्य को लेकर गणेश उत्सव के पावन दिनों में सैकड़ों की संख्या में भक्तों और गुरूपरिवारों द्वारा एकदिवसीय गौर गणेश का निर्माण दादागुरु भगवान् के सानिध्य और मार्गदर्शन में किया जा रहा है प्रकृति पूजा और जल संरक्षण की कड़ी में एक और कदम गौमय से भगवान गणेश के स्वरूप का निर्माण है जो हमारी प्राचीन पद्धति भी है दादागुरु भगवान् ने पर्व परंपराओं को प्रकृति

से जोड़कर प्रकृति संरक्षण की दिशा में

एक अनुकरणीय प्रयोग किया है गणेश उत्सव के बाद इन गौमय अर्थात गोबर से निर्मित गणेश जी की प्रतिमाओं को खेत खलिहान में विसर्जित किया जाता है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और पवित्र नदियां भी केमिकल युक्त मूर्तियों के विसर्जन से मुक्त रहती हैं।

4. गौवंश के संरक्षण सम्वर्धन के लिए -
गौसेवा हेल्पलाइन, समर्थ गौ चिकित्सा केंद्र, गौ समर्थ सेवा एक्सप्रेस (गौरथ), समर्थ वेट डायग्नोस्टिक गौशालाओं का निर्माण

गौवंश का जीवन सुरक्षित और व्यवस्थित करने के लिए दादागुरु भगवान् के सानिध्य और मार्गदर्शन में नर्मदा मिशन द्वारा गौवंश के लिए अनेकों कार्य योजनाएं आरंभ की गई जिनमें समर्थ गौ सेवा हेल्पलाइन प्रदेश की पहली ऐसी हेल्पलाइन सेवा है जो गौवंश की सेवा सुरक्षा के लिए प्रारंभ की गई है इसके बाद गौ चिकित्सा केंद्र बेसहारा गौवंश के उपचार की सुविधा के साथ प्रारंभ हो गए हैं जहां गौ सेवक और पशु चिकित्सक 24

घंटे अपनी निशुल्क सेवाएं देते हैं बीमार वृद्ध और घायल गौवंश को चिकित्सालय तक पहुंचाने का कार्य गौरथ अर्थात गौ समर्थ सेवा एक्सप्रेस करती है यह गौवंश की एंबुलेंस है जो विभिन्न जिलों में कार्य कर रहीं हैं जिनमें गन्तव्य पर पहुंचकर चिकित्सा करने की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके साथ साथ रोगों की पहचान टेस्ट एक्सरे इत्यादि करने के लिये आधुनिक मशीनों से युक्त लैब की स्थापना भी नर्मदा

मिशन द्वारा की गई है।

साथ साथ समाज को गौवंश की सेवा से जोड़ने लिए दादागुरु भगवान् ने गौशालाओं को गौतीर्थ के रूप में व्यवस्थित किया जिसमें लोग अपने किसी विशेष दिन का उत्सव गौवंश के सानिध्य में मना कर गौमाता की आरती में शामिल होकर गौसेवा से भी जुड़ते हैं। हमारी सुख समृद्धि की आधार हमारी गौमाता को सुरक्षित संरक्षित करने के लिए दादागुरु भगवान् प्रण प्राण से संकल्पित हैं और नर्मदा मिशन के माध्यम से नित नए सेवा प्रकल्प आरम्भ कर रहे हैं।

5. साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक निशान महोत्सव

निशान अथवा ध्वज देवी-देवताओं, राष्ट्र व धर्म के प्रति हमारी

श्रद्धा एवं सम्मान प्रकट करने का प्रतीक है यह परंपरा बहुत प्राचीन है और समूचे विश्व में सर्वमान्य है इस परंपरा से समाज में सद्भाव जागृत करने के उद्देश्य से दादागुरु भगवान् ने निशान महोत्सव का आरंभ किया जिसमें विभिन्न धर्म संप्रदाय के लोग अपना-अपना ध्वज लेकर एक स्थान पर एकत्रित होते हैं इन सभी ध्वजों को एक जगह एक साथ लगाया जाता है छिंदवाड़ा के इस महोत्सव में 300 गांव के साथ-साथ अनेकों शहरों के हजारों लोग बड़ी संख्या में शामिल होते हैं यह महोत्सव सर्वधर्म समभाव का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसी तरह गंगा दशहरा को नर्मदापुरम में अन्य जिलों में अलग अलग तिथियों में यह राष्ट्र धर्म का प्रतीक निशान महोत्सव जाति, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मनाया जाता है।

6. विश्व की अमूल्य धरोहर पातालकोट, अमरकंटक सहित अन्य धरोहरों को बचाने की मुहिम

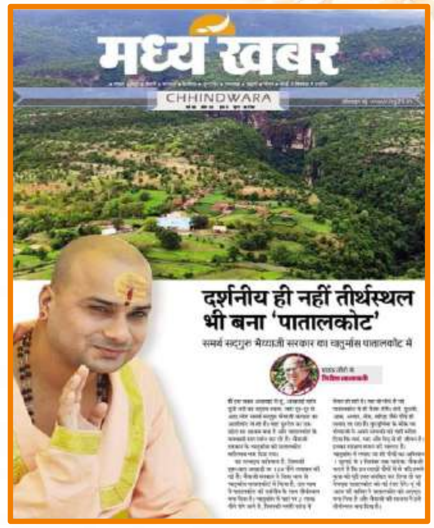

पतालकोट जो कि 3000 फीट की गहराई में अपने 12 गांव लेकर खड़ा हुआ है जहाँ आज भी अन्य जगहों की तुलना में विशुद्ध रूप में प्रकृति विद्यमान है एवम हज़ारों प्रकार की औषधीय जड़ी बूटियों का भंडार है।

एक समय था जब सूरज की रोशनी भी यहाँ नहीं पहुंच पाती थी किन्तु आज दृश्य अलग है पातालकोट मानवीय लालसाओं की भेंट चढ़ता जा रहा रहा है यहाँ की वन संपदा नष्ट हो रही है जड़ी बूटियां नष्ट हो रही है, प्राकृतिक खेती करने वाले वन आदिवासी केमिकल युक्त कृषि कर रहे है। नतीजा पहाड़ दरक रहे हैं वन सम्पदा नष्ट हो रही है अतः वन संरक्षण सम्वर्धन करने व आदिवासियों का अन्यत्र पलायन रोकने के उद्देश्य से पहले तो दादागुरु भगवान् ने एक पातालकोट महोत्सव का आयोजन किया जिसमें देश विदेश के एक लाख लोग शामिल हुए ततपश्चात दादागुरु भगवान् ने अपना चातुर्मास पातालकोट में किया तथा प्रकृति संरक्षण सम्वर्धन के लिए यहाँ अनेकों उल्लेखनीय कार्य आरम्भ किये। जैसे नर्मदा मिशन ने दादागुरु भगवान् के सानिध्य व मार्गदर्शन में सर्वप्रथम 2 लाख पौधों को रोपित किया एवम उनकी रक्षा सुरक्षा के लिए कार्य योजना बनाई इसके साथ साथ पातालकोट में पाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की घास जो मिट्टी को मजबूती से पकड़ती है के बीजों का रोपण हरेक पहाड़ी एवं मैदानी जगहों पर किया गया। जिससे मिट्टी के क्षरण को रोका जा सके इसके अलावा पालनाघर (नर्सरी) की स्थापना की गयी जिसमे मूल पेड़ों के बीजों से ही पौधों को तैयार किया गया इसमें लोगों को गाँव में ही रोज़गार भी मिला। औषधीय जड़ी बूटियों का संरक्षण सम्वर्धन भी सफलतापूर्वक किया गया।

सीतारेवा, दूधी इत्यादि सहायक नदियों को संरक्षित करने के लिए विविध माध्यमों का प्रयोग किया गया जिसमें दादागुरु भगवान्

के आह्वान पर स्थानीय जनसमुदाय ने अपनी सहभागिता निभाई। लोग जो धीरे धीरे वनों से दूर हो रहे थे पुनः प्रकृति की और लौटे ओर आज पातालकोट दादागुरु भगवान् का ऋणी है कि समय रहते स्थानीय रहवासियों में इतनी जाग्रति तो आ ही गयी कि किसी भी प्रलोभन में आकर वे अपनी वन संपदा को नष्ट नहीं करेंगे। इसके साथ ही बकस्वाहा जंगल, नर्मदा का रायपेरियन ज़ोन, अमरकण्टक की औषधीय वन संपदा आदि के संरक्षण सम्वर्धन के लिए नर्मदा मिशन दादागुरु भगवान् के सानिध्य और मार्गदर्शन में कार्य कर रहा है।

7. वैश्विक महामारी कोरोना के लॉकडाउन में पीड़ित मानवता की सेवा के लिए नर्मदा मिशन का उत्कर्ष आदर्श - प्रदेश गौरवान्वित

गौरतलब है कि भयावह महामारी कोरोना में जबलपुर के हाइवे से पैदल या वाहनों से निकल रहे भूखे प्यासे मजदूरों के भोजन चिकित्सा व अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए दादागुरु भगवान् के सानिध्य में नर्मदा मिशन के सदस्यों ने प्रतिदिन 18 घण्टे सेवाएं दी। हाइवे के अतिरिक्त शहर में हर उस जगह प्रतिदिन भोजन, चिकित्सा के अतिरिक्त सेनेटाइजर, ग्लब्स व अन्य जरूरतों के सामान भी उपलब्ध कराए गए। जहाँ जहाँ जरूरत थी ऐसी कुछ खास जगहों को चिन्हित भी किया गया। ज्ञातव्य है कि 25000 लोगों को प्रतिदिन भोजन उपलब्ध कराने का संकल्प नर्मदा मिशन का था। लॉकडाउन के कारण सड़कों पर भूखे रह रहे गौवंश व मवेशियों के लिए भी समुचित आहार व्यवस्था की गई। भूख प्यास से बीमार हुए अनेकों जीवों की चिकित्सा की सम्पूर्ण व्यवस्था भी नर्मदा मिशन ने दादागुरु भगवान् के सानिध्य में की प्रदेश को गौरवान्वित करने वाली भीषण आपदा एवं भयावह महामारी में की गयी नर्मदा मिशन की इस सेवा को मानवता सदैव याद रखेगी।

कोरोना संक्रमण काल में लगभग 5 लाख लोगों की चिकित्सा व दैनिक जरूरतों की पूर्ति हेतु आहार व्यवस्था संक्रमण या आपदा के समय समाज के हर वर्ग समुदाय के साथ कदम से कदम मिलाकर नर्मदा मिशन अपनी सेवाएं देता है।

पीपीई किट पहनकर कोरोना पीड़ित का स्वास्थ्य लाभ जानते श्री दादागुरु भगवान का छायाचित्र

8. अनूठी पहल - भारत के अनेक जिलों, प्रांतों के विद्यालयों, महाविद्यालयों में समर्थ युवा संवाद अनवरत जारी

"नदी को जानो" नदी नहीं तो सदी नहीं "

भारत के विविध नगरों महानगरों के महाविद्यालयों एवम विद्यालयों में युवा संवाद "नदी को जानो " वर्तमान पीढ़ी को हमारी जीवनदायिनी नदियों के महत्व एवं उनकी महिमा बताने तथा नदियों के जीवन पर मंडरा रहे खतरे से अवगत कराने हेतु एवं नई पीढ़ी को जल शुद्धिकरण तथा प्रकृति संरक्षण संबर्धन से जोड़ने हेतु भारत के विविध महाविद्यालयों, विद्यालयों में समर्थ युवा संवाद नर्मदा मिशन द्वारा दादागुरु भगवान् के सानिध्य में आयोजित किए गए जिसे नाम दिया गया "नदी को जानो"। "नदी नहीं तो सदी नहीं" जैसे ब्रम्ह वाक्य देने वाले दादागुरु भगवान् की इस पहल से विद्यार्थियों में नदियों के अस्तित्व की रक्षा सुरक्षा का रुझान बड़े स्तर पर देखने को मिला। दादागुरु भगवान् की सीख कि जल को बनाया नहीं जा सकता पर बचाया जा सकता है पर चलकर ये युवा और बच्चे कल समृद्ध भारत के निर्माण के सहभागी होंगे।

9. सरोवर हमारी धरोहर महाअभियान के माध्यम से गुप्त जीर्णशीर्ण प्राकृतिक स्रोतों को पुर्नर्जीवित करना अनवरत जारी

झीलों या सरोवरो को पुनर्जीवित करने का कार्य दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन और सानिध्य में तेजी से किया जा रहा है अनेक सरोवर जल विहीन हो चुके हैं उनके पुनर्निर्माण में नर्मदा मिशन तत्परता से लगा हुआ है। जल को संरक्षित करना आज की प्राथमिकता है क्योंकि

आने वाला समय बहुत भयावह है अनेकों स्थानों पर 1200 फीट तक भी पानी नहीं निकल रहा है वर्तमान समय में पानी की समस्या से जूझ रहे समाज को आने वाली भीषण तबाही अभी नहीं दिख रही है किंतु दादागुरु भगवान् की दृष्टि में आने वाले समय का चित्र साफ है इसलिए वह अपना सर्वस्व न्योछावर कर प्रकृति संरक्षण और जल संवर्धन संरक्षण पर तथा जल शुद्धिकरण पर अनवरत कार्य कर रहे है एवं आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व को सुरक्षित करने का पुरजोर प्रयास कर रहे हैं

ऐसे अनेकों उदाहरण है जहां मरणासन पड़े हुए सरोवर कुएं, बावड़ी अथवा सहायक नदी आज नर्मदा मिशन के अथक प्रयासों से पुनर्जीवित हो चुकी है नरीला नारायण सरोवर में प्रदूषण से लुप्त हो गए. सहस्त्रदल कमल आज पूरे तालाब में अनेको संख्या में खिल रहे हैं। सरोवर हमारी धरोहर अभियान हमारे जलस्त्रोतों को संरक्षित करने का प्रयास है।

10. जबलपुर में देश की प्रथम प्रकृति पर्यावरण संसद का आयोजन -

दादागुरु भगवान् के सानिध्य और मार्गदर्शन में जबलपुर में देश की पहली प्रकृति पर्यावरण का संसद का आयोजन नर्मदा मिशन द्वारा किया गया। जिसमें सम्पूर्ण भारत के पर्यावरणविद एवम प्रकृति पर्यावरण पर कार्य करने वाली अनेकानेक संस्थाओं ने सहभागिता की। इस संसद के आयोजन का उद्देश्य प्रकृति पर्यावरण संरक्षण

सम्वर्धन, जल शुद्धिकरण, गौवंश आधारित प्राकृतिक कृषि की नवाचार ओर प्राचीन पद्धतियों के प्रयोग और उनके क्रियान्वयन के लिये वैज्ञानिक, आध्यात्मिक सामयिक विमर्श के साथ साथ संरक्षण की दिशा में प्राथमिकता से कार्य कैसे किया जाए इस पर भी चिंतन करना था। इस आयोजन में सभी सहभागी सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण संवर्धन के लिए दादागुरु भगवान् के सानिध्य में शपथ भी ग्रहण की। इस संसद में शामिल होने के बाद सभी पर्यावरण समितियां और पर्यावरण विद संरक्षण संवर्धन का कार्य पूरे भारत में त्वरित स्तर पर अपने-अपने क्षेत्रों में कर रहे हैं यही इस संसद का उद्देश्य था।

11. समर्थ पालना घरों (नर्सरी) की विविध प्रदेशों में जिलेवार स्थापना -

प्रकृति संरक्षण संवर्धन की दिशा में कार्य करते हुए नर्मदा मिशन द्वारा दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन में जिलेवार समर्थ पालना घरों की स्थापना की गई है। जिसका उद्देश्य मूल वृक्षों के बीजों से पौधों को

तैयार करना है चूंकि आज मूल वृक्षों के बीजों की उपलब्धता नगण्य होती जा रही है संकर बीजों में गुणवत्ता में कमी देखी जाती है अतः

वृक्षारोपण में अधिक से अधिक मूल वृक्षों का ही रोपण हो इस लक्ष्य के साथ साथ कम मूल्य में पौधा उपलब्ध कराना भी नर्मदा मिशन का एक उद्देश्य है। जिससे हर एक वर्ग का सदस्य वृक्षारोपण में अपनी सहभागिता ज्यादा से ज्यादा दे सके और पौधों को स्थापित कर संरक्षित कर सके। इसके अलावा विभिन्न जनपदों के प्रत्येक ग्राम में समर्थ पंचवटी (पांच देववृक्ष) की स्थापना भी की गई है जो आगे भी जारी रहेगी। सम्पूर्ण नर्मदा पथ को हरा भरा करने तथा वसुधा को हरित चूनर ओढ़ाने के साथ साथ रोजगार के अवसर भी प्रदान करना है

12. माँ के नाम एक अभियान

सवा करोड़ देववृक्ष मूर्तियों की स्थापना।

एक अवधूत का आह्वान बना सदी का सबसे बड़ा महाअभियान

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

दादागुरु भगवान् के मार्गदर्शन और सानिध्य में नर्मदा मिशन ने 1.25 करोड़ उन्नत किस्म के वृक्षों को लगाने के संकल्प के साथ आरम्भ किया है माँ के नाम एक अभियान जो दादागुरु भगवान् की जीवन बचाने की मुहिम का एक हिस्सा है और जिसमें जनभागीदारी भी वाँछनीय है।

दादागुरु भगवान् कहते हैं हर वृक्ष एक देवता है और हर पौधा माँ की जीवंत मूर्ति है ,इसलिए ये केवल अभियान नहीं ये राष्ट्र धर्म सेवा का जीवंत महायज्ञ है। जो माँ के जीर्ण क्षीर्ण आंचल को हरित चुनर से सजाने का दृढ़ संकल्प है।

यदि कोई भी वृक्ष लगाकर पुण्य कमाना चाहता है तो वह नर्मदा मिशन की सहायता से वृक्ष लगवाए क्योंकि- सम्पूर्ण नर्मदा पट्टी क्षेत्र में वृक्ष की उपयोगिता के आधार पर नर्मदा मिशन द्वारा शोध किया गया है ।क्षेत्र की उपयोगिता, जलवायु के आधार पर वृक्ष लगाए जा रहे हैं ।ये मूल वृक्षों के बीजों से तैयार किए गए पौधे हैं , जो उन्नत गुणधर्म वाले स्वस्थ रोगरहित जैविक पौधे हैं।

वृक्षारोपण से लेकर पौधे के वृक्ष बनने तक रखरखाव की जिम्मेदारी नर्मदा मिशन की है।

यदि आप योगदान देते हैं तो आपका नाम वहां अंकित कर लोकेशन व मैप सहित समस्त जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाएगी। जिसे आप देख सकते हैं।

2000 दिनों से अधिक समय से अखण्ड निराहार, केवल माँ नर्मदा के जल पर महाव्रत कर रहे दादागुरु भगवान् का यह संकल्प आने वाली पीढ़ी के सुखद भविष्य की नींव है। दादागुरु भगवान चार बार माँ नर्मदा की पैदल परिक्रमा कर चुके हैं जिसमें तीन परिक्रमाएं वायु पर तथा एक जल पर की है। ये भी उनकी साधना का ही अंग है।

अवधूत महायोगी श्री दादागुरु भगवान के इस महासंकल्प के माध्यम से बस इतनी करुण पुकार है कि वक्त की सबसे बड़ी जरूरत प्रकृति संरक्षण है। प्रकृति संरक्षण का सबसे बड़ा आधार वृक्ष हैं अतः हम मिलकर इस देवधरा को जीवंत रखने वाले वृक्षों को शीघ्रता से रोपित करें।

इस हेतु हम जो वृक्ष लगाएंगे उनसे आगामी तीन वर्ष

में तैयार हो जाएंगे हमारे वनक्षेत्र। क्योंकि हमारे लगभग सभी पौधे बड़े हैं। जो समर्थ पालना घरों में तैयार हुए हैं।

इस महाअभियान का ही एक पक्ष दादागुरु भगवान के वो संकल्प हैं जिन्हें पूर्ण करने के लिए उनका प्रण प्राण लगा हुआ है जैसे-:

1. नर्मदा के संपूर्ण पथ पर लाखों की संख्या में परिक्रमा कर रहे परिक्रमा वासियों के लिए सदाव्रत की व्यवस्था करना।

2. निराश्रित गौ वंश की सेवा, संरक्षण व चिकित्सा प्रदान करना। गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाना उन्हें शाला जाने के लिए प्रेरित करना।

3. गांवों को नशा मुक्त करना और युवाओं के लिए गाँव में ही लघु एवं कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों का निर्माण करना।

4. हम प्रण लें कि इन सब कार्यो में सहभागी बनकर दादागुरु भगवान की इस अखण्ड कठोर महाव्रत साधना को पूर्ण करने में सहायक होंगे ,सहगामी होंगे।

5. आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करें आइए करोड़ों जिंदगियों को बचाएं सच्चा धर्म निभाए सदी की सबसे बड़ी मुहिम और एक अवधूत के आह्वान का हिस्सा बने। विश्व में प्रकृति की सगुण उपासना का संदेश दें।

6. देववृक्षों की स्थापना कर पालन पोषण करने वाली हमारी माँ नर्मदा और माँ वसुधा के ऋण का आदर करें। हमारे पितृ गणों को सन्तुष्ट करें। अपने राष्ट्र को विश्व ख्याति प्रदान करने का माध्यम बनें। महाअभियान को एक उत्सव के रूप में फैलाएं।

7. 1.25 अरब की आबादी में 1.25 करोड़ वृक्षों का संकल्प जीवन बचाने और बनाने का एक विकल्प है।

अब वृक्षारोपण सिर्फ सोचने का नहीं —
करके दिखाने का समय है। क्योंकि

तुम से है आग़ाज़ जिंदगी
तुमसे ही अंजाम
जीवन के हर कालचक्र पर
सिर्फ तुम्हारा नाम
हे वृक्ष ,तुम हो तो हम है
तुम हृदयों का स्पंदन
तुम प्राणवायु की सरगम
वसुधा को श्रृंगारित करने वाले
वन आभूषण
हे वृक्ष तुम हो तो हम हैं।

तो आइए, प्राण वायु की सरगम व हृदय के स्पंदन को सहेजे सँवारे ।आगे आए, हाथ बढ़ाएं— और नर्मदा मिशन का हिस्सा बने।

हमारा संकल्प,आपका साथ
सुखद भविष्य का अमर विश्वास

13. समर्थ सद्गुरु विद्यापीठ एक अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल

नर्मदा मिशन द्वारा संचालित समर्थ सद्गुरु विद्यापीठ का लक्ष्य मानव जीवन के सबसे मजबूत स्तम्भ शिक्षा में एक ऐसा उच्च आदर्श स्थापित करना है कि यहाँ का विधार्थी भारतीय संस्कारों से समन्वित होकर अत्याधुनिक विविध विषयक शिक्षा प्राप्त कर धर्म, कला, विज्ञान, योग शास्त्र साहित्य, दर्शन आधात्म, इत्यादि समस्त विधाओं में पारंगत होकर एक श्रेष्ठ भारतीय युवा बनें। जो दुनिया बदलने का जज़्बा रख सकें नेल्सन मंडेला ने कहा है कि दुनिया बदलने के लिए शिक्षा सबसे मजबूत हथियार है। बशर्ते शिक्षा का स्वरूप वैसा हो।

अतः बच्चों को महज़ किताबी कीट न बनाकर बौद्धिक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ, शारिरिक स्तर पर बलिष्ठ, सामाजिक स्तर व्यवहारिक व अनुशासित भारतीय संस्कार और संस्कृति के वाहक,तथा देश दुनिया के सामने अपने ज्ञान और व्यक्तित्व के आधार अपना उन्हें एक विशिष्ट स्थान दिलवाना है। हमारी कोशिश यह है कि

विश्व भर में विख्यात भारतीय प्राचीन शिक्षा प्रणाली गुरुकुल व्यवस्था तथा नालन्दा, शिक्षा व्यवस्था जैसा परिवेश परिदृश्य व शिक्षा अत्याधुनिक उपकरणों व भारतीय संस्कारो से ओतप्रोत आधुनिक शैक्षिक प्रणाली के माध्यम से दी जा सके। जिससे शिक्षित होने वाला हरेक विद्यार्थी सर्वगुण सम्पन्न, भारतीय संस्कृति का रक्षक व वाहक धर्म, धरा, धेनु और प्रकृति का संरक्षक विविध विषयों का ज्ञाता तथा व्यवहारिक समझदार युवा बनें जो देश को एक नई ऊंचाई तक ले जा सके। हमारा स्वप्न है कि घर घर में विवेकानंद जैसे चरित्र तैयार हों। औऱ इसी लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल की स्थापना गुरुदेव द्वारा की गई है जो है समर्थ सद्गुरु विद्यापीठ

समर्थ सद्गुरु विद्यापीठ द्वारा दी जाने वाली सुविधाएं

- हाईली एजुकेटेड टीचर
- डे बोर्डिंग
- नेचर बेस्ड स्टडी
- वेद शाला
- कल्चरल बेस्ड एक्टिविटी
- स्मार्ट क्लासरूम

इसके अतिरिक्त बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए *एडवांस कम्प्यूटर लेब, लेंग्वेज लेब, स्पोर्ट एकेडमी ,डाँस एकेडमी म्युज़िक एकेडमी विद्यापीठ के प्रमुख केंद्र बिंदु हैं।

इसके अतिरिक्त नर्मदा मिशन और भी अनेकानेक कार्य अनवरत कर रहा है जैसे जल ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना, जल शुद्धिकरण के लिए दीपदान के स्थान पर दीपयज्ञ का प्रारम्भ गोबर गैस संयंत्र की स्थापना गौआधारित कृषि जैविक खेती का आरम्भ, देववृक्ष शोभायात्रा व स्थापना* परिक्रमा मार्ग में माँ नर्मदा पर पैदल फुटब्रिज का निर्माण माँ नर्मदा के जीवन पर आधारित देश का प्रथम लेज़र शो सँस्कार धानी में प्रदर्शित माँ नर्मदा जयंती पर तीन दिवसीय माँ नर्मदाजल कलश स्थापनाशक्ति की सगुण उपासनाअनेकों जिलों में पंचकोषी परिक्रमाएं आरम्भ। माँ यमुना संरक्षण संवर्धन की जन जाग्रति के लिए दिल्ली से मथुरा था पद यात्रा निष्कर्षतः नर्मदा मिशन श्री दादागुरु भगवान् के पावन सानिध्य एवं मार्गदर्शन में प्रकृति पर्यावरण, धर्म धरा, धेनु, का संरक्षण सम्वर्धन जरूरतमंदों की सेवा मूक जीवों की सुरक्षा व्यवस्था के प्रति प्रण प्राण से संकल्पित होकर कार्य कर रहा है। और विश्व स्तर पर जनजागृति की अखण्ड ज्योत जला रहा है। साथ ही प्रकृति आधारित जीवनशैली व्यवस्था और विकास की तरफ समाज का ध्यानाकर्षित करने में सफल हुआ है। यह एक अभियान है एक जागरण है जो सत्य सनातन एक धर्म, एक धरा, एक प्रकृति, एक परिवार की जीवंत अभिव्यक्ति की एक मुहिम है जो सबसे बेहतर और सुरक्षित जीवन के लिए है। इस मुहिम की हुंकार पूरे नर्मदापथ पर सुनाई दे रही है तथा इसकी क्रियाशीलता देश दुनिया में दिखाई दे रही है। नर्मदा मिशन के कार्य रूपी ध्वज आज विश्व स्तर पर पूरे आन बान और शान के साथ लहरा रहे हैं। आइए हम भी इस जीवन बचाने वाले अभियान का हिस्सा बने सत्य को समझें सत्य के साथ चलें क्योंकि नर्मदा मिशन संरक्षण, संकल्प, सेवा, साधना और जनजागृति का गतिपथ है।

महाशोध दुनियां में पहली बार एक अवधूत की जीवन शैली पर

सदी की सबसे कठोर महाव्रत साधना में छिपे गूढ़ रहस्य से अवगत हुई देश दुनिया

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

प्रकृति केंद्रित जीवनशैली व्यवस्था और विकास, संरक्षण और संवर्धन के संकल्प के साथ 6 वर्षो से लगातार किए जा रहे दादागुरु के निराहार महाव्रत ने जीवन की सभी विचार सरणियों को और सभी धाराओं के चिंतकों को चिंतन का एक नवीन आयाम दिया है। जिस तरह की जीवनशैली दादागुरु की है उसमें विज्ञान कहता है कि इस तरह जीवन सम्भव ही नहीं है। यही विचार, यही चिंतन दादागुरु के जीवन पर शोध का आधार बना है। दादागुरु का महाव्रत दुनिया को साक्षात प्रकृति की जीवंतता का संदेश दे रहा है और समाज को प्रकृति से दीर्घ व सहज सन्धि करने के लिए प्रेरित कर रहा है। यह सच है कि महागुरु प्रकृति में माता- पिता और गुरु तीनों का स्वरूप और गुण समान रूप से विद्यमान है। अतः प्रकृति प्रेम, ममत्व भी देती है, जीवन व्यवस्था भी देती है, शिक्षा भी देती है और यदि कुपित हो जाए तो सजा भी देती है। वर्तमान में प्रकृति मानव की मशीनी और असंवेदनशील जीवनशैली के चलते अपने बेतहाशा हनन से बेहद क्षुब्ध है। किंतु फिर भी उसके ममत्व को हम साक्षात दादागुरु में जीवंत देख रहे हैं अपने संकट के शीर्षकाल में प्रकृति ने दादागुरु के अवतरण की ब्रह्मांडीय व्यवस्था को हृदय से आत्मसात कर अपनी भरपूर ममता बरसाई है और जीवनदायनी माँ नर्मदा ने अपने अमृत तुल्य जल को दादागुरु के शरीर में रक्त बनाकर अपनी जीवंत चैतन्य उपस्थिति दुनिया के समक्ष दादागुरु के माध्यम से व्यक्त कर दी है। चिकित्सा विज्ञान अचंभित है क्योंकि उसके पास ऐसे कोई प्रमाण नहीं है जो यह साबित कर सके कि निराहार रहकर इतने सालों तक सक्रिय रहते हुए क्या जीवित रहा जा सकता है। और यदि कोई जीवित है तो कैसे है? क्योंकि दादागुरु जैसा जीवन जीने वाला पहले कभी नहीं हुआ है। हाँ एक स्थान पर बैठकर तरल द्रव्य पदार्थो का सेवन कर, निराहार रह कर और फिर प्रभु चरणों में अपना जीवन अर्पित करने की अर्थात मोक्ष प्राप्ति की इच्छा लेकर व्रत करने वाले साधकों का इतिहास अवश्य है जो निश्चित कालावधि तक सीमित रहता है और निजता पर आधारित रहता है। किंतु परहित की भावना को ध्यान में रखकर प्रकृति,पर्यावरण संरक्षण संवर्धन तथा विशेष तौर से माँ नर्मदा को बचाने और माँ नर्मदा की महिमा और महत्व को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलवाने के लिए अभी तक ऐसा अखण्ड निराहार महाव्रत किसी ने भी नहीं किया है और न ही किसी ने ऐसा जीवन जिया है।

शोध इसी विषय पर किया दादागुरु अन्न का एक भी

दाना ग्रहण किए बिना सिर्फ और सिर्फ नर्मदाजल पर विगत **6** साल से कैसे क्रियाशील हैं।

तदुपरांत वायु ग्रहण कर माँ नर्मदा की प्रतिदिन **30** से **40** किमी पैदल परिक्रमा कैसे करते हैं? ये रहस्य है जो विज्ञान की सीमाओं से परे है और जो हमारी प्राचीन सनातनी व्यवस्था और आध्यात्मिक ज्ञान की परिधि को विस्तृत फलक दे रहा है। दूसरा शोध का मन्तव्य यह था कि जिस असाधारण ऊर्जा की बात दादागुरु करते हैं वह क्या वास्तव में नर्मदा के पथ पर विद्यमान है? और यदि है तो वह किस रूप में उपस्थित है? और उसे ग्रहण करने की पात्रता क्या है?

इसी विचार को केंद्र में रखकर राज्य सरकार ने देश के उच्च चिकित्सा संस्थानों से प्रख्यात चिकित्सकों की एक टीम बनाकर दादागुरु की जीवनशैली पर शोध करने का निर्णय लिया।

फिर भी चिकित्सकों के सामने एक बड़ी समस्या थी कि कोई प्राचीन थ्योरी इस तरह की नहीं थी जिसके आधार पर शोध कितने दिनों तक हो इसका निर्धारण हो सके। काफी वैचारिक मंथन के बाद चिकित्सकों ने शरीर क्रिया विज्ञान को केंद्र में रखकर ये निर्णय लिया कि कोई भी व्यक्ति यदि बिना अन्न आहार और बिना जल ग्रहण किए 42" से 45° तापमान में 30 से 35 किमी प्रतिदिन पैदल चलता है तो कुछ ही दिनों में डिहाइड्रेशन से उसके आंतरिक अंग कार्य करना बंद कर देंगे और ऐसे में मृत्यु निश्चित है।

रिसर्च कहती है कि इन प्रतिकूल परिस्थितियों में मुश्किल से व्यक्ति 3 से 4 दिन जीवित रहेगा। इसलिए शोध की अवधि 7 दिन रखी गई।

इसी को आधार बना कर मई के भीषण तापमान (42° से 45°) अर्थात नवतपा वाले समय में प्रख्यात चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ, पुलिस की शारीरिक उपस्थिति तथा कैमरों की 24 घण्टे सतत निगरानी व मीडिया और प्रशासन की व्यापक उपस्थिति में सात दिवसीय शोध सम्पन्न हुआ।

शोध की पूरी अवधि में प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे तीव्र तापमान (42° से 45°) रास्ते में उतार चढ़ाव आदि में श्री दादागुरु सिर्फ वायु ग्रहण कर माँ नर्मदा के पथ पर 30 से 35 किमी चले। हर दो घण्टों में चिकित्सक द्वारा दादागुरु की सम्पूर्ण जाँच की गई और सातों दिन कुछ छोटे-छोटे उतार चढ़ाव के अतिरिक्त सारे पैरामीटर नार्मल पाए गए। इन सात दिनों में शरीर के समस्त अंगों ,समस्त अवयवों की गहराई से जांच की गई। और सारी रिपोर्ट नार्मल आयी साथ ही यह भी सिद्ध हुआ कि अन्न या किसी प्रकार का कोई भी द्रव्य पदार्थ शरीर में नहीं पाया गया।

चिकित्सा विज्ञान की सीमाएं एक शीर्ष पर आकर समाप्त हो गयी हैं और विज्ञान को मानना पड़ा है कि दादागुरु प्रकृति से ही ऊर्जा ग्रहण करते हैं। दादागुरु कहते हैं कि माँ नर्मदा के जल से और प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपनी निष्काम सेवा साधना के साथ अपने जीवन आधारों से जुड़ना होगा। चिकित्सा विज्ञान के साथ साथ यह विषय अब अन्तरिक्ष विज्ञान के पृथ्वी विज्ञान व हेलियोफिजिक्स (सूर्य भौतिकी) आदि पर भी केंद्रित हो गया है।

दादागुरु कहते हैं कि हमारी जीवदायनी माँ नर्मदा का जल, तट, पथ, वायु, माटी, वनक्षेत्र सब कुछ असाधारण है ये असीम ऊर्जा के भंडार हैं। माँ नर्मदा ब्रम्हाण्ड में व्याप्त आदिशक्ति क्रियाशक्ति है जो चक्रों की अधिष्ठात्री देवी है। यही वह जीवंत चैतन्य शक्ति है जो जीवजगत को चला रही है। माँ नर्मदा की सम्पूर्ण परिधि में अर्थात जीवंत आदिभवानी की ऊर्जा में छिपी संजीवनी शक्ति को प्रकट करने के लिए दादागुरु ने यह व्रत धारण किया।

दादागुरु का जीवनदर्शन हमारे सामने प्राचीन सनातन संस्कृति के आदर्शों का साक्षात प्रकटीकरण है। प्राचीन संस्कृति की समस्त ज्ञान धारणाएं प्रकृति प्रेम की विचारणा में विद्यमान है। प्रकृति पर भीषण

संकट के इस दौर में दादागुरु उसी सनातनी संस्कृति जो प्रकृतिप्रधान थी को जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आधुनिक आयतित विचारधारा एवं पश्चिमवादी व भौतिकवाद मानसिक पराधीनता के चलते भारतीय समाज, भारत के मूल विचार प्रकृति प्रेम से वंचित हो गया है। हमारे प्रकृति पूजन आधारित पर्वो का आधार ही प्रकृति संरक्षण संवर्धन था।

किंतु कटु सत्य यही है कि आधुनिक जीवनशैली में प्रकृति के प्रति जबाबदारी नगण्य है। प्रगति पहियों ने जो रौंद दिया है वो बहुमूल्य था और वही जीवन का आधार भी था।

दादागुरु इसी आधार को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। हमें: जल्दी समझना होगा, हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। इस वर्ष तापमान 45° से 50° तक पहुंचा था। आगामी 50 से 60° पहुंचेगा और इतने तापमान में जीवन सम्भव नहीं है। दादागुरु इसी आपदा से हमें बचाने का सार्थक प्रयत्न कर रहे हैं।

"किसी ने कहा था कि सत्य पर श्रद्धा नहीं शोध होना चाहिए तो आज सत्य पर शोध हुआ है।"

यह शोध प्रकृति केंद्रित जीवनशैली, व्यवस्था और विकास के साथ स्वस्थ व समर्थ भारत की परिकल्पना के दृढ़ संकल्प का रूप है।

शोध कार्य संक्षेपिका एवं निष्कर्ष

उपरोक्त शोधकार्य राज्य शासन म.प्र. के गठित शोध समिति द्वारा 22/05/2024 से 29/05/2024 तक NSCB Medical college Jabalpur (MP) में किया गया।

शोध समिति में अध्यक्ष -

प्रोफेसर डॉ. आर. एस. शर्मा, हृदय रोग विशेषज्ञ (पूर्व कुलपति म.प्र.मेडिकल यूनिवर्सिटी),

प्रोफेसर वी. पुनीकर, प्रोफेसर मेडीसिन विभाग

प्रोफेसर आर महोबिया, प्रोफेसर पैथालॉजी NSCB Medical college जबलपुर थे।

सहायता हेतु रेसीडेंट डाक्टर्स, पैरामेडिकल स्टाफ एवं पुलिस प्रशासन के कर्मचारी थे।

उपरोक्त समिति ने आरम्भ दिनाँक 22/5/2024 से समाप्ति दिनाँक 29/5/2024 तक प्रतिदिन नियमित अंतराल पर शारीरिक ,मानसिक, बायोकेमिकल एवं अन्य अन्वेषणीय मानकों का लगातार अवलोकन कर परिणामों को सश्लेषित किया।

इस अवधि में दादा गुरूजी की सतत् निगरानी CCTV कैमरा, वीडियोग्राफी एवं पुलिस कर्मचारियों द्वारा की जाती रही।

29/05/2024 को रात्रि 8 बजे प्रयोग समाप्ति के बाद सभी परिणामों को एकत्र कर उनका वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया।

यह परिणाम दर्शाते हैं कि दादा गुरूजी ने शोधकार्य अवधि में कोई भी खाद्य पदार्थ या पोषण आहार नहीं लिया। प्रतिदिन केवल 300-500ml नर्मदा जल, यात्रा के पूर्व और यात्रा की समाप्ति पर ग्रहण किया। इस अवधि में प्रातः 7 बजे एवं दिनभर की नर्मदा परिक्रमा (25-30 किमी) के बाद उनके शारीरिक परीक्षण के परिणाम सामान्य रहे एवं वे मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे।

शारीरिक मानक पल्स, बीपी, श्वांस, शारीरिक तापमान एवं अन्य परीक्षण भी अधिकांशतः सामान्य रहे। केवल कुछ परीक्षणों में असामान्यता पाई गई, जैसे कि दो बार रक्त शर्करा 57 mg - 65 mg (कम) हुई, पर शरीर में कोई लक्षण उपस्थित नहीं हुए।यह कम शर्करा स्वत ही कुछ समय में सामान्य हो गई, बिना किसी आहार/ उपचार के। गुर्दे संबंधित जाँचें जैसे ब्लड यूरिया, क्रिराटीनिन सामान्य से कुछ अधिक पाये गये, पर इसके भी कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए। ये मानक से ज्यादा बढ़े भी नहीं।

श्वेतरक्त कणिकाओं, प्लेटलेट्स में कुछ भिन्नता देखी गई पर यह भी बिना किसी लक्षण के थी। वह भी स्वतः ही सामान्यता की ओर

1. केवल कुछ परीक्षणों में असामान्यता पाई गई, पर कोई लक्षण नहीं हुए, यह स्वतः ही कुछ समय में सामान्य हो गए, बिना किसी आहार / उपचार के।
2. इतने दिनों तक निराहार रहने के साथ अत्यधिक कठोर शारीरिक श्रम को सहजता से सहन करना वैज्ञानिक रुप से अत्यंत विस्मयकारी माना गया।
3. हमारी राय में दादा गुरुजी का उपवास और कठोर शारीरिक गति-विधियों के प्रति प्रतिक्रिया अद्वितीय है और विश्व चिकित्सा साहित्य में इससे पहले कभी रिपोर्ट नहीं की गई है।

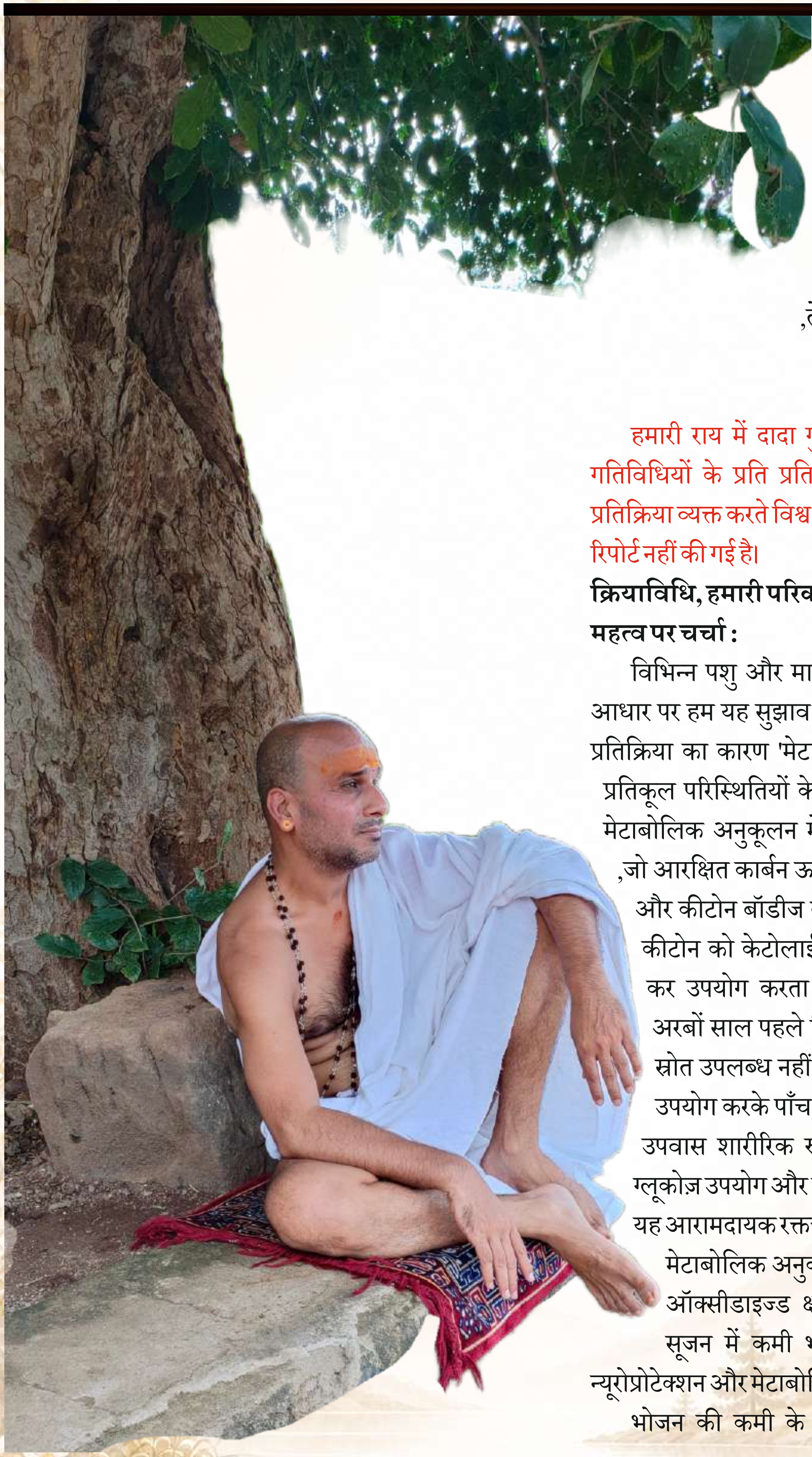

अग्रसर हो गई । इसे 'नॉन स्पेसिफिक' कारण कहा गया। चूंकि अधिकतर मानक सामान्य रहे तथा दादा गुरू स्वयं भी सामान्य रहे (शारीरिक, मानसिक) अतः इतने दिनों तक निराहार रहने के साथ अत्यधिक कठोर शारीरिक श्रम (25-30 कि.मी. की माँ नर्मदा परिक्रमा ,तेज धूप, 42°-45° तापमान) को सहजता से सहन करना वैज्ञानिक रूप से अत्यंत विस्मयकारी माना गया।

हमारी राय में दादा गुरुजी की उपवास और कठोर शारीरिक गतिविधियों के प्रति प्रतिक्रिया अद्वितीय है और इस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करते विश्व चिकित्सा साहित्य में इससे पहले कभी भी रिपोर्ट नहीं की गई है।

क्रियाविधि, हमारी परिकल्पना और इस अध्ययन के अनुप्रयुक्त महत्व पर चर्चा :

विभिन्न पशु और मानव अध्ययनों से प्राप्त मौजूदा साक्ष्यों के आधार पर हम यह सुझाव देते हैं कि दादा गुरुजी की इस अद्वितीय प्रतिक्रिया का कारण 'मेटाबोलिक अनुकूलन है। जो उपवास और प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए उनकी सहन शक्ति को बढ़ाता है। मेटाबोलिक अनुकूलन में हाइपोमेटाबोलिक अवस्था शामिल है ,जो आरक्षित कार्बन ऊर्जा स्त्रोतों के उपयोग को न्यूनतम करती है और कीटोन बॉडीज के उच्च स्तर को जमा करती है। मस्तिष्क कीटोन को केटोलाईसिस द्वारा Acetyl-CoA में परिवर्तित कर उपयोग करता है। यह वैकल्पिक मेटाबोलिक प्रोग्राम अरबों साल पहले विकसित हुआ था जब भोजन और ऊर्जा स्रोत उपलब्ध नहीं थे। पेंगुइन भी फैटी एसिड और कीटों का उपयोग करके पाँच महीनों तक भोजन की कमी से निपटते हैं। उपवास शारीरिक रूप से इंसुलिन संवेदनशीलता, परिधीय ग्लूकोज़ उपयोग और सेलुलर तनाव प्रतिरोध को बढ़ाता है। यह आरामदायक रक्तचाप और हृदय गति को कम करता है।

मेटाबोलिक अनुकूलन में बेहतर सेलुलर बायो एनरजेटिक्स ऑक्सीडाइज्ड क्षतिग्रस्त अणुओं का कम संचय, और सूजन में कमी भी शामिल है। उपवास उच्च रक्तचाप, न्यूरोप्रोटेक्शन और मेटाबोलिक सिंड्रोम में भी सुधार करता है।

भोजन की कमी के प्रति मस्तिष्क की अनुकूली प्रतिक्रिया

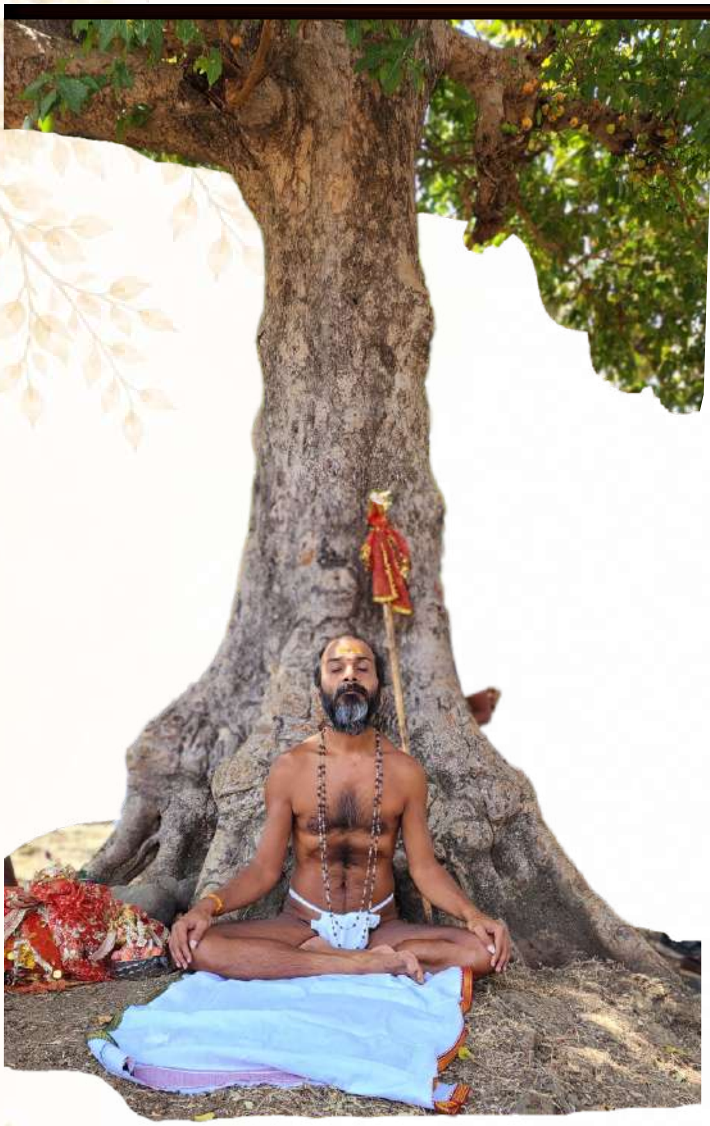

बीडीएनएफ (ब्रेन डिराईव्ड न्यूरोट्रॉफिक हार्मोन) के माध्यम से होती है। मन की सकारात्मकता, आध्यात्मिकता, निरंतर अभ्यास और प्रकृति से निकटता सहन-शक्ति को बढ़ाती है। कठोर उपवास और 25 से 30km प्रतिदिन पैदल यात्रा, वह भी तीव्र धूप में जिसमें तापमान 42°से 45°C हो, इसके लिए बहुत अधिक सहनशीलता की आवश्यकता होती है। कठिनाई को और बढ़ाते हुए इस दौरान दादागुरु ने कोई पोषण नहीं लिया क्योंकि वे तो वर्षों से निराहार है सिर्फ माँ नर्मदा के जल पर जीवित हैं किंतु कठिनाई की बात यह कि उन्होंने इस दौरान जल भी नहीं लिया। उन्होंने केवल मेडिकल कॉलेज लौटने के बाद नर्मदा जल पिया। सामान्य व्यक्ति के लिए यह करना संभव नहीं था इनके साथ में धूप में चलने वाले साथी व्यक्तियों को रूकना पड़ता था तथा खाद्य पदार्थ व पेय पदार्थ लेना पड़ता था।

मानव शरीर के अंगों तथा कोशिकाओ को कार्य करने हेतु ऊर्जा (energy) की आवश्यकता होती है तथा यह ऊर्जा सामान्यत रक्त में उपस्थित ग्लूकोज तथा उसके संपूर्ण रूप से उपयोग हो चुकने के बाद (यदि व्यक्ति निराहार है) शरीर के अन्य अंगों जैसे लिवर, किडनी, मांसपेशियों में संग्रहित ग्लाइकोजन से प्राप्त होती है। इस संचित ग्लाइकोजन के समाप्त होने के बाद (24-48 hr निराहार रहने के बाद) ऊर्जा शरीर में संचित वसा (फैट) से प्राप्त की जाती है और उसके बाद प्रोटीन (माँसपेशियों में) से प्राप्त की जाती है। इसके बाद जैसे-जैसे ग्लुकोज समाप्त होता है फैट एवं प्रोटीन, एमाइनों एसिड से उत्पन्न कीटोन से ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

दादा गुरू जो निराहार रहते हुए शारीरिक श्रम (25-30km. घूप में 42°-45° तापमान पर चलना) कर रहे हैं, उन्हें ऊर्जा कहां से और कैसे प्राप्त हो रही है, यह वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यत आश्चर्यजनक है।

क्योंकि उनके शारीरिक, मानसिक, बायो- केमिकल मानकों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं देखा गया। (शोध के प्रारंभ से अंत तक) दो बार रक्त शर्करा कम होने के बाद भी वे पूर्णत सामान्य रहे और रक्त शर्करा की कमी (हाइपोग्लाइसीमिया) के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिये। बिना किसी आहार के उनकी रक्त शर्करा अधिकांश समय सामान्य रही। ऊर्जा के एक और वैकल्पिक स्रोत कीटोनबॉडीज, बीटा हाइड्राक्सी ब्यूटरेट की रक्त में उपस्थिति सामान्य सीमा में रही। यूरीन में कीटोन नहीं प्रदर्शित हुए।

इन दोनों तथ्यों से प्रदर्शित होता है कि दादा गुरूजी के अंगों, ऊतकों एवं कोशिकाओं को ऊर्जा, ग्लुकोज एवं कीटोन से प्राप्त हो रही है। तथा उनके उपयोग के द्वारा व्यय होने की मात्रा (Consumption) काफी कम है क्योंकि रक्त में इन ऊर्जा प्रदायक पदार्थों की मात्रा सामान्य है। संक्षेप में कहा जाये तो दादा गुरू के

उन्हें ऊर्जा कहां से और कैसे प्राप्त हो रही है, यह वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत आश्चर्यजनक है- क्योंकि उनके शारीरिक, मानसिक, बायो-केमिकल मानकों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं देखा गया (शोध के प्रारंभ से अंत तक) दो बार रक्त शर्करा कम होने के बाद भी वे पूर्णतः सामान्य रहे और रक्त शर्करा की कमी (हाइपोग्लाइ-सीमिया) के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिये बिना किसी आहार के उनकी रक्त शर्करा अधिकांश समय सामान्य रही।

अंग(organs), ऊतक (tissues) तथा कोशिकाएं (Cells) अत्यधिक कम मात्रा में ऊर्जा का उपयोग करते हुए भी सामान्य या उससे अधिक कार्य करने में सक्षम हैं।

मैं प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त करता हूँ-दादागुरु

"मुझे ऊर्जा प्रकृति से प्राप्त होती है, वृक्षों से, पौधों से, बहती हुई नदी के जल से, नर्मदा पथ पर छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर, मिट्टी, वहाँ बहने वाली वायु, इन सबसे मैं संपर्क में आता हूँ तथा असीमित ऊर्जा प्राप्त करता हूँ। नर्मदा परिक्रमा करते हुए मैं जल ग्रहण नहीं करता हूं ।निराहार तो पहले से ही हूँ नर्मदा परिक्रमा के समय "वायु" से ही मुझे ऊर्जा प्राप्त होती रहती है। इतनी तेज धूप में भी, जब तापमान 42°-45°C में भी मुझे कोई असुविधा या तकलीफ नहीं होती। बल्कि मुझे सूर्य से और ज्यादा ऊर्जा प्राप्त होती है।मेरा मुंह एवं गला भी नहीं सूखता क्योंकि मुझे हीट वेव की जगह नेचुरल वेव महसूस होती है। शाम को परिक्रमा के बाद ही नर्मदा जल ग्रहण करता हूँ। मुझे लगता है कि इस जल की हर घूंट में असीमित ऊर्जा है। डॉ. और अन्वेषक मुझसे पूछते है कि यह ऊर्जा जल, वायु, प्रकृति से उन्हें क्यों नहीं मिलती? मेरा उत्तर रहता है कि निष्काम भाव और हृदय की पवित्रता से रहने पर प्रकृति यह ऊर्जा प्रदान करती है। मैं चाहता हूँ कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। प्रकृति को सुरक्षित रखना चाहिए और प्रकृति से ज्यादा से ज्यादा संपर्क में रहना चाहिए। मेरे अनुभव में नर्मदा पथ, नर्मदा नदी तथा उसके आसपास के जंगल एवं पहाड़ ऊर्जा के असीमित स्रोत हैं। प्रकृति शरीर को स्वस्थ रखने में अत्यंत सहायक है वह शरीर के अवयवों की मरम्मत तुरंत कर देती है।" हम शोधकर्ताओं चिकित्सकों ने दादा गुरूजी के निराहार रहकर शारीरिक श्रम के समय किये गये शोध के डाटा को एकत्र करने के बाद कुछ निष्कर्ष निकाले हैं पाया है कि दादागुरु जी की शारीरिक, मानसिक स्थिति निराहार एवं इतने श्रम के बाद भी सामान्य है तथा उनके शरीर एवं मन की सहनशीलता भी अत्यधिक है। हमने प्रयत्न किया है कि आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक आयामो को समायोजित कर इस शोध कार्य के निष्कर्षों को मानव एवं समाज हित में प्रस्तुत करें।

दादा गुरू द्वारा किए जा रहे निराहार रहकर कठोर शारीरिक श्रम पर किया गया यह शोध विश्व में इस तरह का प्रथम शोध है तथा यह वैज्ञानिक जगत एवं जन-सामान्य हेतु उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य लक्ष्य और परिणामो की संक्षिप्त व्याख्या उद्देश्य और लक्ष्य

1. अध्ययन की अवधि (7 दिन) के दौरान लंबे उपवास के साथ-साथ परिश्रम के दौरान विभिन्न शारीरिक और मानसिक मापदंडों का आकलन करना।
2. अध्ययन की अवधि के दौरान विभिन्न शारीरिक, जैव रासायनिक और अन्य जांच मापदंडों का मूल्यांकन करना।
3. इस अवधि के दौरान किसी भी बीमारी या असामान्य लक्षण की जांच करना।
4. परिणामों को समझाने के लिए संभावित क्रियाविधि की परिकल्पना और सुझाव देना।

Prof. P Pantkar MD Professor medicine NSCB Medical College Jabalpur	Prof. R Mahobia Prof. Pathology NSCB Medical College Jabalpur	Prof Dr. R.S.Shrma M.D., DM (Cardiology (AIIMS New Delhi) Consultant Cardiologist Ex Vice Chancellor MP Medical Science University

5. नदी और प्रकृति पर केंद्रित जीवन शैली पर समग्र अध्ययन करना।
6. इस अध्ययन के महत्व को खोजने और सामाजिक हित के लिए इसके महत्व को समझना और समाजहित उजागर करना।

दादागुरु जी 22.05.2024 को रात 8 बजे सरकारी NSCB Medical College में भर्ती किए गए और 29.05.2024 को रात 8 बजे डिस्चार्ज किए गए।

उन्हें CCTV, वीडियोग्राफी, पुलिस सुरक्षा और पैरामेडिकल स्टाफ की उपस्थिति में लगातार निगरानी में रखा गया। उनकी पूरी चिकित्सा इतिहास, शारीरिक परीक्षा के निष्कर्ष (जैसे पल्स, बीपी, असन, शरीर का तापमान) और मानसिक क्षमताओं को भर्ती के समय और उसके बाद नियमित रूप से रिकॉर्ड किया गया।

ECG और ambulatory holter monitoring की गई। अध्ययन की शुरुआत में विभिन्न जैव रासायनिक मापदंड जैसे CBC, blood sugar, ABG, vitamins, electrolytes, uric acid, kidney ,liver function test, minerals को मापा गया। सभी प्रासंगिक मापदंडों को हर दिन सुबह और शाम को 'नर्मदा परिक्रमा" के बाद दोहराया गया। इतने लंबे समय तक उपवास और कठोर शारीरिक

गतिविधि के साथ जीवन पर वैज्ञानिक ज्ञान वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

इसलिए इस अध्ययन को शारीरिक, मानसिक और जांच मापदंडों में परिवर्तन को मान्यता देने और लंबे समय तक उपवास और कठोर शारीरिक गतिविधि के साथ सामान्य जीवन जीने की संभावना को समझने के लिए किया गया है।

यह अध्ययन निश्चित रूप से साबित करता है कि श्री दादा गुरुजी ने इन 7 दिनों के अध्ययन के दौरान कोई भोजन, कैलोरी या पोषक तत्व नहीं ग्रहण किए और प्रतिकूल परिस्थितियों (सूर्य का प्रकाश, उच्च वायुमंडलीय तापमान, ढलान और ऊँचाई आदि) में उन्होंने इस कठोर उपवास और रोजाना 25-30 km की कठिन पैदल यात्रा को भीषण गर्मी (42°-45°) में बिना किसी समस्या के सहन किया। इस अवधि के दौरान उनमें कमजोरी के कोई लक्षण नहीं दिखे। अध्ययन की शुरुआत से लेकर अंत तक वे शारीरिक और मानसिक रूप से चुस्त और स्वस्थ थे। उनके शारीरिक, मानसिक और जाँच संबंधी मानकों (जिनमें जैव रासायनिक भी शामिल हैं) में कोई महत्वपूर्ण विचलन नहीं पाया गया।

हमारे विचार में प्रतिकूल परिस्थितियों (तेज सूर्य का प्रकाश, उच्चतम तापमान, ढलान और ऊंचाई वाले रास्ते आदि) में इस प्रकार के कठोर उपवास और कठिन शारीरिक गतिविधि के प्रत्ति यह प्रतिक्रिया अनोखी एवं अविस्मरणीय है और विश्व चिकित्सा साहित्य में अब तक अप्रकाशित है

एक और दिलचस्प परिणाम serum glucose में देखा गया, यह प्रवेश के समय (22/5/24 को रात 10.30 बजे) 68mg/dl कम पाया गया, लेकिन कोई लक्षण नहीं थे, मानसिक और शारीरिक रूप से चुस्त थे। 29.5.24 को शाम 7 बजे 57.8 mg/dl कम ग्लूकोज पर भी उनमें कोई लक्षण नहीं थे।

परिणामों की व्याख्या-

एक दिलचस्प परिणाम serum glucose में देखा गया। यह प्रवेश के समय (22/5/24 को रात 10.30 बजे) 68mg/dl कम पाया गया ।लेकिन कोई लक्षण नहीं थे। मानसिक और शारीरिक रूप से चुस्त थे। 29.5.24 को शाम 7 बजे 57.8 mg/dl कम ग्लूकोज पर भी उनमें कोई लक्षण नहीं थे।

सामान्य शारीरिक परीक्षा ESR सहित CBC लगातार सामान्य सीमा के भीतर था ।सिवाय 23.05.24 को एक उच्च WBC रीडिंग के संक्रमण के लक्षण के बिना (कोई बुखार, शरीर में दर्द, अस्वस्थता नहीं)। इसके बाद ज्यादातर WBC count सामान्य सीमा में थी और अध्ययन के अंत में यह सिर्फ 4.9 10^3/ul थी। इसलिए इसे गैन रोगात्मक और गैर विशिष्ट माना जा सकता है। lymphocytes औ non specific platelets ने भी भिन्नताएं दिखाई।

Serum B12 का स्तर भी सामान्य था हम जानते हैं कि मनुष्य intestinal bacteria द्वारा बहुत कम मात्रा में B12 का संश्लेषण करते हैं और इस मामले में दादागुरु ने 1300 अधिक दिनों से इतिहास के अनुसार भोजन नहीं खाया है, इसलिए इस समय तक B12 के भंडार का सेवन किए जाने की संभावना है।

VitD का स्तर सामान्य था। भोजन सेवन शून्य था। यह संभावना है कि नियमित रूप से सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने और केवल न्यूनतम कपड़ों ने त्वचा द्वारा सामान्य विटामिन D को संश्लेषित किया गया।

Serum cortisol ने उल्लेखनीय बदलाव दिखाए। (4.75 से 1 mg/dl) और चयापचय अनुकूलन में भूमिका निभाने की संभावना है।)

TSH का स्तर केवल एक बार (25/5 अध्ययन के दूसरे दिन)उच्च था। हम जानते हैं कि यह कम चयापचय दर और कम ऊर्जा दिखा सकता है लेकिन यह लगातार उच्च नहीं था और 2.54 से 2.73 4/ml तक सामान्य सीमा में भिन्न था।

T, T, का स्तर भी सामान्य श्रेणी में था। B1, urea creatinine

अधिकतर 25.5.24 को उच्च स्तर पर थे (B1, 65.34 और अध्ययन के अंत में 43.77 mg/dl) creatinin अध्ययन के अंत में उच्च स्तर पर था (1.35 mg/dl) अत्यधिक शारीरिक परिश्रम (गर्मी में 42 डिग्री सेल्सियस पर 25 किमी से अधिक पैदल चलना) और अपर्याप्त पानी का सेवन व कम मूत्र उत्पादन(24 घण्टे में10.15ml) से सम्बंधित हो सकता है। पानी का सेवन 500ml था। उन्हें पहले से कोई किडनी की बीमारी नहीं थी।

USG किडनी सामान्य श्री S. Uric acid पूरे समय सामान्य था। लेकिन अध्ययन के अंत में यह 9.2 mg/dl उच्च था लेकिन कोई लक्षण नहीं थे जो protein catabolism के कारण हो सकता है। उनके लिवर के कार्य भी सामान्य थे।

अधिक दिलचस्प तथ्य यह है कि इन दो मामलों को छोड़कर उनके रक्त शर्करा के स्तर सामान्य श्रेणी बनाए रखे गए थे और यहां तक कि किसी भी खाद्य पदार्थ का सेवन करने के बावजूट 131 mg (26.5.24 को) तक थे। Lipid profile total cholestrol शुरुआत में 188 mg/dl था और अध्ययन के अंत में 179 (सामान्य सीमा के भीतर)। TG और LDL cholestrol सामान्य थे।

Serum calcium, phosphorus amylase, lipase LDH का स्तर सामान्य था। Tropi, SGOT, CPK MB का स्तर सामान्य श्रेणी में था जो myocardial चोट नहीं होने का संकेत देता है। Serum iron शुरू में और अंत में कम स्तर के साथ परिवर्तनशील पाया गया लेकिन बीच में सीमा के भीतर था। उतार-चढ़ाव वाले स्तरों के साथ serum ferritin 22.5.24 को 10 बजे 8 mg पर बहुत कम पाया गया लेकिन 25.5 को यह फिर से अधिकतम 15.5 mg तक बढ़ गया। उपवास की इस सेटिंग पर अस्पष्टीकृत potassium, sodium, chloride का स्तर किसी भी महत्वपूर्ण मात्रा में electrolytes का सेवन नहीं करने के बावजूद सामान्य श्रेणी में था हालांकि आश्चर्यजनक रूप से अध्ययन के अंत में S-protassium का स्तर बिना किसी सेवन के उच्च (5.53 एम मोल) पर था। एस प्रोटीन भी सामान्य श्रेणी में थे। नर्मदा जल सेवन प्रति दिन 300 मिली से 1000 मिली तक भिन्न था। मूत्र उत्पादन केवल 10-15 मिली प्रतिदिन था और फिर भी मूत्र का रंग गहरा नहीं था. हल्का पीला था और specific gravity आश्चर्यजनक रूप से अधिक नहीं था जो 1.01 से 1.03 तक भिन्न था। यूरिन ph 25/5 को 6, 26/5 को 7, 27/5 को 8 , 29/5 अध्ययन के अंत में 8 तक भिन्न था)। मूत्र में प्रोटीन अनुपस्थित थे। कोई शर्करा नहीं पाई गई।

दादागुरु के बायोकेमिकल और रेडियोलॉजिकल परीक्षणों में CBC,LFT,ECG,EEG, ESR, KFT, ECHO के साथ अग्नाशयी एंजाइम,कार्डियक एंजाइम,हार्मोनल प्रोफाइल,लिपिड प्रोफाइल,लौह प्रोफाईल, USG पेट,कलर डाप्लर,होल्टर मॉनिटरिंग, MRI मस्तिष्क इसके अलावा-

Phlebotomy tray - vaccutainers (purple cap, red cap, gray cap and green cap), syringes, sterile gauze pieces, torniquet, sticking plaster

Plasma Glucose, Serum Chemistry- TFT, Lipids, Amylase, LDH, Lipase, CPKMB, Electrolytes, Calcium, Phosphorus, Magnesium, Iron, Ferritin, Vit B12, Folate and Vit D की जांच की गई।

उनके पीने के पानी का glucose और electrolytes के लिए परीक्षण किया गया कुछ परीक्षण आउटसोर्स किए गए थे Cortisol, Beta hydroxybuterate, adrenaline, trace elements, HBACHSCRP, ACHR Ab, Urine specific gravity, Ketone bodies, sodium, Potassium सभी सामान्य सीमा में रहे। यदि थोड़े बहुत असामान्य भी हुए तो स्वतः ही ठीक हो गए। हाँ शर्करा की मात्रा का बहुत कम होने पर उनका स्वस्थ रहना आश्चर्य जनक है।

उपरोक्त परिणामों और उनकी व्याख्या के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि भोजन के बिना सख्त उपवास को मद्देनजर रखते हुए, कई परिणाम आश्चर्यजनक हैं। ऊर्जा / कैलोरी / विटामिन / खनिज / प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट का कोई अन्य स्रोत नही है। इसके अलावा 1300 से अधिक (17 अक्टूबर 2020 से) सख्त उपवास के उनके पिछले इतिहास के अनुसार अध्ययन की शुरुआत में और अंत में ये निष्कर्ष

आश्चर्यजनक हैं। यह दैनिक रूप से कठोर शारीरिक गतिविधि वाले मौसम में प्रतिदिन 25-30 किमी पैदल चलने (तापमान 42 डिग्री सेल्सियस) को देखते हुए और भी अधिक है। इतनी शारीरिक गतिविधि प्रतिदिन 1500 कैलोरी

(1कैलोरी/kg/km) का उपक करती है।

जैसे दादागुरु का वजन 60 kg है इसलिए 60 कैलोरी x 25 km = 1500 कैलोरी। यह न्यूनतम से अधिक है।

प्रकार कुल 3500 कैलोरी होगी। बाहर से कोई भोजन या कैलोरी एक गतिहीन व्यक्ति का कैलोरी व्यय (2000 कैलोरी/दिन) लेने की स्थिति में शरीर में कैलोरी, विटामिन, खनिज का भंडार जल्द ही (30 दिन से कम समय में) समाप्त हो जाएगा। लेकिन इस समय

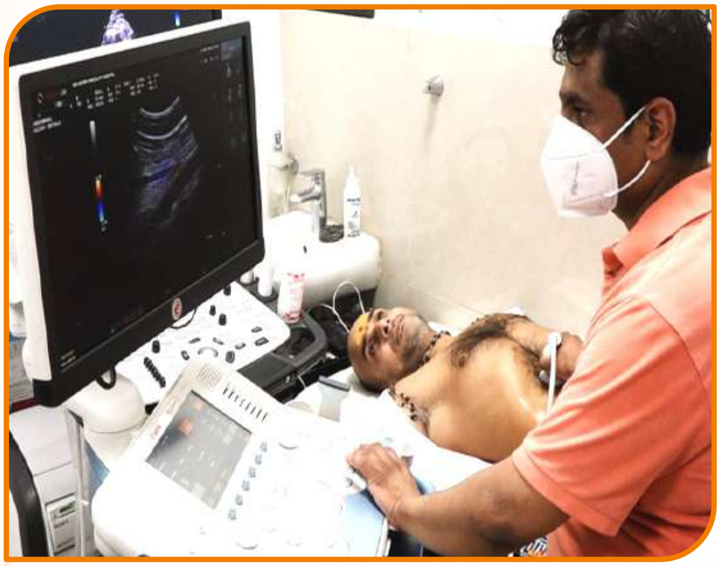

सीमा से पहले ही इतना कठोर उपवास करने वाला व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत कमजोर हो जाएगा।बिना किसी समस्या के अपनी सामान्य दिनचर्या जारी रखने के लिए पर्याप्त फुर्तीला नहीं होगा।

लेकिन यहां हम यह सब अपने सामने CCTV और पुलिस कर्मियों की कड़ी निगरानी और उच्च तापमान वाले गर्मी के मौसम में रोजाना दादागुरु को चलते -दौड़ते देखते हैं।

ये परिणाम संकेत देते हैं कि केवल दादा गुरु का अत्यधिक चयापचय अनुकूलन और असाधारण डिग्री की उच्च शारीरिक और मानसिक सहन शक्ति ही इन घटनाओं की व्याख्या की सकती ।चिकित्सा जगत के लिए यह एक चुनौती है और आश्चर्य जनक शोध है।

शोध के परिप्रेक्ष्य में प्रख्यात चिकित्सको व प्रबुद्ध जनों का संवाद

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "धर्म मानव में पहले से ही विद्यमान दिव्यता की अभिव्यक्ति है तथा विज्ञान कुछ और नहीं वरन सत्य को खोजने का तरीका है"। "सत्यं नास्ति परो धर्म "एक प्राचीन संस्कृत कहावत है। जिसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है। विज्ञान और अध्यात्म दोनों का केंद्र "सत्य की खोज" और वास्तविकता की आवश्यक प्रकृति को समझना है। इसे और विस्तारित कर कहा गया कि विज्ञान का लक्ष्य भौतिक ब्रह्मांड के सभी विविध रूपों में अंतर्निहित मूलभूत सिद्धांतों की पूरी समझ है। आध्यात्मिकता इस बारे में ज्ञान की जागृति है कि हम एक-दूसरे के साथ और दुनिया के साथ किस तरह से भावनात्मक रूप से संबंध रखते हैं। विज्ञान हमारे दिमाग को प्रबुद्ध करना चाहता है जबकि आध्यात्मिकता हमारे दिलों को जगाना चाहती है। अतः सत्य की खोज और वास्विकता की आवश्यक प्रकृति को समझने के लिए शोध के दौरान किए गए कुछ महत्वपूर्ण परिसंवादो व संवादो से अवगत होते हैं।

प्रश्न - पत्रकार बन्धु - दादागुरु की इस प्रकृति आधारित अभूतपूर्व अखण्ड निराहार महाव्रत साधना के विषय में विज्ञान क्या कहता है? क्या यह सम्भव है?

उत्तर - डॉ. आर. एस. शर्मा - पूर्व कुलपति मेडिकल यूनिवर्सिटी (शोध टीम अध्यक्ष)- देखिए वैज्ञानिक तौर पर यह कुछ दिनों तक ही संभव है पिछली हिस्ट्री 21 से 30 दिनों की है जिसमें व्यक्ति निराहार रहकर जीवित रहा किन्तु उसने कोई शारीरिक श्रम नहीं किया। दादागुरु जैसे 1300 दिनों तक जीवित रहना संभव नहीं है वो भी सिर्फ सीमित जल पर और कठिन परिश्रम के बावजूद। जैसा हमने दादागुरु को देखा है, वे सिर्फ 300-500 ml जल लेते हैं एवम 42%- 45° डिग्री तापमान की प्रतिकूल परिस्थितियों में उतार चढ़ाव वाले रास्तो पर 30-35 km प्रतिदिन चल रहे हैं। इतने कम पानी और बिना आहार के वे सम्भव नहीं है. ये मेकेनिज्म एक्सप्लेन नहीं हो रहा है कि वे एनर्जी कहाँ से लेते हैं व इनके जीवित रहने का आधार क्या है?

शोध अभी 1300 दिनों पर हो रहा है पर पता नहीं दादाजी कितने दिन और ऐसे ही रहने वाले हैं।

प्रश्न- पत्रकार बन्धु-- शोध का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

उत्तर - डॉ. आर.एस. शर्मा- वर्तमान समय में इतने लंबे समय (1300 दिन) तक भूखे रहने और कठोर शारिरिक गतिविधि के साथ जीवन के

बारे में वैज्ञानिक ज्ञान उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे कुछ उदाहरण हैं जहाँ एक जगह बैठकर निराहार रहकर और लिक्विड डाइट लेकर व्रत किए गए हैं किंतु उनकी अवधि कुछ दिनों की हैं।

बिना भोजन पानी के जरूरत से ज्यादा शारीरिक श्रम का यह पहला मामला है। यह अध्ययन शारीरिक, मानसिक मापदण्डों में परिवर्तन और लंबे समय तक सामान्य जीवन की संभावना को प्रमाणित करने के लिए किया जा रहा है।

प्रश्न- पत्रकार बन्धु-- क्या इसे विश्व चिकित्सा जगत का प्रथम शोध माना जा सकता है और यदि हाँ तो क्यों?

उत्तर - डॉ. आर.एस. शर्मा- यह शोध वर्ल्ड मेडिकल हिस्ट्री का प्रथम शोध है। चिकित्सा विज्ञान की राय में इतने लंबे समय तक निराहार, 18 घण्टे जागरण, कठोर उपवास, कठोर शारीरिक गतिविधि के प्रति

जीवनशैली की यह प्रतिक्रिया अद्वितीय है और विश्व चिकित्सा साहित्य में अब तक अप्रकाशित है।

प्रश्न- यूट्यूबर - इन दिनों जबलपुर सहित मप्र व देश के विभिन्न हिस्सों में दादागुरु के कठिन शारीरिक श्रम व रात्रि जागरण के साथ अखण्ड निराहार महाव्रत और उस पर शोध की चर्चा आम है इतने कौतूहलपूर्ण व विस्मयकारी विषय की जनसामान्य को प्रामाणिक जानकारी की आवश्यकता है। आप बताएं कितने दिन निराहार रहते हुए जीवित रहा जा सकता है इस सम्बंध में वैज्ञानिक तथ्य क्या है?

उत्तर- डॉ. आर.एस. शर्मा - यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति पूर्णतः निराहार रहना आरंभ करता है तो उसके शरीर में संचित एनर्जी कैलोरीज धीरे-धीरे उपयोग में आते हुए समाप्त हो जाती हैं। सर्वप्रथम रक्त में प्रवाहित हो रहा ग्लूकोज ईंधन के रूप में शरीर को कैलोरीज देता है फिर मानव शरीर में लीवर, मांसपेशियों में संचित ग्लाइकोजन के रूप में एकत्रित ग्लूकोज का उपयोग होता है (3-5 दिन के अंदर) फिर मांसपेशियों का ग्लाइकोजन समाप्त होता है।

यदि निराहारी प्रक्रिया जारी रहती है तो शरीर में एकत्रित वसा (फैट) पदार्थ टूट कर कैलोरीज देता है और फिर शरीर में उपलब्ध प्रोटीन (माँसपेशियों में) की बारी आती है इसके अतिरिक्त और भी छोटे-छोटे कुछ एनर्जी स्टोर्स भी उपयोग में लाए जाने के बाद खत्म हो जाते है। फिर एनर्जी हेतु कुछ भी चीज उपलब्ध न रहने के कारण एवं भोजन न लेने के कारण मानव शरीर के विभिन्न अंग शिथिल हो जाते है, और धीर-धीरे काम करना बंद कर देते हैं।और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

एक सामान्य व्यक्ति यदि पूर्णतः निराहार रहता है तो उसके शरीर में संचित कैलोरीज लगभग (85878) इतनी रहती है कि व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा 30 दिन तक जिंदा रह सकता है। (पर यदि वह पूर्ण विश्राम की अवस्था में रहे तो) यदि वह व्यक्ति निराहार रहते हुए 25 km प्रतिदिन भी चले ज्यादा से ज्यादा 15-20 दिन जिया रह सकता है। पर यदि जल भी ग्रहण न करें तो 3 दिन में से ज्यादा जिंदा नहीं रह सकता।

इस संबंध में कुछ और महत्वपूर्ण एवं उत्सुकता शांत करने वाली जानकारियां यह हैं कि पूर्ण विश्राम की स्थिति में मानव शरीर के सभी अंगों को सुचारू रूप से कार्य करने हेतु 2000 कैलोरीज की आवश्यकता प्रतिदिन होती है। यदि वह व्यक्ति शारीरिक रूप से सामान्य कार्यरत रहे तो ज्यादा कार्य करने पर 2900 कैलोरीज की आवश्यकता होती है।

एक मनोरंजक पर महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वह व्यक्ति यदि तेज चलता है तो 1km चलने में 15 कैलोरी प्रति km, प्रतिg (मानव शरीर का वजन) की आवश्यकता होती है। अतः 60kg के व्यक्ति को 60 कैलोरीज प्रति km की आवश्यकता है इस तरह 25km चलने में 25× 60=1500 कैलोरीज अतिरिक्त खर्च होगी। (अर्थात 2000+1500=3500 केलौरीज) प्रतिदिन इस तरह मानव शरीर के अंदर संचित केलौरीज (जो कि 85878 है) 30 दिन के अंदर समाप्त हो जाएगी। शरीर के अंग कार्य करना बंद कर देंगे। मानव मस्तिष्क, हृदय व रेटिना पर जल्दी प्रभाव पड़ता है तथा मानव की चेतनावस्था कम होकर मानव बेहोश हो जाता है हार्ट कमजोर होकर हार्ट अरेस्ट हो सकता है। यदि व्यक्ति तेज धूप में ऊंचे नीचे असमतल रास्तों (जैसे नर्मदा पथ) पर चल रहा है तो और भी जल्दी कैलोरीज खर्च हो जाएगी। कुछ ऐसी अपुष्ट जानकारी/समाचार मिले हैं कि कई

साधु संत पुरुष लंबे समय तक निराहर रहते हैं यह सर्वविदित तथ्य है। पर इस निराहार रहने की अवधि लगातार लगभग 9 से 15 दिन तक ही रहती है और शारीरिक श्रम भी नहीं रहता तथा मृत्यु की संभावना भी बनी रहती है। अनेक जैन मुनि अपने शरीर को छोड़ने हेतु संलेखना का उपयोग करते हैं जिससे वह अन्य जल छोड़कर शरीर त्याग देते हैं। साधु संत सूर्य ऊर्जा, प्रकृति, वायु ऊर्जा इत्यादि पर जीवित रहने की बात करते हैं पर वैज्ञानिक रूप से इन तत्वों का कोई पूर्ण विश्लेषण अभी तक नहीं हुआ है।

दादागुरु के महाव्रत की पुष्टि हम करते हैं तथा बिना आहार के प्रकृति पर केन्द्रित जीवन की संभावना पर ही यह शोध आधारित है।

प्रश्न -पत्रकार बन्धु - क्या सूर्य की किरणों, जल या वायु पर कोई जीवित रह सकता है?

उत्तर- डॉ. आर. एस. शर्मा - नहीं हमारी बॉडी की संरचना ऐसी नहीं है। जैसे पौधे सूर्य के प्रकाश में भोजन बनाते है। सूर्य से एनर्जी लेते हैं किंतु हम नहीं ले सकते। पानी जीवन के लिए आवश्यक है किंतु उसमें कोई एनर्जी नहीं होती ।पानी किसी तरह की कैलौरी भी नहीं देता। बस ब्लड के फ्लो को मेंटेन करता है। इसलिए वह जीवन के लिए आवश्यक है। हमारे शरीर में ऐसी कोई संरचना नहीं है जो वायु, सूर्य या पानी से एनर्जी ले सके। हरेक चौज में एनर्जी है परमाणु, अणु में भी एनर्जी है किंतु उनको ब्रेकडाउन करके एनर्जी प्राप्त करने की सुविधा मानव शरीर नहीं है।

शोध का प्रथम दिन-

संवाद-

डॉ.नवनीत सक्सेना (डीन सुभाष बन्द्र बोस मेडिकल कालेज)- दादाजी जब सुबह निकले तो हमने उनके सारे बेसलाइन टेस्ट करे। हमारे डॉ.उनके साथ होते हैं। और हर चार घण्टे में बीपी, शुगर, पल्स, ऑक्सीजन आदि टेस्ट करते हैं। पूरी यात्रा के दौरान उनका कोई पैरामीटर डिस्टर्ब नहीं हुआ जबकि उन्होंने हमारे सामने कुल 100 ml पानी लिया था। ये असम्भव है क्योंकि 4.2 डिग्री तापमान में 35k m चलने पर इतना पसीना आएगा इतना डिहाइडेशन होगा पर दादाजी को वह भी नहीं हुआ।बहुत अच्चम्भे की बात है। जबकि वे 42 माह से सिर्फ जल पर ही हैं। सारा मेडिकल साइंस अचंभित है। हम इस अचम्भे को ही प्रूफ करने की कोशिश कर रहे हैं। मेडिकल साइंस यह मान नहीं सकता कि कोई ऐसे जीवित रह सकता है। दादाजी कहते हैं कि वे प्रकृति से ऊर्जा लेते हैं। हो सकता लेते हों पर साइंस तो अभी तक यह प्रूफ नहीं कर पाया है। यात्रा पूर्ण होने के बाद हमने अभी फिर ब्लड सेम्पल लिया है दिन में चार बार पैरामीटर्स चेक किए जाएंगे।

सर्वाधिक उच्चतम तापमान (45 डिग्री) वाला शोध का छठवा

संवाद-

डॉ महेश पाटिल- दादाजी ने आज सुबह 8 बजे से यात्रा शुरू की है और सुबह केवल दो गिलास पानी का सेवन कर निकले हैं। उनके तो गिलास भी छोटे हैं उसके बाद आज हम लोगों ने 31km की यात्रा पूर्ण की है। आज टेम्प्रेचर 45° है फिर भी दादाजी ने चलते समय बीच बीच में दौड़ भी लगाई है। दिन में चार बार उनके टेस्ट किए गए अभी करेंट का उनका बॉडी टेम्प्रेचर 35 है, BP106/70 है. पल्स 86 है, आक्सीजन 98 है। उन्होंने अभी पानी नहीं पिया है,यूरिन भी पास आउट नहीं किया है। वे बिल्कुल नार्मल है स्टेबल है जो सामान्य व्यक्ति के लिए सम्भव ही नहीं है।

संवाद -

रघुवीर सिंह सरोते (सब इंस्पेक्टर)- आज 28 मार्च 2024 को छठवां दिन है तापमान सबसे ज्यादा 45° है। आज हम लोग 31km चले आज तो जैसे हम लोग पुलिस भर्ती में रनिंग करते थे दादाजी ऐसे ही दौड़ लगाते हुए चले। हम लोग सभी पसीने से भीग गए पर दादाजी को पसीना भी नहीं आया।वो थके भी नहीं हम तो रास्ते में ठंडा पानी, जूस, भोजन, फल, दूध, नहीं आदि सभी कुछ भरपूर लेकर चल रहे पर फिर भी परास्त हो गए। हमने अभी तक 10 से 15 लीटर पानी पी लिया होगा।पर दादाजी ने तो वही सुबह 2 गिलास जल लिया था। अभी उनको देखो वो रोज की तरह बिल्कुल तरोताजा है जबकि हम सब बेहाल बहुत आश्चर्य वाली बात है। चमत्कार ही लगता है ये तो नर्मदा मैया का।

शोध का अंतिम दिन-

संवाद-

डॉ. नवनीत सक्सेना- आज शोध पूर्ण हो गया है। दादाजी सात दिन पूर्व हमारे पास आए थे। वह लंबे समय से निराहार थे। हमने एडमिट करते समय भी सभी टेस्ट किए थे। फिर सातों दिन हमारे तीन चरणों के टेस्ट हमने किए। किसी भी पैरामीटर्स में कोई महत्वपूर्ण विचलन नहीं दिखा। हम आरम्भ से अंत तक अचंभित हो रहे। प्रत्येक दिन की सारी टेस्ट रिपोर्ट हमारे पास है अभी तो हमने डेटा लिया है अब उसको एनालाइज करके 10 से 15 दिनों में निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकेंगे। जो भी रिपोर्ट आएगी उसको भोपाल मेडिकल कौंसिल में प्रस्तुत करेंगे।

डॉ. आर. एस. शर्मा- ये हमारे लिए वाकई चुनौतीपूर्ण था इसलिए कि

इस तरह का शोध पहले हुआ ही नहीं है। यह विश्व का पहला शोध है। हमारे सामने भी चेलेंज था क्योंकि दादाजी कोई आहार तो ले नहीं रहे कोई एनर्जी तो उनको मिल नहीं रही। जल पर चलना नामुमकिन है। साथ ही बॉडी के प्रोटीन, फेट, कार्बोहाइड्रेट भी इतने दिनों में समाप्त हो जाते हैं, क्योंकि बॉडी में एनर्जी का लेबल फिक्स रहता है। दादाजी की बॉडी की पूरी कैलोरी तो कब की खत्म हो गयी। जबकि सामान्य व्यक्ति पूरी कैलोरी खत्म होने तक जीवित ही नहीं बचता। व्यक्ति 20 से 25 दिन से ज्यादा सरवाइव नहीं कर पाता यहाँ तो 1300 दिन हो चुके हैं। हम दादाजी के शरीर की एनर्जी का पता लगाने का प्रयास करेंगे।

चिकित्सकों के अनुसार- शोध के दौरान अचंभित करने वाले कुछ परिणाम और गतिविधि सामने आए है। एक दिन शुगर लेवल अपने न्यूनतम स्तर पर था पर दादाजी सक्रिय व स्वस्थ जबकि सामान्य व्यक्ति इतने कम शुगर में मूर्छित हो जाता है। फिर अपने आप कुछ घण्टों बाद दादाजी की शुगर सामान्य थी बिना कुछ ग्रहण किए। कुछ ऐसे परिणामों में विचलन देखा गया जो बिना दवा या भोजन के नार्मल नहीं हो सकते थे पर वे भी अपने आप नार्मल पाए गए। दिन भर कड़ी धूप और अत्यधिक तापमान में 35km चलने के बाद शाम को दादाजी बिल्कुल तरोताजा रहते बल्कि साथ चलने वालों की हालत खराब रहती। फिर वे परीक्षण, चर्चा आदि के बाद देर रात तक जागरण भी करते और सुबह सबसे पहले उठ भी जाते। यूरिन आउटपुट बहुत कम होने के बाद भी ph लेबल सामान्य तथा क्रीटेनाइन, यूरिया के उच्च स्तर पर भी किडनी स्वस्थ थी। कोई असामान्य लक्षण नहीं थे। बाद में ये पैरामीटर नार्मल पाए गए। दादाजी ने शोध के उपरांत चतुर्थ बार रक्तदान भी किया।

बेसलाइन टेस्ट दिन में चार बार दोहराए हैं। मोटे तौर पर हम बता सकते हैं कि हमने बायोकेमिकल, रेडियोलॉजिकल, यूरोलॉजिकल, न्यूरोलॉजिकल, कार्डियोवस्कुलर, हीमेटो लॉजिकल, पल्मोनरी, ब्रेनमेपिग, इत्यादि शरीर के सभी प्रकार की जांचों को विधिवत किया है। ब्रेनमेपिंग भी बार बार दोहराई है। आश्चर्य जनक रूप से थोड़े बहुत विचलन के अलावा कोई असामान्यता शरीर में नहीं मिली है, बल्कि हमने उन्हें हमेशा तरोताजा देखा है।

दूसरे दादागुरु के शरीर की स्टडी करने से एक बात और सामने आई है कि उनका शरीर सभी असामान्य विचलनों को त्वरित ठीक कर लेता है जो सामान्य रूप से सम्भव नहीं है।

दादागुरु कहते हैं कि नर्मदाजल की एक बूंद के हजारवें हिस्से में भी क्षति पूर्ति करने की क्षमता है। प्रकृति हर एक क्षति की पूर्ति बहुत निष्ठा से करती है। हम भी यही पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। हमने नर्मदा जल का भी परीक्षण किया है निश्चित जल्द ही हम किसी नतीजे पर पहुंचेगे।

संवाद-

डॉ. शैलेन्द्र सिंह राजपूत (जनरल मेडिसिन, जनरल फिजिशियन) बड़ेरिया मेट्रो प्राइम हॉस्पिटल जबलपुर- सन्त और तप को हम साइंस के बियाण्ड मानते हैं। मतलब हम उनको साइंस से प्रूफ नहीं कर सकते। सन्त को हम साइंस से बांध भी नहीं सकते ये साइंस से परे की चीज होते हैं हम उस पर चर्चा करके उसे खराब नहीं करना चाहते। पिछले 1300 दिनों से दादाजी सिर्फ जल पर ही जीवित है और बहुत बढ़िया तरीके से उनकी एनर्जी बरकरार है। ऐसा उनके तप के कारण ही संभव हुआ है। साइंटिफिक तरिके से देखें तो साइंस इसको प्रूफ नहीं करता। लेकिन तप जो है वह साइंस के बियोंड की चीज है मैं इस चीज को कभी नहीं नकारता कि जो साइंस प्रूफ नहीं करता वह होता नहीं है क्योंकि ऐसा बिल्कुल हो सकता है देखिए दादागुरु का तप यह सिद्ध भी कर रहा है।

मैं तो यही कहता हूं कि ईश्वर दादागुरु जी के प्रण को पूरा करने के लिए उन्हें शक्ति दे हम उनके प्रण के हमेशा साथ हैं और हम उनकी शुभेच्छा की हमेशा कामना करते हैं।

संवाद-

डॉ. वाय. आर. यादव (कंसल्टेंट न्यूरोसर्जन अपैक्स हॉस्पिटल एन्ड रिसर्च सेंटर, जबलपुर),

पूर्व प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष न्यूरो सर्जरी मेडिकल कॉलेज जबलपुर,

प्रसिडेंट न्यूरोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया

फाउंडर डायरेक्टर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल मेडिकल कालेज जबलपुर फेलो-न्यूकास्टल विश्विद्यालय इंग्लैंड

चेयरमेन न्यूरो एन्डोस्कोपी ट्रेनिंग, जबलपुर

प्रेसीडेन्ट न्यूरोएन्डोस्कोपी, सोसायटी ऑफ इंडिया-2018-19

चेयरमेन यंग न्यूरोसर्जन फोरम, न्यूरोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया 2017-20

चरक अवार्ड पुरस्कृत इंडियन मेडीकल एसोसियेशन

फाउंडर मेम्बर न्यूरोलॉजिकल सर्जन सोसायटी ऑफ इंडिया

पूर्व प्रेसीडेन्ट एम.पी. एसोसियेशन ऑफ न्यूरो सांइसेस -

- मैंने दादाजी का परीक्षण किया उन्हें एक तो मस्तिष्क से सम्बंधित

कोई परेशानी नहीं है। दूसरे वे पूर्णतः स्वस्थ हैं। उनका जीवन हम लोगों की समझ से परे हैं। इतने वर्षों तक सिर्फ जल पर जीवन सम्भव नहीं है ये बहुत आश्चर्य की बात है ,और उनका इतने वर्षों तक निराहार रहते हुए स्वस्थ रहना निश्चित तौर पर रिसर्च का विषय है। सामान्य हष्ट पुष्ट व्यक्ति भी तीन चार दिन निराहार रहने के बाद शारीरिक कमजोरी महसूस करने लगता है। जो शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया है किंतु दादागुरु का शरीर सामान्य शरीर की भांति तो कार्य नहीं कर रहा ये कुछ और है; जो विज्ञान से परे है। नर्मदा पर केंद्रित उनका यह जीवन आने वाले समय में प्रकृति के अनेकों रहस्य उजागर करने वाला है ऐसा हमें लगता है।

संवाद-

दादागुरु - मैं प्रकृति से ऊर्जा लेता हूँ ये पेड़, ये माटी, ये वायु, ये नर्मदाजल सब में असीम ऊर्जा है। दुनिया के लिए माँ नर्मदा का जल बहता पानी है, पर हमारे लिए यह जीवनशक्ति है। यह शक्ति का सबसे बड़ा स्त्रोत है, सबसे बड़ा केंद्र है, इसके जल की एक-एक बूंद में असीम ऊर्जा है। उसी जल के सेवन करने से हम इतने दिनों से आपके सामने स्वस्थ है। सक्रीय हैं। ये दुनिया की असाधारण शक्ति है जिसे हम नर्मदा कहते हैं। इसके तट की हवा भी सब रोगों की दवा है। आने वाले समय में माँ नर्मदा के रहस्यों को सुलझाने और उसकी जीवन्तता को सिद्ध करने के लिए धर्म आध्यात्म, ज्ञान, विज्ञान एक मंच पर बैठेंगे। जैसे गंगा, यमुना, सरस्वती जब एक स्थान पर प्रयाग में मिली तो वहीं आस्था का बहुत बड़ा सृजन शक्ति केंद्र बना इसी तरह धर्म आध्यात्म, ज्ञान, विज्ञान एक दिन एक ही बिंदु पर होगा और चरम सीमा पर होगा जो सदी को प्रकृति की और ले जाएगा इस माटी ,इस जल की और ले जाएगा। इन पेड़ पहाड़ों में छिपी जीवन्तता को बताएगा। शक्ति से अवगत करवाएगा।

देखिए प्रकृति भेद नहीं करती प्रकृति भाव प्रधान है। पर बुद्धि भेद करती है, प्रकृति की सामर्थ्यता जिसको आप पावर कह सकते हैं को सामने लाने में बुद्धि बाधक हो इसीलिए आने वाले समय में सबको एक बिंदु पर केंद्रित होना पड़ेगा।

आजआध्यात्म और विज्ञान नदी के दो तट जैसे हैं किंतु हमें यह समझना होगा कि जीवनधारा तटों के बीच बहती है ,तटों पर नहीं। अतः जीवन रहस्य को सुलझाने के लिए तटों को भी अलग रहते हुए एक सत्य को स्वीकारना होगा क्योंकि जीवनशक्ति दोनों को स्पर्श कर रही है।

अंततोगत्वा आप और हम सौभाग्यशाली हैं जो सदी की सबसे बड़ी गतिविधि के साक्षी हैं। प्रकृति केंद्रित जीवनशैली व्यवस्था और विकास के लिए व जीवन आधारों के संरक्षण - संवर्धन के लिए सदी का सबसे लंबा सबसे बड़ा अखण्ड महाव्रत करने वाले दादागुरु समाज की प्रकृति से सहज सन्धि करवाने के लिए भगीरथ प्रयास कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ उनके अखण्ड निराहार महाव्रत का उद्देश्य हमारी प्राचीन भारतीय सनातनी संस्कृति जो प्रकृति प्रधान थी की जड़ों को पोषित करना है।क्योंकि समस्त वैश्विक समस्याओं का समाधान भी यहीं हैं।

इसके साथ साथ माँ नर्मदा की महिमा और महत्व को वैश्विक स्तर पर स्थापित कर सम्पूर्ण विश्व को माँ नर्मदा के पथ पर लाने का दादागुरु का प्रण संकल्प भी है। यह शोध दादागुरु के इस शुभ संकल्प का आघार बनेगा। राज्य सरकार ने सत्य पर शोध करवा कर हमारी सनातनी संस्कृति की यह अप्रतिम व्यवस्था के सम्मान के शीर्ष शिखर को स्पर्श किया है। गई हमें अपने राज्य पर राष्ट्र पर, अपनी सनातनी संस्कृति पर, साथ ही साष्टांग प्रणाम नर्मदा के इस पुनीत पथ को जिसने इस युग में महायोगी अवधूत दादागुरु का साक्षात्कार हमसे करवाया। जिन्होंने हमें जीवन जीने की कला सिखाई तथा हमारा स्वयं से परिचय करवाया।

विशिष्ट नोट - दादागुरु के अखण्ड निराहार महाव्रत को अब 6 वर्ष हो चुके हैं। शोध 1300 दिनों पर हुआ था। साथ ही गर्व का विषय है कि अमेरिका की टेक्सास यूनिवर्सिटी का मेडिकल विभाग भी दादाजी पर शोध करना चाह रहा है जिसके लिए केंद्र सरकार के पास पत्र आ चुका है।

SUMMARY & CONCLUSIONS

1. In our opinion, Dada Guruji's response to strict fasting and strenuous physical activity is unique and heither to unreported in world medical literature.

2. His physical, mental check up, biochemical parameters were mos-tly in normal range

3. Dada Guru did not consume any food subst-ance that could give energy or nutrition.

A comprehensive study was conducted on various body and mind parameters during prolonged fasting and strenuous physical activity by Swami Dada Guruji.

The study was conducted under auspices of Govt. of MP and NSCB Medical college Jabalpur (MP) from 22.05.24 to 29.5.24. Physical, mental, biochemical & investigative parameters were observed during the study. Dada Guruji was confined to a room in NSCB Medical college under CCTV and police surveillance

all the observations were made daily in morning and in evening at end of 25-30 km of Narmada Parikrama.Following conclusions were drawn at the completion of study.

1. Shri Swami Dada Guru did not consume any food substance that could give energy or nutrition during the period of study. He took 300 -1000 ml of "Narmada river water".

2. Result showed that despite continuous fast and strenuous physical activity daily (25-30 km walking under sun 40-45 degree temperature) Dada Guru was physically and mentally agile and fit and had no symptoms or compl-aints.

3. His physical, mental check up, biochemical Parameters were mostly in normal range except few fluctuating marginal aberrations in bl. sugar creatinine, uric acid, blood urea, Iron, ferritin. These are expected in a 7 day fast.

4. In our opinion Dada Guruji's response to strict fasting and strenuous physical activity is unique and heitherto unreported in world medical literature. Probable mechanisms, our hypotheses and applied importance of this study is discussed.

A. Based on existing evidence from various animal & human studies we suggest that this unique response of Dada Guru is due to "metabolic adaptation" and markedly increased "Endurance power" for fasting and adverse conditions. Metabolic adaptation includes hypometabolic stage, allows to minimize use of reserve carbon energy sources and to accumulate high levels of ketone bodies.

Brain utilizes ketones by ketolysis to from acetyl COA, glycerol also acts as carbon source. Alternative metabolic programme was evolved billion of years ago when food and energy sources were not available. Penguins also use fatty acids and ketones to tide over even 5 months of food deprivation. Fasting also physiologically like increase insulin sensitivity peripheral glucose utilisation cellular stress resistance. Decrease in resting BP and heart rate, increased parasympathetic tone Metabolic adaptation also includes better cellular bioenergetics, decreased accumulation of oxidized damaged molecules, decreased inflammation. Fasting also. Improves hypertension, neuro protection and metabolic syndrome. Adaptive response of brain to reduced food availability is through BDNF Brain derived neurotrophic hormone.

B. Endurance power is increased by Positivity of mind, spirituality, repeated practice and closeness to nature. Strict fasting and walking 25-30 km Per day under scorching sun with temperature 42-45 degree needs lot of endurance. Adversity was compounded by the fact that during this walk Dada Guru was not taking any nutrition not even water. He used to take water (narmada water) only after returning to medical college hospital. Positivity acts through hypothalamns, limbus part of brain.

C. Besides extreme positivity of mind Dada Guru himself believes and told us (investigators)

DADA GURU'S VERSION ABOUT THE ABOVE SCIENTIFIC FACTS

"I derive energy from nature"

I derive energy from trees, flowing river narmada, from small pebbles & stones, and earth that come in my contract while walking on narmada path. I derive energy from the fresh air which I breath while walking along side the river narmada. I do not take food, I do not take water also while walking under scorching heat along side narmada, I do not feel heat wave at all, I feel nature wave. I feel the sun energy giving me energy and I have no discomfort at all. In the evening when after completion of the day's narmada Parikrma I take 300-500 ml Narmada river water, I feel that each drop with multiples of molecules and atoms provide me with unlimited energy.

My doctor & investigator asked me that why you only get this much energy from nature when so many persons walking on narmada path and taking narmada water do not get this energy I replied to him that one has to be completely Nishkaam (self less) and pure of heart to get this energy from nature.

I want that we should protect and respect nature, we should come in regular prolonged contact with nature. In my experience I have found that this Narmada Path and mountains surrounding it are the greatest source of energy in this world. We just have to procure it. Nature heals and repairs the damages to body very fast and abolishes the dependence on intake of food as source of energy.

Above is the verbatim version of Dada Guruji's concept of source of his energy and about the wonderful treasures of nature.

We as scientists and doctors have tried to scientifically observe and collect data meticulously, analyse these to confirm & explain the amazing facts about Dada Guru's power of great physical, mental metabolic adaptation to prolonged fasting and his power of endurance. We have tried to synthesise and assimilate the scientific and spiritual knowledge for the benefit of mankind.

महायोगी दादागुरु भगवान की कल्पनातीत अखण्ड माँ नर्मदा परिक्रमा का चतुर्थ चरण पूर्ण

देश,दुनिया, ज्ञान,विज्ञान ,धर्म और आध्यात्म के लिए निराहार, निर्जला परिक्रमा बनी एक गूढ़ रहस्य

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

महाव्रतधारी अवधूत महायोगी श्री दादागुरु भगवान की नर्मदा सेवा पैदल परिक्रमा के अविश्वसनीय चार चरण 10 मार्च 2026 को पूर्ण हो चुके हैं। पाँचवा चरण कार्तिक पूर्णिमा 23 नवम्बर 2026 से पुनः प्रारम्भ होगा।

विगत 2000 दिनों से अखण्ड निराहार महाव्रत में चल रहे श्री दादागुरु भगवान की माँ नर्मदा परिक्रमाओं के चार चरणों में दादागुरु ने प्रथम चरण जल पर तथा तीन चरण वायु पर निर्भर रहकर पूर्ण किए हैं। ये परिक्रमाएं आज सम्पूर्ण भारत के मानसपटल पर रहस्य, चुनौती एवं दुनिया में चर्चा का विषय बन चुकी है।

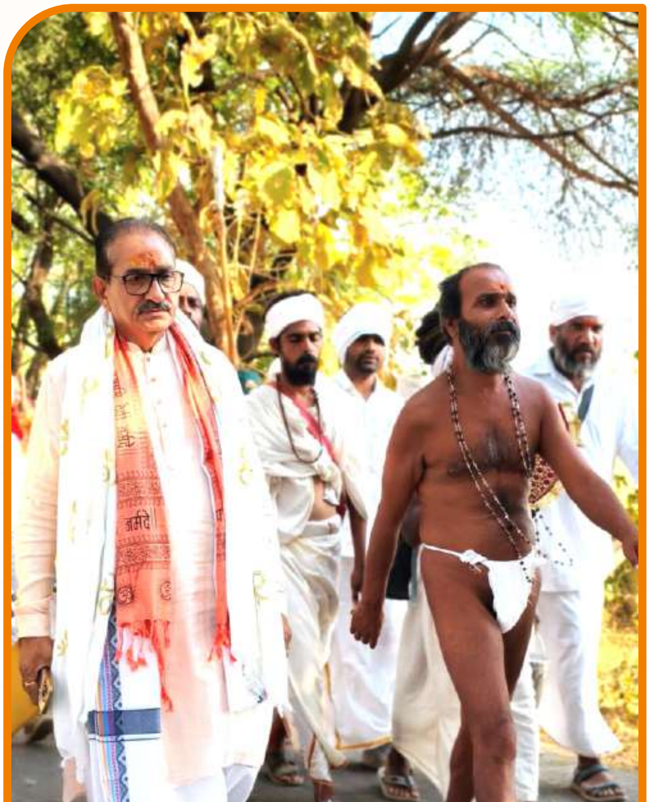

श्री दादागुरू भगवान संग
माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के अनुज
श्री पंकज मोदी जी

ज्ञातव्य है कि विगत 2000 दिनों अर्थात लगभग 6 वर्षों से दादागुरु का अखण्ड निराहार महाव्रत चल रहा है, जो सिर्फ और सिर्फ माँ नर्मदा के जल पर आश्रित है किंतु दादागुरु जल भी छोड़कर वायु पर निर्भर रहकर माँ नर्मदा की 3400 किमी की पैदल परिक्रमा करते हैं जिसमें वे अपने हज़ारों परिक्रमा वासियों के साथ 30 किमी से 40 किमी तक प्रीतिदिन माँ के पथ पर चलते हैं।

स्वाभाविक रूप से यह सम्भव ही नहीं है और दादागुरु की इसी रहस्यमयी जीवनशैली पर राज्य सरकार ने मई माह के अधिकतम तापमान वाले समय (42° से 45°) में 22 मई 2024 से 29 मई 2024 तक 7 दिवसीय शोध भी करवाया है।

किंतु दुष्कर व कठिनतम दिखाई देती दादागुरु की यह साधना सहज रूप से निरंतर चल रही है।

दादागुरु की हज़ारों परिक्रमा वासियों के साथ की जाने वाली परिक्रमा श्री गौरीशंकर महाराज की विश्वविख्यात माँ नर्मदा परिक्रमा का पुनर्जीवित स्वरूप है। श्री गौरीशंकर महाराज की जमात में हज़ारों सिद्ध, साधकों के साथ हाथी, घोड़े ऊंट,गाड़ी,निशान,सभी कुछ चलता था। ज्यादा से ज्यादा लोगों को माँ नर्मदा परिक्रमा का सुखद अनुभव करवाना गौरीशंकर महाराज का उद्देश्य था। दादागुरु भी इसी आनंद,अपनेपन से जमात को परिक्रमा करवा रहे है। दादागुरु कहते हैं की माई के पथ की यही सबसे बड़ी सेवा है। दादागुरु कहते हैं कि माँ नर्मदा तो जीवंत सत्य है साधक सिर्फ पथ पर आ जाए माँ उसे सम्पूर्ण सुरक्षा, व्यवस्था देती है। दादागुरु के सानिध्य में बड़े ही हर्षोल्लास,आनन्द के साथ किसी भी प्रकार की व्यवस्था की चिंता किए बगैर परिक्रमा वासी चलते हैं। भारत के अनेकों प्रांतों के लोग प्रतिवर्ष इस परिक्रमा में शामिल होते हैं।

परिक्रमा वासियों को दादागुरु के सानिध्य में जो दिव्य अनुभूतियाँ होती हैं वे उन्हें बार बार दादाजी के सानिध्य में पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं।

परिक्रमा में 15 वर्ष की आयु से लेकर 90 वर्ष तक की आयु वाले साधक हर वर्ष होते हैं। जिनकी चिकित्सा सहित सभी मूलभूत आवश्कताएँ जैसे भोजन,पानी,ओढ़ने बिछाने के कपड़े, रुकने का स्थान, पूजन सामग्री, वस्त्र,बैग, जूते चप्पल ,निशुल्क प्रदान की जाती हैं। यहाँ तक कि परिक्रमा वासियों को अपना सामान भी लेकर नहीं चलना पड़ता उसके लिए नर्मदा मिशन वाहनों की व्यवस्था करता है। सम्पूर्ण पथ पर दादागुरु परिवार परिक्रमा वासियों की हृदय से सेवा

और स्वागत करता है।

दादागुरु कहते हैं कि सदाव्रत भी एक बड़ी सेवा है और सेवा ही साधना है। यदि तुम किसी भी प्रकार की सेवा कर रहे हो तो निश्चित मानना तुम साधना कर रहे हो और यही तुम्हारा आराध्य तुमसे चाहता भी है। नित सेवा करो सेवा तुम्हारे भाग्य का द्वार खोलेगी।

दादागुरु प्रतिदिन सुबह और शाम आरती पूजन के बाद पड़ाव पर परिक्रमा वासियों और गाँव नगर से संवाद करते हैं ।माँ नर्मदा की महिमा ,महत्व के साथ साथ- साथ पथ के प्रत्यक्ष ,अप्रत्यक्ष दिव्य तीर्थो के गूढ़ रहस्य ,अज्ञेय जानकारियाँ दादाजी के सत्संग में रोज मिलती हैं जिससे साधक का पथ पर चलना सार्थक होता है।

बड़ी मात्रा में युवा शक्ति दादागुरु के विचारों को आत्मसात कर विकार रहित उन्नत जीवन में प्रवेश कर रही है।

दादागुरु चाहते हैं कि हमारी पीढ़ियों का वह जीवन बने जो हमारे मूल आधार शक्तियों से जुड़कर उनका सम्मान करें , व्यसनों से दूर होकर सनातनी संस्कारो से निहित होकर सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करे और अपने जीवन में उच्च आदर्श स्थापित करे। भारत के युवा ही भारत की असल शक्ति है। इसलिए इनका निर्माण याने भारत का निर्माण।

इसीलिए साधना में रहते हुए दादागुरु जनजागरण भी अनवरत कर रहे हैं आज माँ नर्मदा के पथ पर जो दृश्य दृष्टिगोचर हैं तथा परिक्रमा का जो स्वरूप हमें दिखाई दे रहा है उसके पीछे दादागुरु का 30 साल का अथक श्रम है।

दादागुरु जिस साधना में चल रहे हैं वह साधना ब्रह्म में स्थित है जहाँ जीवन की आधारभूत चित्तवृत्तियां शून्य हो जाती है और ब्रह्मांड की उच्चरित शक्तियों से,ऊर्जाओं से एकाकार हो जाती है। परब्रम्ह के साथ एकाकार होते हुए भी दादागुरु जीव जगत के अस्तित्व को बचाने का सबसे बड़ा आधार बने हुए हैं।

दादागुरु महाव्रत में रहते हुई पैदल परिक्रमा कर रहे हैं ताकि उनका ये सन्देश पूरे विश्व तक पहुंचे कि माँ नर्मदा बहता हुआ पानी नहीं है चलती हुई भवानी है ,शक्ति है,भगवती है।

विशिष्ट आलेख

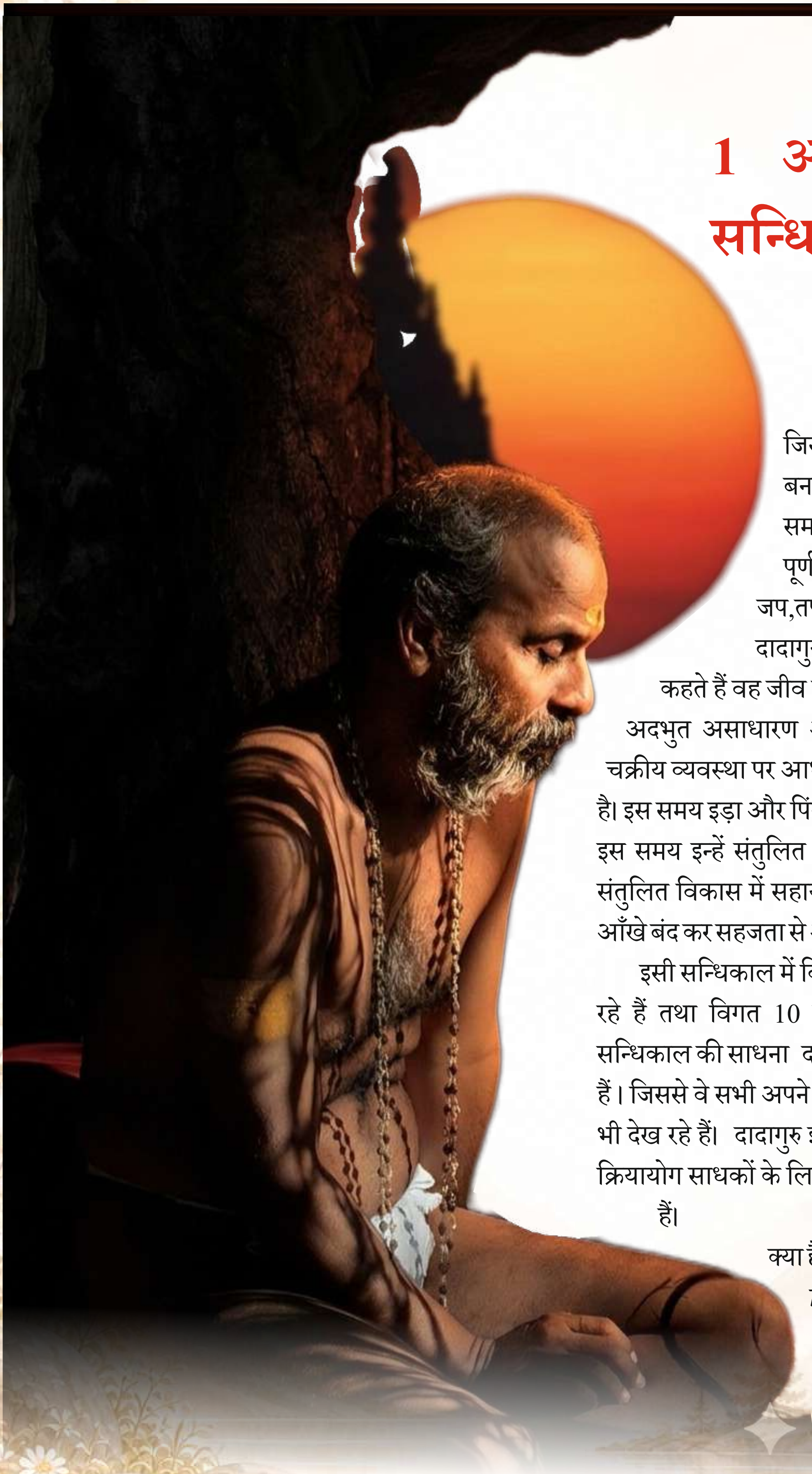

1 अभिजीत अपराजित सन्धिकाल का गूढ़ रहस्य

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

अपराजित सन्धिकाल अर्थात वह समय जिसमें की गयी साधना आपको अपराजित बना देती है ,श्रेष्ठ बना देती है । साथ ही उस समय की गयी कोई भी कामना,इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होती है। यही वह काल है जिसमें किए गए जप,तप, साधना अक्षय होती है।

दादागुरु जिसे अभिजीत अपराजित सन्धिकाल कहते हैं वह जीव जगत प्रकृति व ब्रह्मांड में घटित होने वाली अदभुत असाधारण औऱ रहस्यमयी घटना है जो ब्रह्मांडीय चक्रीय व्यवस्था पर आधारित है तथा दिन में पांच बार घटित होती है। इस समय इड़ा और पिंगला में तेजी से संतुलन बदलता है इसलिए इस समय इन्हें संतुलित करना बहुत आसान है। यह समय हमारे संतुलित विकास में सहायक होता है. इस समय आधे घंटे के लिए आँखे बंद कर सहजता से अपने आरध्य के समक्ष बैठना चाहिए।

इसी सन्धिकाल में विगत 20 वर्षों से दादागुरु ध्यान साधना कर रहे हैं तथा विगत 10 वर्षों से समर्थ सद्गुरु परिवार के साधक सन्धिकाल की साधना दादागुरु द्वारा प्रदत्त बीजमन्त्र के साथ कर रहे हैं । जिससे वे सभी अपने अपने जीवन में इसका सकारात्मक प्रभाव भी देख रहे हैं। दादागुरु इस काल को सिद्ध योगियों का काल और क्रियायोग साधकों के लिए साधना उपासना का विशेष काल बताते हैं।

क्या है संधिकाल का रहस्य कहा गया है कि-

क्षिति,जल,पावक गगन समीरा
पंच तत्व अधि अधिर सरीरा

इन पांचों तत्वों का हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध है और इनका प्रभाव हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया पर तथा हमारे स्वभाव

इस प्रकार है

1. ब्रह्म काल समय 3.40 से 4.10 बजे तक

ब्रह्मकाल में वायुतत्व प्रधान होता है जो मानसिक शक्ति को पोषित करता है इसलिए ताजगी महसूस होती है और मन पूर्णतः एकाग्र होता है। वायु का एक विशिष्ट गुण स्पर्श होता है। एकाग्र मन इस समय परमतत्व का स्पर्श कर सकता है।

2. सूर्योदय काल से 15 मिनिट पहले से 15 मिनिट बाद तक

सूर्योदयकाल में पृथ्वीतत्व प्रधान होता है और पृथ्वी का गुण धैर्य है इसलिए व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में अर्थात यदि घर में कुछ अशुभ भी हो जाता है तब भी व्यक्ति इस समय शांत व गंभीर रहता है चूंकि पृथ्वी तत्व सहनशीलता का घोतक भी है।

यही वह समय है ज़ब अश्विनी नक्षत्र होता है। आप हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करिये आपकी हिलिंग भी हो जायेगी। च्यवन ऋषि की वृद्ध काया को अश्विनी कुमार ने ही युवा किया था।

3. दोपहर 11:40 से 12:10 तक

इस समय अग्नि तत्व प्रधान होता है अग्नि का विशिष्ट गुण ताप है किन्तु यह विचारशक्ति को सहज भी बनाता है जिसमें जीवन में कार्यक्षेत्र में तेजी आती है।

4. सुर्यास्त काल से 15 मिनिट पहले से 15 मिनिट बाद तक

यह गौधुली बेला का समय है जिसमें जलतत्व प्रधान होता है जल का गुण है शीतलता इसलिए हमारा मन इस समय शीतल सौम्य औऱ शिथिल रहता है।

5. मध्य रात्रि 11:40 बजे से 12: 10 बजे तक

इस समय आकाश तत्व की प्रधानता होने से जीव मुक्तावस्था में चला जाता है अर्थात हमारा स्थूल शरीर , मन, बुद्धि मुक्त अवस्था या विश्राम अवस्था में होते हैं औऱ हमारा अवचेतन मन सक्रिय होता है। यह तत्व शरीर में सन्तुलन बनाता है।

दादागुरु भगवान कहते हैं कि इन पांचों सन्धिकाल में से यदि साधक या व्यक्ति दो या तीन सन्धिकाल में ही बैठकर अपने इष्ट का जप,तप ध्यान साधना आदि करता है तो उसके जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन होता है। किन्तु इसे नित्य बैठकर ही अनुभव किया जा सकता है।

(दादागुरु के मुख से निकले निर्विकार भाव विचार सन्धिकाल का रहस्य आप सब तक पहुंचाने का प्रयास)

विशिष्ट आलेख

2 माँ नर्मदा परिक्रमा रहस्य

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

प्रदक्षिणा अर्थात परिक्रमा एक ओर तो हमारी साधना उपासना का एक विशिष्ट अंग है, दूसरे परिक्रमा सृष्टि का भी अभिन्न अंग है। जीवन और जीव का ,धरा और गगन का सम्बंध परिक्रमा से है। सौर मंडल का वैभव भी परिक्रमा से ही है ।अनादिकाल से ये परिक्रमाएं सूक्ष्म से सूक्ष्म और विराट से विराट रूपों में चली आ रही हैं। सम्पूर्ण जीव जगत चक्रों पर आधारित है। अतः यदि ये चक्र न हों तो सृष्टि का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। समस्त अणु, परमाणु, नक्षत्र,ग्रह,तारे इत्यादि परिक्रमा कर रहे हैं।

जड़ हो या चेतन प्रत्येक पदार्थ के अणु-अणु में परिक्रमाएं चल रही हैं। ब्रम्हांड में किसी की भी चाल सीधी नहीं है। सभी गोल घूम रहे है । अर्थात ब्रम्हांड की समस्त दैवीय,चुंबकीय, भौतिकीय, ईश्वरीय ऊर्जा का संचार परिक्रमा में ही निहित है। अतः निश्चित रूप में परिक्रमा एक अबूझ रहस्य है।

इतना तो समझ आता है कि ईश्वर के चित्त की चेतना है परिक्रमा,जो तत्व और ब्रह्म का बोध कराती है। परिक्रमा जीवन का सत्य है और इसका बहुत विस्तृत वैज्ञानिक महत्व भी है।

सनातनी संस्कृति में परिक्रमा किसी देव स्थान या पूजन स्थान के चारों और उसके बायीं तरफ घूमना है जो षोडशोपचार पूजा का एक अंग है।

"प्रगतम दक्षिणामिति प्रदक्षिणम" के अनुसार अपने दक्षिण भाग की और गति करना प्रदक्षिणा कहलाता है, जो अनुष्ठान की समाप्ति का सूचक भी है।

हम हमेशा मंदिरों में आरती के पश्चात परिक्रमा करने के पश्चात प्रसाद ग्रहण करते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि

"यानी कानि च पापानि, जन्मांतर कृताति च
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे "

अर्थात जीवन में किए गए सभी पाप व जन्मान्तरों के सभी पाप परिक्रमा करते हुए व्यक्ति के पग पग पर विनिष्ट होते हैं।अतः पापों की निवृत्ति भी परिक्रमा का उद्देश्य है।

दुनिया के सभी धर्मों में परिक्रमा का प्रचलन हिंदु धर्म की ही देन है। हिंदु धर्म में की जाने वाली परिक्रमाएं मुख्यतः गोवर्धन परिक्रमा, चोरासी कोस परिक्रमा, प्रयाग पंचकोशी परिक्रमा, छोटा चार धाम परिक्रमा, राजिम परिक्रमा, तिरुमलै और जगन्नाथ परिक्रमा, भरत खण्ड परिक्रमा और नर्मदा परिक्रमा है।

इन सभी परिक्रमाओं में माँ नर्मदा की परिक्रमा सबसे बड़ी परिक्रमा है ,जो विविध प्रकार से की जाती है।

पुराणों और शास्त्रों के आधार पर नियमानुसार यह यात्रा तीन साल,तीन माह और तेरह दिन की होती है ।इसके अलावा एक सौ आठ दिनों में भी परिक्रमा पूर्ण करने का विधान है।वर्तमान समय में लोग सुविधानुसार अलग अलग अवधि में पैदल या वाहन द्वारा इसे पूर्ण करते हैं।

स्कंद पुराण में कहा गया है कि नारायण के

सभी अवतारों नें नर्मदा के तट पर तप ,साधना व आराधना की है।संसार में एक मात्र नदी माँ नर्मदा है जिसकी परिक्रमा सिद्ध, नाग, यक्ष, गन्धर्व,और मानव आदि अनादि काल से करते चले आ रहे है। यह क्रम अनवरत जारी है।

वर्तमान में भी लाखों लोग माँ नर्मदा की परिक्रमा विविध रूप में जैसे मुण्डमाल परिक्रमा, जिलहरी परिक्रमा, खण्ड परिक्रमा, पंचकोशी परिक्रमा, मार्कण्डेय परिक्रमा, हनुमन्त परिक्रमा, दंडवत परिक्रमा और वायु परिक्रमा प्रतिवर्ष कर रहे हैं।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्कंद पुराण के अंतर्गत अवन्तिका खण्ड और रेवा खण्ड जो "नर्मदा पुराण" माना जाता है में वर्णित है कि कार्तिकेय जी ने माँ नर्मदा की विधिवत परिक्रमा की। तदुपरांत ऋषि मार्कण्डेय जी का नर्मदा परिभ्रमण प्रसिद्ध है।चिरायु ऋषि मार्कण्डेय ने 21 प्रलयकाल देखे जिसमें माँ नर्मदा को अमर तथा खुद को सुरक्षित पाया।

आगे के संदर्भ बताते हैं कि स्वामी कमल भारती जी ने अपनी जमात के साथ माँ नर्मदा की तीन परिक्रमाएं की ततपश्चात उनके शिष्य महायोगी श्री गौरीशंकर महाराज ने अपनी विशाल जमात जिसमें ऋषि मुनियों के साथ हाथी,घोड़े,गौवंश इत्यादि सभी थे , के साथ जीवन पर्यंत शिवदर्शन की मान्यता के साथ माँ नर्मदा की परिक्रमा की।

मां नर्मदा जीवंत चैतन्य शक्ति है आद्यशक्ति है जिनके अमृततुल्य जल में प्राणशक्ति का संचार है। इसे इस कलिकाल में चरितार्थ और सिद्ध किया है रेवा पथ के महायोगी अवधूत दादागुरु ने, जिनके स्वरूप में माँ नर्मदा स्वयं एकाकार हैं। जो पिछले 1900 माह यानी 6 वर्षों से माँ नर्मदा को वैश्विक पहचान दिलवाने व प्रकृति पर्यावरण के संरक्षण सम्वर्धन के संकल्प लक्ष्य के साथ अखण्ड निराहार महाव्रत में हैं और केवल माँ नर्मदा का जल तथा वायु ग्रहण कर अनवरत चल रहे है।

दादागुरु निराहार रहकर माँ नर्मदा की 3200 किमी की पैदल परिक्रमा के चार चरण पूर्ण कर चुके है यह परिक्रमाएं उन्होंने सिर्फ वायु ग्रहण कर की हैं।

अब तक की गई नर्मदा परिक्रमाओं में यह प्रथम ऐसी परिक्रमा है जो स्वयं के लिए नहीं वरन जीव जगत के कल्याण के लिए है।

दादागुरु भगवान संग अखण्ड निराहार
माँ नर्मदा सेवा परिक्रमा का
चतुर्थ चरण पूर्ण कर चुका स्वान सिद्धू ।

विशिष्ट आलेख

माँ नर्मदा की ही परिक्रमा क्यों
माँ नर्मदा परिक्रमा के संदर्भ में दादागुरु का दिव्य सन्देश

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

दादागुरु भगवान कहते हैं कि माँ नर्मदा केवल एक नदी नहीं है एक शक्ति है, एक संस्कृति है। हमनें उसे जीवनदायिनी माँ और जीवन रेखा के रूप में देखा है और पूजा है।

अमृतमयी, अद्बितिया, शिवतनया, अनन्ददायनी, पुण्यतोया, वेदगर्भा, रत्नगर्भा, चिरकुमारी माँ रेवा की परिक्रमा जीवन की सर्वसम्पूर्णता है।

माँ नर्मदा ही सत्य है और कलयुग की संजीवनी है। नर्मदा दुनिया की असाधारण नदी के रूप में एक शक्ति है।, माँ नर्मदा का दर्शन जीव का कल्याण करता है ,सुख और आनंद देता है , तथा जीवन की हरेक दशा का सुधार करता है। ये साक्षात भगवती है ,जिसका प्रलय औऱ महाप्रलय में भी अंत नहीं है। जगतकल्याणी, जगतजननी माँ नर्मदा तीर्थों की जननी है। माँ नर्मदा के दर्शन की ही महिमा है। यही वह आद्य महाशक्ति है जो गुरु गोविंद को प्रकट करती है। यही वह शक्ति है जो प्रलय औऱ महाप्रलय के बाद अपने गर्भ में धारण किए हुए जीव जगत, ब्रम्हांड को प्रकट करती है अर्थात ये ही वो क्रियाशक्ति है जो चक्रों का निर्माण करती है और जीव को उस चक्र में व्यवस्थित करती है।

जिस प्रकार कुम्हार चाक को घुमाकर पात्र का निर्माण करता है ठीक उसी प्रकार मां नर्मदा चक्रों को गति प्रदान करती है और जीव जगत ,ब्रह्मांड को प्रकट करती है तथा जीव को उसमें स्थापित करती है। ये चक्रों की अधिष्ठात्री शक्ति है यही चक्रों का समन्वय और सन्तुलन बनाती है जिस पर जीव जगत ब्रम्हांड स्थित है। यह चक्रों को जाग्रत भी करती है। यह जीवन की व्यवस्था ,सुरक्षा और हरेक दशा में सुधार करती है। माँ नर्मदा हमें आत्मनिर्भर बनाने वाली प्रत्यक्ष शक्ति है। यही हमारी मूल आधार शक्ति है। खेतों की हरियाली और गांव नगर की खुशहाली माँ नर्मदा है। ऐसी कोई व्यवस्था और पात्र नहीं है जो जीवन को रख ले जीवन को सुरक्षित माँ नर्मदा ही रख सकती है। जन्म देने वाली से पालने वाली का ओहदा बड़ा होता है तो हमारी जननी अलग अलग हैं पर पालने वाली माँ नर्मदा है।

यही हमारी यशोदा है जो प्रत्यक्ष,जीवंत,चैतन्य, सर्वमान्य व सर्वव्यापी शक्ति है। माँ नर्मदा एकमात्र शक्ति है जो शिव से प्रकट होकर अनवरत शिवलिंगों को अपने गर्भ से प्रकट कर रही है।यही वह शक्ति है जो शंकर को अपने तट पर आसन प्रदान करती है। इन्हीं सब कारणों से माँ नर्मदा परिक्रमा का बहुत महत्व है। परिक्रमा तो हमारी परम्परा है पर जगत विख्यात है नर्मदा मैया की परिक्रमा। नर्मदा परिक्रमा एक जागरण है, एक साधना है। नर्मदा परिक्रमा जीवन जीने का सहज योग है। ब्रह्मांड का यही एकमात्र पथ है जिस पर चलते चलते साधना हो जाती है और जाने अनजाने बैठ गए तो उपासना हो जाती है

ये वो असाधारण पथ है जहाँ चलने से देवत्व प्रकट होता है और व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व के निर्माण के लिए तुम्हें कोई साधना नहीं करना।देवत्व प्रकट करने के लिए तुम्हें कोई साधना नहीं करना तुम तो चलो मात्र नर्मदा के पथ पर। ये वो क्रियाशक्ति है जिसे हम नदी के रूप में, जल के रूप में देख रहे जहाँ चलने मात्र से चक्रो का समन्वय और संतुलन हो जाता है।

आज हम घर परिवार, जीव जगत में विघ्न बाधाओं और आपदाओं का दौर देख रहे हैं। ये विघ्न बाधाएं इस बात का सबूत हैं कि जीव जगत के चक्रो का समन्वयन और संतुलन बिगड़ चुका है और इन्हें संतुलित करने का एकमात्र उपाय है चलो नर्मदा के पथ। नर्मदा का पथ असाधारण पथ है यहाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्वरूप में लाखों, करोड़ों सिद्ध साधनारत है। जो इस पथ पर चलता है उसे आलौकिक अनुभव तो होते ही हैं साथ ही उसकी विध्न बाधाओं का अंत भी हो जाता है।
यह पथ जीवन जीने की कला का केंद्र है। यही वह पथ है जो जीवन के सूक्ष्म रहस्यों से अवगत कराता है और अंतर की यात्रा करवाता है।

इसकी जीवंतता को तथा इस सत्य को पथ पर चलकर ही जाना जाता है। इस पथ पर चार कदम चलने से चार धाम का फल सहज ही मिल जाता है परिक्रमा पथ पर सहस्त्रों सहस्त्रों तीर्थो का स्पर्श व दर्शन हो जाता है। नर्मदा माँ की परिक्रमा एक सहज योग है। यदि खुद से मिलना हो या परमात्मा का,ईश्वर का साक्षात्कार करना हो या माँ नर्मदा की जीवंतता को महसूस करना हो ,देखना हो तो नर्मदा परिक्रमा ही एकमात्र उपाय है। यह परिक्रमा जीवन को दिशा देती है व जीना सिखाती है। ये जीव को मूल आधार शक्ति से जोड़ती है। ये युग निर्माण का पथ भी है। इस पथ पर चलने मात्र से जीवन में आमूल परिवर्तन देखने को मिलता है। इस पथ पर चलते चलते मनुष्य रोग मुक्त व भय मुक्त हो जाता है। इसी पथ पर हस्तियां भी बनती है और यहीं अस्थियाँ भी मिलती है। गुरु आज्ञा से चलकर आओ तो हस्ती बनोगे वरना जलकर तो अस्थि के रूप में मिलना तो तय ही है।

आज दुनिया ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के पहले कण की खोज कर रही है। विज्ञान और दुनिया यह भी खोज रहे हैं कि ये जीव जगत ब्रह्माण्ड प्रकट हुआ होगा तो फिर चक्रो को किसने बनाया होगा और जीव को उन चक्रो में किसने रखा होगा और इन चक्रो को गति प्रदान करने वाली कौन सी क्रियाशक्ति है? किन्तु सनातन धर्म में ये खोज पूर्ण है और ये प्रमाण है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वो पहला कण जहाँ प्रकट हुआ और जहाँ जीवन प्रारम्भ हुआ वो माँ नर्मदा का पथ है।

भूमंडल कि सबसे प्राचीन जीवशक्ति यही है जिसे हम माँ नर्मदा कहते हैं। निष्कर्षत: महाशक्ति,आदिशक्ति, क्रियाशक्ति माँ नर्मदा की परिक्रमा जीवन का वह दर्शन है जो जीवन की सार्थकता को सिद्ध करता है रहस्य, रोमांच,खतरों, अलौकिक, आध्यात्मिक और दैवीय अनुभूतियों के साथ की जाने वाली यह नर्मदा परिक्रमा आत्मनिरीक्षण की यात्रा भी है।

विशिष्ट आलेख

4 शिव, शंकर और शिवलिंग में भेद

संकलन - डॉ. स्मिता अपराजिता (जीजी माई)

एक वैचारिक तथ्य है कि नर्मदा के हर कंकर को शंकर कहते हैं शिव नहीं। तो क्या शिव और शंकर में भेद है और यदि है तो शिव कौन है? शास्त्रों में वर्णित व्याख्या कहती है कि-

शिव समस्त ब्रम्हांड हैं शिव वह चेतना है जहाँ से सब कुछ आरम्भ होता है जहाँ सबका पोषण होता है और जिसमें सब कुछ विलीन हो जाता है क्योंकि पूरी सृष्टि ही शिव में विद्यमान है कुछ भी शिव से बाहर नहीं है यहाँ तक मन और शरीर तक शिवतत्व से ही बना हुआ है इसलिए शिव को विश्वरूप भी कहते हैं। शिव शाश्वत है, शिव समाधि है क्योंकि शिव चेतना की जागृत, निद्रा और स्वप्न अवस्था से परे हैं।" शिव पुराण "के अनुसार देव,दनुज,ऋषि, महर्षि,मुनींद्र,सिद्ध,गन्दर्भ ही नहीं अपितु ब्रह्मा विष्णु भी शिव की उपासना करते हैं शिव पंच देवों में प्रधान अनादि सिद्ध परमेश्वर हैं।

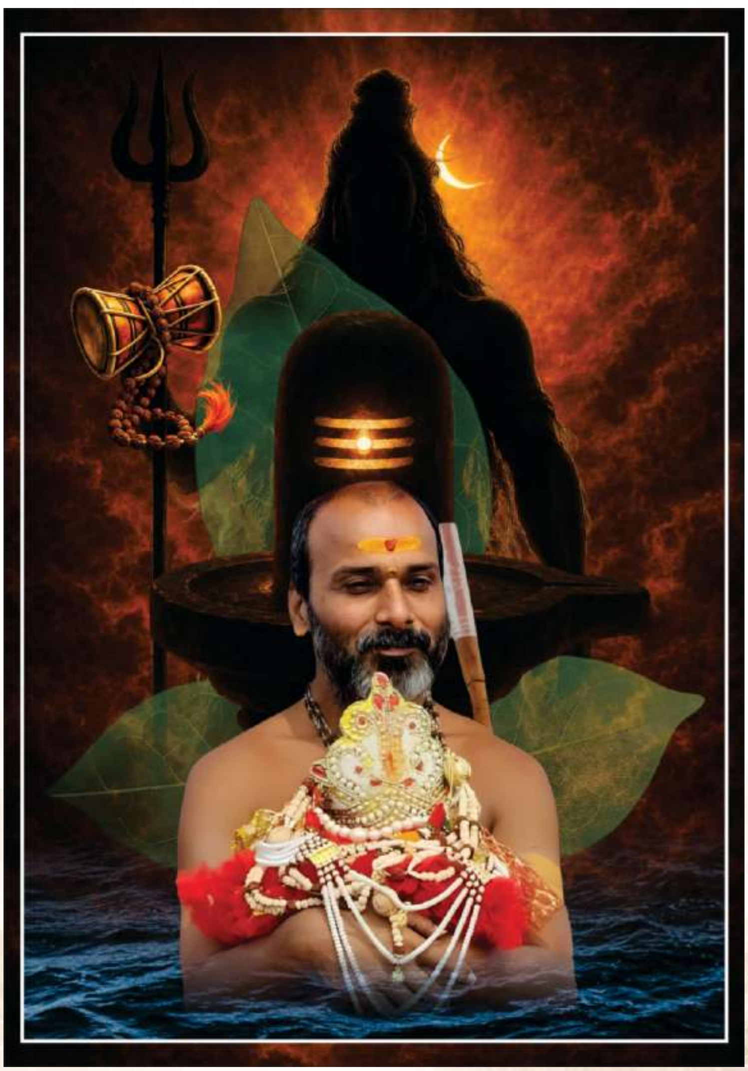

शिव शून्य भी है इस सृष्टि में सब कुछ शून्यता से आता है और वापस शून्य में ही चला जाता है ये आधुनिक विज्ञान की व्याख्या है ठीक इसी तरह सब कुछ शिव से आता है फिर शिव में ही चला जाता है। शिव ही समस्त जगत की सीमा है शिव अनादि अनन्त है।शिव सभी विपरीत मूल्यों में उपस्थित हैं इसलिए उन्हें रुद्र कहते हैं।जो कि ज्योति बिंदु स्वरूप है और जो शंकर में प्रवेश करके समस्त कल्याणकारी कार्य करवाते है अर्थात शिव कल्याण हैं शिव तत्व है,शिव सत्य है तथा ,शिव आनंद है। शिव स्वयंभू हैं और शाश्वत सर्वोच्च सत्ता है।

शिव का अर्थ है 'शुभ'। शंकर का अर्थ होता है, कल्याण करने वाले। निश्चित रूप से उसे प्रसन्न करने के लिए मनुष्य को उनके अनुरूप ही बनना पड़ेगा। 'शिवो भूत्वा शिवं यजेत्' अर्थात् शिव बनकर ही शिव की पूजा करें। हमारे धर्म ग्रंथों में वर्णित शिव के स्वरूप की प्रलयंकारी रूद्र के रूप में स्तुति की गयी है। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः- यजुर्वेद (१६.१) शिव दुष्टों को रुलाने वाले रुद्र हैं तथा सृष्टि का संतुलन बनाने वाले संहारक शंकर है।

शिव पुराण में शिव महिमा का गान इस प्रकार किया गया है-

वंदे देव मुमापतिं सुरगुरुं वंदे जगत्
कारणं। वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं
वंदे पशूनाम्पतिम्॥ वंदे सूर्य
शशांक वह्निनयनं वंदे मुकुंदप्रियं।
वंदे भक्त जनाश्रयं च वरदं वंदे
शिवं शंकरम्॥

अगला विचार है कि शिवलिंग क्या है?

शिवलिंग अनन्त शिव की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार जब ब्रह्मा और विष्णु शिवस्वरूप ज्योति का आदि और अंत नहीं खोज पाए तो प्रतीकात्मक रूप में

शिवलिंग अस्तित्व में आया शिवलिंग भगवान शिव की निराकार सर्वव्यापी वास्तविकता का प्रतीक है शिवलिंग शिव की रचनात्मक और विनाशकारी दोनों ही शक्तियों का प्रतीक है ये सृजन ज्योत है अर्थात शिवलिंग परमपुरुष शिव का प्रकृति के साथ समन्वित चिन्ह है। शिवपुराण में शिवलिंग की उत्पत्ति का वर्णन अग्नि स्तम्भ के रूप में किया गया गया है जो अनादि व अनन्त है। लिंगपुराण के अनुसार शिवलिंग निराकार ब्रह्मांड वाहक है। ऊपरीअंडाकार हिस्सा ब्रह्मांड का प्रतीक है और निचला हिस्सा पीठम है जो ब्रह्मांड को पोषण व सहारा देने वाली सर्वोच्च शक्ति है। वेदानुसार शिवलिंग ज्योतिलिंग यानि व्यापक ब्रह्मात्मलिंग है जिसका अर्थ होता है व्यापक प्रकाश। या कहें शिवलिंग पूर्ण ऊर्जास्त्रोत है विज्ञान और धर्म की समन्वित व्याख्या के आधार पर न्यूक्लियर रिएक्टर के अलावा सभी ज्योतिर्लिंगों के स्थान पर सबसे ज्यादा रेडियेशन पाया जाता है। अर्थात शिवलिंग न्यूक्लियर रिएक्टर्स हैं इसीलिए उनका जलाभिषेक होता है ताकि वे शांत रहें हमारे भाभा एटामिक न्यूक्लियर रिएक्टर्स की संरचना ठीक शिवलिंग जैसी ही है।

महादेव के सभी प्रिय प्रदार्थ जैसे विल्बपत्र,गुड़हल,धतूरा इत्यादि सभी न्यूक्लियर एनर्जी को सोखने वाले पदार्थ हैं तभी वे शिवलिंग पर अर्पित किए जाते हैं। इसी तरह शिवलिंग पर चढ़ाया जल रिएक्टिव हो जाता है इसलिए उसे लांघा नहीं जाता। और यही जल जब किसी नदी में मिल जाता है तब वह औषधि का रूप ले लेता है। निश्चित ही शिवलिंग ब्रह्मांडीय ऊर्जा के आधार हैं।

शिव और शिवलिंग के रहस्य को समझने के बाद एक प्रश्न और भी है कि शंकर कौन हैं ?

पुराणों के आधार पर भगवान शंकर शिव का साकार रूप है शिव ही शंकर में प्रवेश करके ऐसे सभी महानतम कार्य करवाते हैं जो कोई नहीं कर सकता अर्थात शंकर एक निर्माणकर्ता, नियंत्रणकर्ता, संचालनकर्ता व रचनाकार हैं। जो आदि सिद्ध योगी महातपस्वी रूप में आनन्ददाता,जीवनदाता, एक आचार्य एक अवधूत के रूप में हर युग में में विद्यमान शाश्वत सत्य मूर्ति है। शिव रचयिता है और शंकर उनकी रचना। शिव ब्रह्मलोक में परमधाम के निवासी है और शंकर सूक्ष्म लोक में रहने वाले हैं। शंकर तपस्वी रूप में साकारी देव हैं जो सृष्टि के विलय के कार्य का भार वहन करते हैं। शंकर ही महेश हैं जो देवी पार्वती के पति हैं। शिव औऱ शंकर में उतना ही अंतर है जितना एक मूर्ति और उसके मूर्तिकार में चूंकि शंकर शिव की रचना है । इसलिए उन्हें अपने प्रतिनिधित्व में शिव का ध्यान करते हुए देखा जाता है अपने तपस्वी स्वभाव के कारण त्रिदेवों में शंकर ही शिव के अति निकट है।

शिव, शंकर और शिवलिंग तीनों का बहुत गहरा सम्बन्ध आदिशक्ति पराशक्ति माँ नर्मदा से है। इस पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ एक माँ नर्मदा का द्वार ही है जहां शिव, शंकर व शिवलिंग तीनों एक साथ विधमान रहते हैं। माँ नर्मदा ही वह परम् शक्ति है जिसका प्राकट्य शिव की देह से हुआ और आदि अनादि काल से नर्मदा परमब्रह्म के संयुक्त विग्रह शिवलिंग (नर्मदेश्वर)का अनवरतनिर्माण कर रही है। माँ नर्मदा के तट औऱ पथ पर चलने वालों को शंकर सहज रूप में मिलते हैं। सत्य ,तत्व,ब्रह्म और सद्गुरु के रूप। अतः शिव से प्रकट हुई नर्मदा शिवलिंग की निर्माणकर्ता है और उसका तट औऱ पथ शंकर का आसन है।इसलिए नर्मदा ही शाश्वत सत्य है जिसके दर्शन मात्र से शिव शंकर और शिवलिंग का सानिध्य प्राप्त होता है।

इस सदी की सबसे बड़ी मुहिम - 3200 किमी. अखण्ड निराहार माँ नर्मदा सेवा परिक्रमा

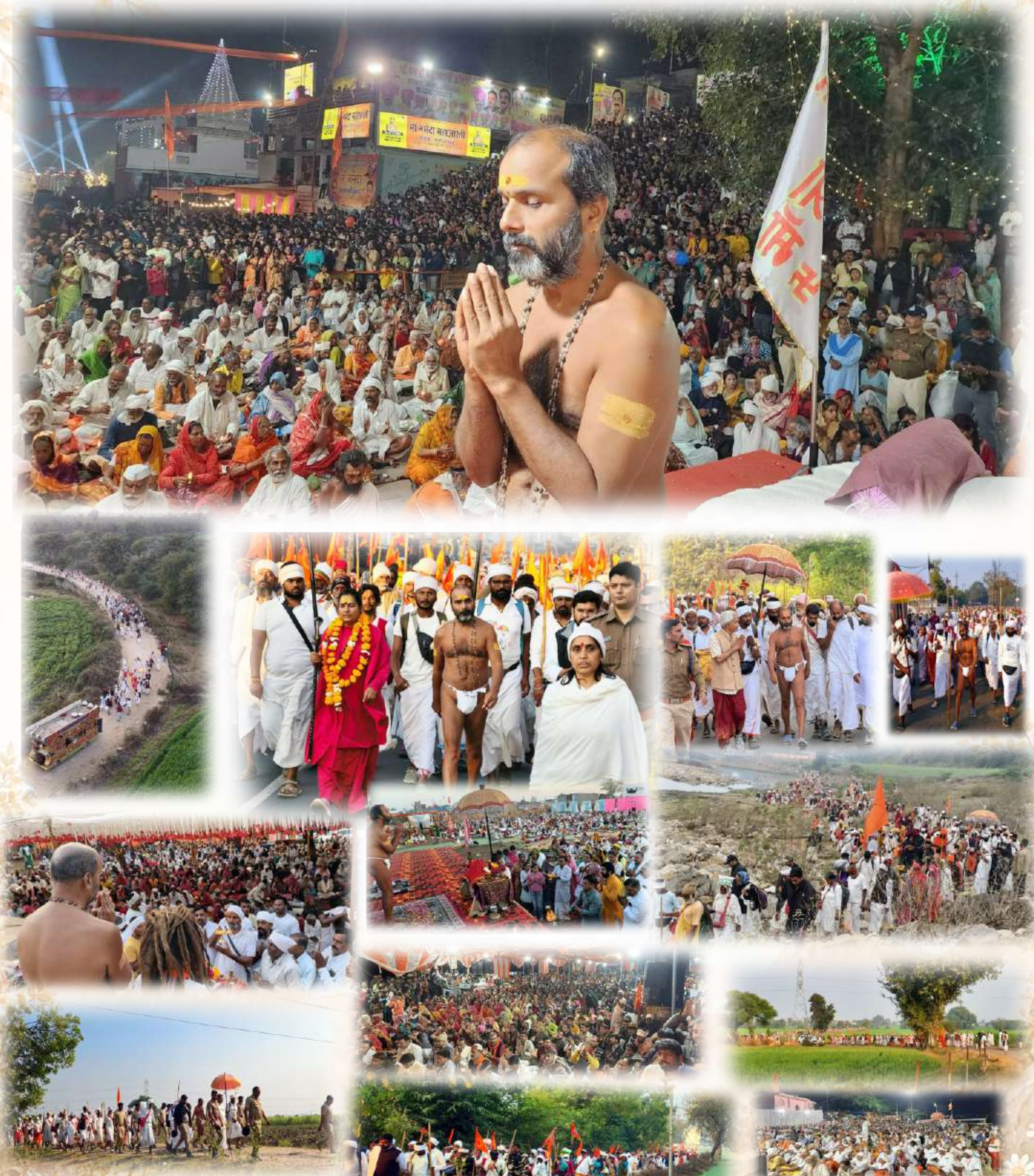

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

अविस्मरणीय दिव्य स्मृतियाँ

राष्ट्र के महान संत ,ऋषियों , कर्मयोगियों से दादागुरु भगवान का संवाद-सत्संग

पूज्य संत सियाराम बाबा

पूज्य संत सुखदेव मुनि जी महाराज

पूज्य संत बाबा श्री जी

पूज्य संत श्री श्री रविशंकर जी महाराज

आचार्य विद्यासागर जी महाराज

पूज्य संत बाबा रामदेव जी और
आचार्य बालकृष्ण शास्त्री जी

पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी

पूज्य संत दगडू महाराज की ताई

महामण्डलेश्वर साध्वी कंकेश्वरी दीदी जी

पूज्य रूपल माँ , गिरनार और
गरूणेश्वर वाली ताई

पूज्य देव प्रभाकर शास्त्री (दद्दा जी)

पूज्य पतई वाले महाराज

पूज्य रावतपुरा सरकार जी महाराज

पूज्य मलूक पीठ के जगतगुरू
राजेन्द्रदास जी महाराज

आर.एस.एस. सरसंघ चालक
राष्ट्र शिल्प मोहन भागवत जी

पूज्य संत स्वामी त्याग वल्लभ दास जी महाराज

पूज्य संत अवदेशानंद जी महाराज
सूरज कुण्ड

पूज्य महामंडलेश्वर साध्वी सत्यप्रिया गिरी एवं
पूज्य संत जगतगुरु सतुआ बाबाजी

her health
हार्मनी इंस्टिट्यूट
ऑफ एक्सीलेंस इन
रिप्रोडक्टिव हेल्थ
सफलता गर्भधारण तक सीमित नहीं
फर्टिलिटी, प्रेगनेंसी से डिलीवरी तक
हर हेल्थ का साथ
FERTILITY TO FAMILY
एक ही छत के नीचे
सभी सुविधाओं के साथ
भोपाल का अग्रणी -
संपूर्ण स्त्री स्वास्थ्य सेंटर
रिप्रोडक्टिव मेडिसिन, IVF
PCOD, फाइब्रॉइड्स, एंडोमेट्रियोसिस
गर्भस्थ शिशु की सोनोग्राफी
डिलीवरी/प्रसव/NICU
डर्मेटोलॉजी, कॉस्मेटोलॉजी, प्लास्टिक सर्जरी
फंक्शनल एवं एस्थेटिक गायनेकोलॉजी
साइकोलॉजिकल काउंसलिंग
सर्वश्रेष्ठ CLASS A IVF लैब
जटिल स्त्री रोग सर्जरी हेतु
भोपाल का पहला
सर्जिकल रोबोटिक सिस्टम
रोबोटिक हिस्टरेक्टॉमी
ओवेरियन सिस्ट रिमूवल
सटीकता (Precision), 3D 4K विज़न
न्यूनतम रक्तस्राव, बेहतर परिणाम
डॉ. प्रिया भावे चित्तावार
MD, DNB, FRM
रिप्रोडक्टिव हेल्थ विशेषज्ञ
गायनेक एंडोस्कोपिक रोबोटिक सर्जन
अपॉइंटमेंट व परामर्श हेतु कॉल करें 78983 01766, 77250-51036
33, 34, 40, 41, होशंगाबाद रोड, चिनार फार्च्यून सिटी, भोपाल www.herhealth.co.in

अकाट्य अवधूत वाणी

1. वृक्ष ही प्रत्यक्ष है।
2. गुरु के निर्णय निर्माण करते हैं।
3. नदी नहीं, तो सदी नहीं। नदी को जानो।
4. काल की गणना नहीं, काल से मंत्रणा करो।
5. माँ के द्वार सृजन करो, विसर्जन नहीं। बंदगी करो, गंदगी नहीं।
6. न आस्तिक, न नास्तिक तुम केवल वास्तविक और सात्त्विक रहो।
7. कर्मों की ध्वनि शब्दों से ऊँची है इसलिए कर्म सोच-समझकर करें।
8. कोई भी कार्य या लक्ष्य आपके विश्वास और संकल्प से बड़ा नहीं हो सकता।
9. मन की एकाग्रता और कर्म की पवित्रता एक साधारण व्यक्ति को भी महान् बना देती है।
10. अस्तित्व की लड़ाई लड़ने वाला कभी हार नहीं सकता। जीवन में हारता वही है, जो लड़ा ही नहीं।
11. शरीर और संसार परिवर्तनशील हैं, सत्य नहीं। हम सत्य को नहीं बदल सकते, किंतु सत्य हमारे जीवन को बदल सकता है।
12. जिसका अंत:करण पवित्र है, जो निर्विकार है, जिसके चित्त में केवल सत्य है, उसे कोई तीर्थ या धाम जाने की आवश्यकता नहीं। वह खुद ही एक चलता-फिरता तीर्थ है।

अवधूत महायोगी दादागुरु भगवान

2000 से अधिक दिनों
(5 वर्ष 6 माह) से अनवरत चल रही सदी की
सबसे कठोर निराहार महाव्रत साधना

8989112999, 9907115789, 8989700012, 7987503104

NARMADA MISSION DADAGURU

पत्रिका कार्यालय : श्री दादाकुटी, माँ कर्मा धर्मशाला के बाजू में,
बी.टी.आई. रोड, नर्मदापुरम, म.प्र. मो 9893436666, 7987503104, 7898972366